

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

क्रम संख्या 2772

काल नं० 243 उपाय

खण्ड

भाषातत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण

जिसकी

मध्य देश के साइब डैरेक्टर बीरेश की आज्ञानुसार
हन्गोपालोपाध्याय बी०ए० मध्य देशीय असिस्टेंट इंस्पेक्टर ने बनाया
और

अब एक महाराज की आज्ञा से देवीप्रसाद हेडमास्टर माडलस्कूल
कमीनाबाद ने अत्रय देशीय माठशालाओं के विद्यार्थियों के लिये
यथोचित रूपान्तर किया

परिचयमान देश और अवधान प्रोमान्ड-पेक्टर जनरल बीरेश की आज्ञानुकूल
स्थान लखनऊ

मुशी नवलक्षिण के यन्त्रालय में रूपा

द्वितीय सं० १८८१ इसवी

—००—

Bh. Shā Tatwa Dīpikā.

OR

A HINDI GRAMMAR,

FOR

THE USE OF NATIVE STUDENTS OF THE SCHOOLS
IN THE PROVINCE OF OUDH

BY

Hari Gopālopādhyāya, B. A.

Assistant Inspector of Schools Central Provinces

Revised by

PANDIT DEVI PRASADA

Head Master Model School Ammābād

—००—

LUCKNOW.

PRINTED AT THE NAVALA KISORA—PRESS.

February 1881.

भूमिका

प्रकट होय कि हिन्दी भाषा के व्याकरण पर कई एक ग्रन्थ बने है, एक आदम साहब कृत व्याकरण, दूसरा भाषा चन्द्रोदय, तीसरा भाषा तत्त्ववार्त्तिनी, यद्यपि इन ग्रंथों में सामान्यतः विवेचन अच्छी प्रकार किया है तथापि कई एक स्थलों में अशुद्धता, न्यूनता, अप्रयोजनता देखकर, बहु विद्या निरुप, गुणशास्त्रक, दशानिधान, परोपकारक, मध्य देश के पोरजान पदार्थ शालिपत्रिका श्रृंगुनक लिन्गोनिङ्ग साहब एम० ए० इन्स्पेक्टर जनरल वीरेश ने निर्दोष, उत्तम, व्याकरण की रचना के निमित्त, सागर है स्कूल के संस्कृत प्रोफेसर पण्डित हर्गोपालोपाध्याय बी० ए० को यथा विधि अपने इस रचना के मङ्गल्य से प्रबुद्ध कर माधन भूत दो तीन पुस्तकें कृपा कीं; और पूर्वोक्त उपाध्याय जी ने उनकी गुणशास्त्रकता से आनन्दित होय बहु परिश्रम से फार्वस साहब कृत व्याकरण, दादो साहब कृत मरहटी व्याकरण, हावडे कृत, अर्नोल्ड कृत ग्रथ, भागेन कृत वाक्य पृथक्करण और ग्यारिङ्गटन साहब कृत व्याकरण आदि ग्रंथों के सविचारवलेकन रूप मथन में साराण भूत नवर्गत निकाल यथासति भाषा तत्त्ववार्त्तिक रच-ए कर गत तीन वर्ष के अवसर में कि उक्त श्रृंगुन, कालिनग्रीनिङ्ग साहब नाम० ए० अवध देशीयपाठशालाध्यक्ष वीरेश है नीराजन किया; और श्री महाराजा ने अति आनन्दित होय, अवध देश पश्चिमोत्तर देश और मध्यदेशादि में इसको प्रकाशित और प्रचार कराय ग्रथकार का पारि-मपिकादि प्रतिष्ठा से परिश्रम सफल कराया; परन्तु महाशय वीरेश को अवध देशीय यात्रा में विद्यार्थियों की परीक्षा और विद्वज्जनों के परिभाषण, समागम से इस ग्रन्थ के क्रिमी २ स्थल में काठिन्यतादि विदित हुई और व्याकरण के चतुर्थ भाग छन्दों बोधका भी अति अनुराग हुआ तो ग्रन्थ-कार से इसकी संक्षेप रचना का अभिप्राय प्रकट किया; जाकि उनको

कार्योन्तरासक्त होने में हम अक्सर में सावधान न था महाशय से प्रार्थना की कि आपही कृपा करें ॥

इस कारण महाशय की अनुमति से पण्डित देवीप्रसाद हेडमास्टर माण्डल स्कूल अमनाबाट की द्वारा यह ग्रन्थ अगम्य कठिन स्थलों से निर्वन्द और छन्दोबोध में अलङ्कृत होय विद्यार्थियों के शृङ्गार के लिये पुनः मुद्रित हुआ वहीं अत्र पश्चिमात्तर व अथर्ववेद की पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर वर्गों की आज्ञानुकूल छपा गया—निश्चय है कि विद्वज्जन आर्गाकार करें ॥

आज्ञा ॥

जो कि यह पुस्तक सर्व माध्याग है अर्थात् नर्मन तहसीली और देहाता सब पाठशालाओं में व्याकरण का बोधक है इसलिये महाशय वर्गों की आज्ञा है कि देहाता और तहसीली शाला के पाठक विद्यार्थियों का अधिकार देखकर सन्धि, समास आदि प्रकरणों को यथार्थ परि समाप्तिमें पढ़ावे और छन्दोबोध की देहाता में आवश्यकता नहीं ॥

सूचीपत्र II

पाठ	विषय	पृष्ठ पंक्ति	पाठ	विषय	पृष्ठ पंक्ति
	व्याकरणकालजग और	१ ७	१२	प्रश्नार्थक सर्व नाम	३३ १४
	उसके भाग		१३	सामान्य सर्व नाम	३४ ८
१	वर्णों की गणना	१ १३	१४	{ सर्व नामों के विषय में स्फुट विचार }	३७ १०
२	स्वरो के भेद	२ १३			
३	वर्णमाला	४ ६	१७	विशेषण विचार	३९ ३
४	संयुक्त प्रत्यय	७ ७	"	गुण विशेषण	३९ १०
५	स्थान विचार	६ ११	१६	{ उपमा वाचक और विशेषण का न्यून और अधिक भाव }	३८ ३
६	मान्ध्रि वि०, स्वरगमन्धि	७ ४			
७	व्यञ्जन मान्ध्रि	८ २	१७	संख्या विशेषण	३६ ८
१	{ शब्द विचार शब्दों के प्रकार }	१३ ०	"	क्रम वाचक	४१ ८
२	{ नाम विचार नाम के प्रकार }	१७ ८	"	आवृत्ति वाचक	४० ८
३	लिङ्ग विचार	१६ २	"	संख्यांश वाचक	४१ १
४	{ पुल्लिङ्ग नाम में स्त्री लिङ्ग नाम बनाने की गति }	१७ १०	१८	{ क्रियापद वि- चार, क्रियापद का लक्षण और उसके भेद }	४१ १३
५	वचन का वर्णन	१८ ०	१९	{ क्रियापद के लिङ्ग वचन और पुरुष }	४४ ०
६	{ विभक्ति और कारक विचार }	२० ८			
७	पुल्लिङ्ग नाम	२० १०	२०	अर्थ विचार	" ८
८	स्त्रीलिङ्ग नाम	२६ १०	२१	काल विचार	४७ ८
९	सर्व नाम विचार	२८ १३	२२	प्रयोग विचार	४६ १०
१०	दर्शक सर्व नाम	३१ ३			
११	सम्बन्धी सर्व नाम	३२ १३			

पाठ	विषय	पृष्ठ	पंक्ति	पाठ	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
२३	क्रियापदबनानेकीरिति	४८	८	॥	धातु साधित अय्यय	८८	१
२४	{ केवल धातु से बने हुये अर्थ और काल }	४९	१४	३१	{ धात्वन्त्यशब्द साधित-म- धित नाम }	८८	७
॥	मरना धातु	५४	४	॥	भाव वाचक	८८	१
॥	गिरना धातु	५७	७	॥	न्यून वाचक	११	१३
॥	खाना धातु	५८	२	३२	उपसर्ग विचार	८९	६
॥	सोना धातु	६०	६	३३	म.भा.मिकशब्द विचार	९०	१०
॥	अपवाद छः धातु	६१	११	३	इन्द्र	९०	४
२५	कर्म वाच्य क्रियापद	६२	१४	॥	नतपु.प	९१	७
२६	{ क्रिया पद के अप्रमिद्ध काल }	६५	१२	॥	कर्म धारय	९२	४
२७	{ प्रयोजक, क्रिया- पद विचार }	६६	८	॥	द्विगु	११	११
॥	नाम धातु	६८	४	॥	बहुब्रीहि	११	१०
२८	नयुक्तक्रियापदविचार	६९	२	१	वाक्य विचार	११	६
॥	व्यय विचार	७०	६	२	{ कर्त्ता और क्रिया पद का मिलाप }	९६	१०
॥	क्रिया विशेषण अव्यय	७१	१	३	{ विशेष्य विशेषण का मिलाप }	९८	७
॥	उभयान्वयी	७३	१	४	कारक विचार	९८	७
॥	पद वर्गी	७३	१३	॥	प्रथमा	११	२
॥	{ केव प्रयोगी वि- स्मयादि बोधक }	७४	१३	॥	द्वितीया	९१	५
३०	धातु साधित शब्द	११	३	॥	तृतीया	९२	४
॥	धातु साधित न.म	९५	१३	॥	चतुर्थी	९४	१४
३१	धातु साधित विशेषण	९६	१२	॥	पञ्चमी	९५	२

पाठ	विषय	पृष्ठ	पंक्ति	पाठ	विषय	पृष्ठ	पंक्ति
"	सप्रमी	"	१८	६	अव्यय विचार	१०८	२
"	सम्बोधन	६६	७	१०	द्विरुक्ति विचार	१०६	४
"	पशु	६६	१४	"	{ व्याकरण से वा-	११०	६
५	सर्व नाम	६८	१०	"	{ क्य का पठच्छेद }		
६	क्रियापद का अधिकार	१०३	२	१	छन्दा विचार	११८	६
०	{ धातु साहित /	१०५	१०	२	मात्रा वृत्त के भेद	११३, ११	
	{ भाववाचक नाम }			३	वर्ण वृत्त	११६	२
८	धातु साहित विशेषण	१०६	८		कठिनशब्दों का कोष	१-८	१

इति

श्री सच्चिदानन्द मूर्तये नमः ॥

भाषा तत्त्वदीपिका

अर्थात्

हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

व्याकरण का लक्षण और उसके भाग ॥

प्रश्न व्याकरण क्या है और उससे क्या लाभ होता है ?

उत्तर व्याकरण एक शास्त्र है कि जिससे शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होता है ॥

प्र० इस शास्त्र के मुख्य भाग कौन २ हैं ?

उ० वर्ण विचार, शब्द विचार, वाक्य रचना, और
कन्दोरचना ये चार भाग हैं ॥

१ पाठ

वर्ण विचार और वर्णों की गणना ॥

प्र० वर्ण विचार में किसका वर्णन किया जाता है ?

उ० वर्ण विचार में वर्णों का लक्षण, संयोग, उच्चारण स्थान,
और सन्धि इनका वर्णन किया जाता है ॥

प्र० वर्णों के कितने भेद हैं ?

उ० स्वर और व्यंजन ये दो भेद हैं ॥

प्र० स्वर किन वर्णों को कहते हैं ?

उ० स्वर उन वर्णों को कहते हैं कि जो केवल आपही बोलें जाय,

और उनको संस्कृत में अच् कहते हैं; जैसा अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ, इन तेरह अक्षरों को स्वर कहते हैं ॥

प्र० व्यञ्जन किनको कहते हैं?

उ० व्यञ्जन उनको कहते हैं कि जिनका उच्चारण स्वरों की सहायता बिना न हो सके, और उनको संस्कृत में हल् कहते हैं ॥

व्यञ्जन	संज्ञा.	व्यञ्जन	संज्ञा.
१ क ख ग घ ङ	कवर्ग.	२ च छ ज झ ञ	चवर्ग.
३ ट ठ ड ढ ण	टवर्ग.	४ त थ द ध न	तवर्ग.
५ प फ ब भ म	पवर्ग.	६ य र ल व	अन्तस्थवर्ग.
७ श ष स ह	उष्मवर्ग.		

इन ३३ अक्षरों को व्यञ्जन कहते हैं और इनका स्पष्ट उच्चारण स्वरके योग से, होता है; जैसा, क+अ=का, अ+क=अक् इत्यादि ॥

इन व्यञ्जनों में (अ) मिलाकर शिचक लोग व्यञ्जन बतलाते हैं, जैसा क, ख, ग, घ, ङ, इत्यादि ॥ इस तरह से व्यञ्जन बताने में कुछ हानि नहीं, पर व्यञ्जनों के मूल रूप में अ केवल स्पष्ट उच्चारण के लिये जोड़ा जाता है, यह ध्यान में रखना चाहिये + ॥

२ पाठ

स्वरों के भेद ॥

प्र० स्वरों में कौन २ ह्रस्व, कौन २ दीर्घ, वा संयुक्त हैं ?

उ० अ इ उ ऋ लृ ये पांच ह्रस्व हैं,

आ ई ऊ ॠ ॡ ये चार दीर्घ हैं,

ए ऐ ओ औ ये चार संयुक्त हैं और दीर्घ भी कहाते हैं, इनको संयुक्त कहने का कारण मन्थि प्रकरण में स्पष्ट किया जायगा ॥

* यह अक्षर देवनागरी वर्णमाला का नहीं है; संस्कृत शब्द में भी यह अक्षर कभी नहीं आता, फिर हिन्दी में कहां से आवेगा ? इसलिये लृ वर्ण को यहाँ नहीं लिखा ॥

+ किसी अक्षर के आगे कार जोड़ने से वह अक्षर सभझा जाता है जैसा अकार कहने से अ सभझते हैं ॥

इन में से अ इ उ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ ये मूल स्वर अथवा प्रधान स्वर कहाते हैं ॥

प्र० स्वरों का और कोई भेद है ?

उ० स्वरों का तीसरा भेद प्रुत है; ह्रस्व दीर्घ और लुप्त ये भेद मात्रा से होते हैं, और मात्रा का अर्थ परिमाण अर्थात् उच्चारण काल का मापना जाना जाता है ॥

प्र० मात्रा किसको कहते हैं ?

उ० ह्रस्व स्वर के उच्चारण में जो काल लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं, और दीर्घ स्वर के उच्चारण में ह्रस्व से दूना काल लगता है और लुप्त के उच्चारण में तिन्ना काल लगता है, इसी से ह्रस्व को एक-मात्रिक दीर्घ को द्विमात्रिक और लुप्त को त्रिमात्रिक कहते हैं ॥

प्र० लुप्त का उच्चारण किस जगह होता है ?

उ० जहाँ किसी को दूर से पुकारते हैं वहाँ लुप्त बोला जाता है; जैसा अय कृष्णा ३ कृष्णारे ३, यहाँ कृष्ण शब्द के अन्त्य स्वर को और अरे के अन्त्य एकार को लुप्त बोलते हैं और उसको पहचान के लिये ३ का अंक लिख देते हैं ॥

प्र० स्वर निगुनासिक वा सानुनासिक है या नहीं ?

उ० सब स्वर निगुनासिक और सानुनासिक के भेद से दो प्रकारके होते हैं ॥ जिनका उच्चारण केवल मुख से होवे वे निगुनासिक, जैसा अ आ, और जो नासिका सहित मुख से बोलने जाय, वे सानुनासिक जैसा अं आं, इ० ॥ सानुनासिक का चिन्ह ~ यह है ॥

प्र० अनुस्वार और विसर्ग कौनको कहते हैं ?

उ० नासिका से जिसका उच्चारण होता है और जिसको बताने के लिये स्वर के सिर पर (') ऐसा चिन्ह करते हैं उसे अनुस्वार जाना, अनुस्वार का उच्चारण स्वर के उच्चारण के पश्चात् होता है, स्वर के आगे जो (:) ऐसा दो बिंदुओं का चिन्ह लिखा जाता है, उसे विसर्ग कहते हैं, और कंठ से वह बोला जाता है, इससे स्पष्ट है कि इन दोनों चिन्होंका

उच्चारण स्वर के साथ होनेसे दो प्रकार के रूप हुए जैसा अ अं आ, इ इं इः ॥

प्र० हिन्दी भाषा में कौन स्वर आते हैं ?

उ० ऋ ॠ ऌ इन तीनों को छोड़ शेष दश स्वर हिन्दी भाषा में आते हैं और ये तीन केवल संस्कृत में आते हैं

३ पाठ

वर्ण माला ॥

प्र० व्यञ्जन के साथ स्वर मिलने से कैसा रूप बनता है ?

उ० व्यञ्जनके साथ स्वर मिलने से वर्णमाला बनती है, पर इस मेल में अ को छोड़ शेष स्वरों के रूप बदल जाते हैं ॥ स्वरके (१) इस रूपान्तर को माचा कहते हैं, ये माचा रूप व्यञ्जन को जोड़ने से वर्णमाला बनजाती है ॥

जैसा व्यञ्जन को स्वर की माचा मिलने से सिद्ध अक्षर हुआ है ॥

क्	अ	-	क
क्	आ	।	का
क्	इ	ि	कि
क्	ई	ी	की
क्	उ	ु	कु
क्	ऊ	ू	कू
क्	ऋ	ॠ	कृ
क्	ॠ	ॡ	कॠ
क्	ऌ	ॢ	कॢ
क्	ए	-	क
क्	ऐ	-	कै
क्	ओ	ी	को
क्	औ	ी	कौ
क्	अं	ं	कं
क्	अः	ः	कः

प्र० व्यञ्जनों में से कौन २ व्यञ्जन हिन्दी में नहीं आते हैं ?

उ० ङ् ञ् ण् ष् ये चार नहीं आते केवल संस्कृत में आते हैं, परंतु हिन्दी भाषा में संस्कृत शब्द बहुत मिले हैं इस लिये इनका जानना अवश्य है ॥

४ पाठ

संयुक्त अक्षर

प्र० संयोग किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा तीन आदि व्यंजनों के मिलने को संयोग कहते हैं जैसा, शब्द, माहात्म्य, यहां व् द का संयोग और त्म्य का संयोग जानो, ऐसे अक्षरों को संयुक्ताक्षर कहते हैं ॥

प्र० संयुक्ताक्षर कैसे लिखा जाता है ?

+

उ० संयुक्ताक्षर सामान्यतः ऐसा लिखा जाता है कि पहिले व्यंजन में का ना न होवे तो उसका आधा रूप लिखकर उसके नीचे वा कभी ० आगे जैसा द् + य = द्य, ड् + य = ड्य और का ना होवे तो गिराकर उस वर्णके आगे दूसरा स्वर युक्त अक्षर पूरा लिखा जाता है ड् + ग = ड्ग, ग् + म = ग्म, इत्यादि ॥ दूसरे वर्ण में स्वर न होवे तो उसका भी पूर्वाक्षर रीति से आधारूप लिखकर तीसरा स्वरयुक्त वर्ण लिखते हैं जैसा त् + म् + य = त्म्य, ल् + प् + य = ल्प्य इत्यादि; ङ् ङ् ट् ट् ड् ड् ये अक्षर संयोग की आदि में संपूर्ण लिखे जाते हैं ॥ जैसा टम, ड्ग, ड्ग ड० ॥ और क्ष और ज्ञ का मूल व्यंजनों में गिनते हैं, पर ये अक्षर संयुक्त हैं, क्योंकि क् और ण मिल

+ वर्णमाना के अक्षर दो स्वरूप से लिखे जाते हैं (१) खड़ी पाई कहते यथा क, ख, ग, घ, ङ, झ, ञ, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, ल, ण, ष, स, और (२) दिना खड़ी पाई के जैसा ङ, ङ्, ट, ट्, ड, ड्, र, ङ्, खड़ी पाई के अक्षर जब किसी अक्षर में मिलते हैं तो वे अपने आधे स्वरूप से मिलते हैं परंतु अन्त के अक्षर का स्वरूप पूरा ही बना रहता है जैसे खट शब्द में ट् के रूप दिखाई देते हैं, और बिना खड़ी पाई के र ० होता मल अक्षर जब किसी अक्षर में मिलते हैं तो वे अपने पूरे ही रूप से लिखे जाते हैं, जैसे भुट्टा परंतु र वदेव आधे रूप से लिखा जाता है जैसे कर्म आदि, निस्स्वर अक्षर अगले वर्ण में मिलता है ॥

कर' क्ष; ज्+ज=क्ष बने हैं, इसलिये इनको संयुक्ताक्ष कहना चाहिये ॥

प्र० र् का संयोग कैसे होता है ?

उ० जिस व्यंजन में का ना नहीं है उसके नीचे (५) ऐसा चिन्ह लगाते हैं जैसा ड्र क इत्यादि; और कानावाले व्यंजन को (५) ऐसा चिन्ह जोड़ते हैं जैसा प्+र=प्र, और कभी दूसरे अक्षर के आदि में मिले तो उसके सिरपर ऐसा (५) चिन्ह करते हैं और उसे रेफ बोलते हैं जैसा गर्ब बर्ष सर्व इत्यादि ॥

प्र० (श) को व्यंजन में जोड़ना होवे तो कैसा लिखते हैं ?

उ० (प्र, श, इन दोनों रूपों से मिलाते हैं जैसा प्रश्न प्रश्न ॥

५ पाठ

स्थान बिचार ॥

प्र० वर्णों का उच्चारण स्थान किसे कहते हैं ?

उ० मुखके जिस भाग से जिन वर्णों का उच्चारण होवेगा, उसी भाग को उ-न वर्णोंका स्थान कहते हैं ॥

प्र० किन २ अक्षरों के कौन २ स्थान हैं ?

उ० अ आ क ख ग घ ङ ह और विसर्ग इनका कंठ स्थान है और कंठ्य कहलाते हैं ॥

इ ई च छ ज झ ञ य श ये तालु से बोले जाते हैं और तालव्य कहाते हैं ॥

कृ ऋ एवर्ग र ष ये मूर्द्धा अर्थात् तालु से कुछ ऊपर जोम लगाने से बोले जाते हैं और मूर्द्धव्य कहाते हैं ॥

लृ त्वर्ग ल स इन का दन्त स्थान है और दंत्य कहलाते हैं ॥

उ ऊ णवर्ग इनका ओष्ठ स्थान है और ओष्ठ्य कहाते हैं ॥

य ये कंठ और तालुसे बोले जाते हैं और उनको कंठ तालव्य कहते हैं ॥

ओ ओ कंठ और ओष्ठ से बोले जाते हैं और कंठोष्ठ्य कहाते हैं

षदांत और ओष्ठ से बोला जाता है और दन्तीष्ठ्य कहाता है ॥

इ अ ण न म ये स्वर्गोक्त स्थान और नासिका से बोल जाते हैं और ऋनु नासिक कहाते हैं ॥

ई पाठ

सन्धि विचार

स्वर सन्धि ॥

यह सन्धि प्रकरण संस्कृत भाषा के व्याकरण का भाग है; शुद्ध हिन्दी में सन्धि नहीं होती है; पर हिन्दी में संस्कृत शब्द बहुत हैं और तुलसीदास कृत रामायणादि ग्रंथों में सान्ध्यां बहुतसी आती हैं, इसलिये मुख्य २ सन्धिम जानना अवश्य है ॥

प्र० सन्धि किसे कहते हैं ?

उ० दो वर्ण परस्पर निकट आकर एकरूप से वा रूपान्तर से मिले तो उस मेल को सन्धि कहते हैं ॥

प्र० सन्धि कितने प्रकार की हैं ?

उ० स्वरसन्धि और व्यञ्जन सन्धि ये दो प्रकार हैं ॥

प्र० स्वरसन्धि और व्यञ्जन सन्धि किनको कहते हैं ?

उ० दो स्वरों की सन्धिस्वरसन्धि कहाती है; व्यंजन और स्वर की सन्धि, वा दो व्यंजनों की व्यञ्जन सन्धि कहाती है ॥

प्र० स्वरसन्धि किस प्रकार से होता है ?

उ० अ इ उ ऋ ह्रस्व अथवा दीर्घ इनके परे सजातीय ह्रस्व वा दीर्घ स्वर यथा क्रमसे आवें तो दोनों मिलकर दीर्घ आदेश होता है; ॥ जैसा

अ वा आ + अ वा आ=आ	इ वा ई + इ वा ई=ई
उ वा ऊ + उ वा ऊ=ऊ	ऋ वा ॠ + ऋ वा ॠ=ॠ

* पठक को ध्यान है कि इस प्रकरण को पुस्तक के अन्त में विचार पूर्वक शिखा करे ॥

उदाहरण

मूलस्थिति	सिद्धरूप	मूलस्थिति	सिद्धरूप
ज्ञान + अभव = ज्ञानाभाव		धर्म + आज्ञा = धर्माज्ञा	
गङ्गा + गर्पण = गङ्गार्पण		सीता + आश्रय = सीताश्रय	
हरि + इच्छा = हरिच्छा		करी + इन्द्र = करीन्द्र	
मानु + उदय = भानूदय		भू + उर्ध्व = भूध्व	
पितृ + कृणु = पितृण इत्यादि			

प्र० विजातीय स्वरों की संधि कैसी होती है ?

उ० अ अथवा आ इनके आगे इ अथवा ई आवे तो दोनों मिलकर ए आदेश होता है; इसी तरह उ वा ऊ आवे तो ओ; ऋ वा ॠ आवे तो अर्; लृ होवे तो अल्; ए वा ऐ आवे तो ऐ; औ वा औ होवे तो औ; आदेश होते हैं ॥ जैसा

अ वा आ + इ वा ई = ए	अ वा आ + उ वा ऊ = ओ
अ वा आ + ऋ वा ॠ = अर्	अ वा आ + लृ = अल्
अ वा आ + ए वा ऐ = ऐ	अ वा आ + औ वा औ = औ

उदाहरण

देव + इन्द्र = देवेन्द्र	रमा + ईश = रमेश
मूर्ध + उदय = मूर्धोदय	महा + उर्मिला = महोर्मिला
महा + ऋषि = महर्षि	तव + लृकार = तवलृकार
एक + एक = एकैक	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य
चित्त + औदार्य = चित्तौदार्य	गंगा + औघ = गंगौघ इत्यादि

प्र० स्वरों में से अ आ को छोड़ कर बाकी स्वरों के परस्पर आगे पीछे होने से कैसी संधि होती है ?

उ० इ वा ई, उ वा ऊ, ऋ वा ॠ, लृ, इनके परे विजातीय स्वर होवे तो ए, ओ, ऐ, औ, अल्, अर् आदेश पूर्व इकारादिकों के स्थान में क्रम से होते हैं ॥

$\begin{cases} \text{अ वा आ} = \text{य वा या} \\ \text{उ वा ऊ} = \text{यु वा यू} \\ \text{इ वा ई} = \text{यृ वा यू} \\ \text{ए वा ऐ} = \text{ये वा यै} \\ \text{ओ वा औ} = \text{यो वा यौ} \end{cases}$	$\begin{cases} \text{अ वा आ} = \text{व ० वा} \\ \text{इ ० ई} = \text{वि ० वी} \\ \text{उ ० ऊ} = \text{वृ ० वी} \\ \text{ए ० ऐ} = \text{वे ० वै} \\ \text{ओ ० औ} = \text{वो ० वौ} \end{cases}$
$\begin{cases} \text{अ वा आ} = \text{र वा रा} \\ \text{इ ० ई} = \text{रि ० री} \\ \text{उ ० ऊ} = \text{रु ० रू} \\ \text{ए ० ऐ} = \text{रे ० रै} \\ \text{ओ ० औ} = \text{रो ० रौ} \end{cases}$	$\begin{cases} \text{अ ० आ} = \text{ल ० ला} \\ \text{इ ० ई} = \text{लि ० ली} \\ \text{उ ० ऊ} = \text{लु ० लू} \\ \text{ए ० ऐ} = \text{ले ० लै} \\ \text{ओ ० औ} = \text{लो ० लौ} \end{cases}$

उदाहरण

प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर	सु + आगत = स्वागत
देवी + आश्रय = देव्याश्रय	मनु + अन्तर = मन्वन्तर
पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा	लृ + आकृति = लाकृति

ए, ऐ, ओ, औ, से परे कोई स्वर आवे तो उनके स्थान में क्रम से अय्, आय्, अव्, आव्, आदेश होते हैं, इन आदेशों का पहिला स्वर पीछे के व्यञ्जन के साथ मिलता है; जैसा

ए + अ, आ, इ० = अय, अया इ० ॥ ओ + अ, आ, इ० = अव, अवा इ० ॥
ऐ + अ, आ, इ० = आय, आया इ० ॥ औ + अ, आ, इ० = आव, अवा इ० ॥

उदाहरण

शे + अन = शयन,	ने + अक = नायक
गो + उत्साह = गवुत्साह,	पौ + अक = पावक

८ पाठ

व्यञ्जन सन्धि ॥

प्र० व्यञ्जनों की सन्धि के नियम और उदाहरण अलग २ कहिये ?

उ० सुनो ॥ १ ॥ प्रथम नियम (क, च, ट, प्) इनके परे कोई स्वर अथवा वर्ण का तीसरा वा चौथा वर्ण वा य्, र्, ल्, व्, ह् इनमें से कोई आवे तो क्रम से अपने २ वर्ण के तीसरे ग्, ज्, ड्, ब् वर्ण में बदल जाते हैं; जैसा वाक् + ईश = वागीश, टिक् + भाग = दिग्भाग, ऋप् + जा = अर्ज, पट् + रिपु = पट्टिपु, अच् + आदि = अजादि, अच् + वत् = अज्वत् इ० ॥

॥ २ ॥ त्, द्, के आगे च्, छ्, आवे तो त् और द् के स्थान में च् आदेश; ज्, झ्, होवे तो ज्; ट्, ठ्, आवे तो ट्; ड्, ढ्, हो तो ड् आदेश होते हैं; जैसा स्रुत् + चन्द्र मण्डल = स्रुतचन्द्र मण्डल, महत् + चक्र = महच्चक्र, महद् + छव = महच्छव, तत् + टीका = तट्टीका, उद् + डान = उड्डान, सत् + जन = सज्जन इ० ॥

॥ ३ ॥ न् के परे ज् वा झ् आवे तो ज्; और ट् वा ठ् आवे तो ण आदेश होते हैं; जैसा महान् + जग्र = महाजग्र, महान् + उमरु = महाण्डमरु इ० ॥

॥ ४ ॥ न् के पीछे च् वा ज् होवे तो न् को ज् आदेश होता है; जैसा याच् + ना = याज्ना, यज् + न = यज्ञ इ० ॥

॥ ५ ॥ त्, थ्, के पूर्व में ष होवे तो ट्, ठ्; आदेश क्रम से होते हैं जैसा आकृष् + त् = आकृष्ट, ष् + थ = षष्ठ इ० ॥

॥ ६ ॥ त्, द्, वा न्, के परे ल्, आवे तो उनके स्थान में ल् आदेश होता है, और न् के पूर्वोत्तर के सिर पर ऐसा चन्द्र बिन्दु लिखते हैं; जैसा तत् + लीला = तल्लीला, महान् + लाभः = महालाभः इ० ॥

॥ ७ ॥ त्, द्, वा न्, इनके आगे श् होवे तो श् की जगह में छ् और त् वा द् के स्थान में च्, और न् के स्थान में ज् आदेश होते हैं; जैसा सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र, तद् + शरीर = तच्छरीर, धावन् + शशः = धावच्छशः इ० ॥

॥ ८ ॥ वर्णों के अन्त्य वर्ण को छोड़कर बाकी जो वर्ण हैं, उनसे आगे ह्

आवे तो पूर्व वर्ण के वर्ग का चौथा वर्ण विकल्प से ह् कारके स्थान में होता है; जैसा ॥

वाक् + हरि ग् घ् = वाग्घरि अथवा वाग्हरि

अच् + हल् ज् भ् = अजभल् वा अवहल्

षट् + हृदय ड् ठ् = षड्दय वा षड्हृदय

तत् + हवि द् ध् = तद्धवि वा तद्हवि

अप् + हरण ब् भ् = अब्भरण वा अब्हरण

॥ ६ ॥ स् के परे अन्तस्थ वर्ण वा ऊष्म वर्ण आवे तो स् अनुस्वार में बदल जाता है; जैसा सम + योग = संयोग इ० ॥

॥ १० ॥ स् के आगे स्पर्श वर्ण होवे तो स् विकल्प से अनुस्वार अथवा उत्तर व्यञ्जन के वर्ग के अनुनासिक वर्ण में बदल जाता है जैसा सम् + कल्प = संकल्प वा सङ्कल्प-मृत्यु स् + जय = मृत्युजय वा मृत्युञ्जय इत्यादि ॥

॥ ११ ॥ अनुस्वार के आगे कवर्गादि वर्ण होवे तो उसी वर्ण के वर्ग का अन्त्य वर्ण विकल्प से आदेश होता है; जैसा सं + गत = सङ्गत, सं + ग्राम = संग्राम, सं + धि = सन्धि, सं + पात = सम्पात इ० ॥ कभी २ संगत, सङ्ग्राम; संधि, सपात ऐसा भी लिखते हैं ॥

॥ १२ ॥ त् के आगे कोई स्वर अथवा ग्, घ्, ब्, य्, व्, ह्, इनमें से कोई आवे तो द् में बदल जाता है; जैसा जगत् + आदि = जगदादि; भवत् + दर्शन = भवदृशन, तत् + भय = तद्भय, महत् + भाग्य = महद्भाग्य, तत् + गत = तद्गत, इत्यादि ॥

॥ १३ ॥ वर्गों के, प्रथम वर्णों के आगे न्, स् इनमें से कोई वर्ण होवे तो पूर्व वर्ण को अपने वर्ग का तीसरा या अन्त्य वर्ण आदेश विकल्प से होगा, मय माच परे होवे तो अन्त्य वर्ण नित्य होगा; जैसा वाक् + मन = वाङ्मन वा वाग्मन, षट् + मास = षड्मास, वा षमसा तत् + नेच = तन्नेच वातदनेच, तत् + मय = तन्मय, तत् + माच = तन्माच इत्यादि ॥

॥ १४ ॥ **ह** से पूर्व स्वर होवे तो **ह** को पूर्व में **च्** आगम होता है;

जैसा **आ** + **ह्वा**दन = **आच्छादन**, आगम मिचवत् अवयव रूपी होता है ।

॥ १५ ॥ विसर्ग के आगे **च्, छ्, ट्, ठ्, तु, थ्**, आवें तो क्रमसे **श्** **प्** **स्** आदेश विकल्प से होते हैं; जैसा **निः** + **शेष** = निश्शेष, **निः** + संशय = निस्संगय, **निः** + चय = निश्चय, **निः** + षंठ = निष्पंठ, **कः** + **ट** = कष्ट इत्यादि ॥ कभी ० निःशेष, निःसंशय ऐसा लिखते हैं ॥

॥ १६ ॥ विसर्ग के पूर्व **अ** होवे, और वर्ण का तीसरा चौथा या पांचवां वर्ण वा **य् र् ल् व् ह्** इनमें से कोई वर्ण उसके आगे आवे, तो **अ** सहित विसर्ग के स्थान में **ओ** आदेश होता है; जैसा **मनः** + **भाव** = मनोभाव; **तेजः** + **मय** = तेजो मय इ० ॥

॥ १७ ॥ **अ** और **आ** को छोड़ कर शेष स्वरेमि से कोई स्वर विसर्ग के पीछे आवे और उसके परे कोई स्वर अथवा वर्ण का तीसरा चौथा वा पांचवां वर्ण और **य् र् ल् व् ह्** इनमें से कोई वर्ण रहे, तो विसर्ग को **र** आदेश होता है; जैसा **निः** + **धन**, = निर्धन, **दुः** + **नीत** = दुर्नीत इत्यादि ॥

दो र एकच आवें तो पूर्व का लोप होकर उसके पीछे का स्वर दीर्घ होता है; जैसा, **निर्** + **रम**, = नीरम, **निर्** + **रोगी** = नीरोगी इत्यादि ॥

॥ १८ ॥ **चृ चृ र् प्** इनसे आगे **न** होवे अथवा इन के बीच में स्वर कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार और **ल् व् ह्** इनमें से कोई एक वा दो तीन वर्ण आवें तो भी **न** को **ण** आदेश होता है; जैसा **विस्तीर्** + **न** = विस्तीर्ण, **विकीर्** + **न** = विकीर्ण, **भर्** + **अन** = भरण, **पोष्** + **अन** = पोषण, **अर्प** + **अन** = अर्पण, इत्यादि इन शब्दों को भाषा में अपभ्रंश से, **विस्तीर्न**, **विकीर्न**, **भरन**, **पोपन**, **अर्पन**, ऐसा नकारीच्चारण से बोलते हैं ॥

+ मिल के समान गजदीक रत्ता है ॥

+ ये शब्द हिन्दी में भाष्य हूँ लिखे जाते हैं यथा निरम निरोगी ॥

१ पाठ

शब्द विचार

शब्दों के प्रकार ॥

प्र० शब्द विचार किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की जाति, साधन, व्युत्पत्ति और दूसरे शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध इनके विवेचन को शब्द विचार कहते हैं ॥

प्र० शब्द किसे कहते हैं ?

उ० मुख से निकला हुआ सार्थ ध्वनि अर्थात् जिसका अर्थ होवे, उसे शब्द कहते हैं; और वह लिखा हुआ भी शब्द कहा जाता है, सार्थक कहने से अनर्थक शब्द अर्थात् अर्थ रहित ध्वनि इस व्याकरण में बे काम है ॥

प्र० शब्द कितने प्रकार के हैं ?

उ० शब्द दो प्रकार के हैं सिद्ध और साधित ॥

प्र० सिद्ध शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से न बना हो वह सिद्ध शब्द जैसा घोड़ा, बैल, बाप; संस्कृत शब्द बहुत से अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं इसकारण से सिद्ध शब्द बहुत कम हैं ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो दूसरे शब्द से बने हैं वे साधित शब्द हैं जैसा, शास्त्री, विद्यार्थी, शिक्षक इत्यादि ॥ सामासिक साधित शब्द का एक भेद है; वह दो वा अधिक शब्दों के योग से होता है; जैसा चक्रपाणि, पीताम्बर इत्यादि ॥

प्र० व्याकरण में साधन क्रिया से शब्दों के मुख्य भेद कितने हैं ?

उ० दो भेद हैं सविभक्तिक और अविभक्तिक ॥

प्र० सविभक्तिक किसको कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्त्यादि कार्य होते हैं वे सविभक्तिक कहलाते हैं; जैसा घोड़ा, अच्छा, मैं, करता है इत्यादि ॥

प्र० अविभक्तिक किसको कहते हैं ?

उ० जिन शब्दों से विभक्ता के कार्य नहीं होते हैं उ० को अवि-
भक्तिका वा अव्यय कहते हैं; जैसा ऊपर, और कहाँ, जहाँ इत्यादि ॥

प्र० सविभक्तिक और अविभक्तिकों के और कोई भेद होवे तो कहिये?

उ० हिन्दी भाषा में शब्दों के आठ प्रकार हैं, सविभक्तिकमें चार
जैसा नाम, सर्वनाम, विशेषण, क्रियापद और अविभक्तिक में चार हैं क्रिया
विशेषण, शब्द योगी, उभयान्वयी, उद्गार वाची ॥

प्र० नाम किसे कहते हैं ?

उ० पदार्थ मात्र की संज्ञा को नाम कहते हैं; जैसा घोड़ा, बैल, म-
नुष्य, क्रोध इत्यादि ॥

प्र० सर्वनाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक बार कहकर फिर उसकी जगह जो शब्द आता
है, उसे सर्वनाम कहते हैं; जैसा मोहननाल आया, और उसने कहा ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द पदार्थ का गुण वा धर्म बतावे उसे विशेषण कहते
हैं; जैसा सुन्दर घोड़ा, मोठा पानी, चतुर पुरुष, दो बैल इत्यादि ॥

प्र० क्रिया पद किसे कहते ?

उ० कृति वा स्थिति वा अनुभव इत्यादि व्यापार बोधक शब्द को
क्रिया पद कहते हैं; जैसा करता है, सोया, गया, आता है, मारा गया
इत्यादि ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० क्रियाके गुण वा प्रकार बोधक शब्दों को क्रिया विशेषण कहते
हैं; जैसा शीघ्र जाता है, मुन्दर लिखता है, भट पट चलता है ॥

प्र० शब्द योगी अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिसका प्रयोग नाम वाचक के साथ होता है और उसीका
सम्बन्ध दूसरे की तर्फ बताता है, उसे शब्द योगी जानो जैसा ऊपर,
आगे, पीछे इत्यादि ॥

+ उ० पदार्थ इत्य वा अव्यय जिनकी स्थिति वा अस्थिति है ऐसी कल्पना कर सकते
हैं, उनकी संज्ञा को नाम कहते हैं ॥

प्र० उभयान्वयी अव्यय किनको कहते हैं ?

उ० जिस शब्द का योग दो शब्दों में वा दो वाक्यों में होवे उसे उभयान्वयी जानें; जैसा परंतु, और, तथापि, वा इत्यादि ॥

प्र० केवल प्रयोगी किसे कहते हैं ?

उ० जिससे उनके हर्ष दुःखादि विकारों का बोध हो उसे केवल प्रयोगी वा उद्गारवाची कहते हैं; जैसा वाह वा, छः, धिक्, हर हर इत्यादि ॥

६ प. ठ

नाम विचार ॥

नाम के प्रकार ॥

प्र० नाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० नाम तीन प्रकारके हैं सामान्य नाम, विशेषनाम, भाववाचकनाम ॥

प्र० सामान्य नाम किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम से वस्तुओं के समूह में से कोई जाति धर्म विशिष्ट व्यक्ति समझी जाय उसे सामान्य नाम आने जैसा घोड़ा, हाथी, मनुष्य, इत्यादि ॥

प्र० विशेष नाम किसे कहते हैं ॥

उ० जिस नाम से जाति के गुण का बोध न होकर केवल व्यक्ति मात्र का बोध हो उसे विशेष नाम कहते हैं; जैसा देवदत्त, गंगा, यमुना, कर्नाटक इत्यादि ॥

प्र० भाववाचक नाम किसे कहते हैं ?

उ० पदार्थ का धर्म अर्थात् गुण वा कोई व्यापार जिससे पाया जाय उसे भाव वाचक नाम कहते हैं, जैसा ओदार्य, समझ, मार, मनुष्यत्व, चातुर्य इत्यादि ॥

प्र० नाम से और कुछ समझा जाता है वा नहीं ?

उ० हां लिङ्ग, वचन, और कारक समझे जाते हैं ॥

३ पाठ

लिङ्ग विचार ॥

प्र० लिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० लिङ्ग चिन्ह को कहते हैं अर्थात् सजीव, वा निजीव, पदार्थ पुरुष वाचक वा स्त्री वाचक है यह पहचानने का चिन्ह ॥

प्र० लिङ्ग कितने हैं ॥

उ० पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग ये दो लिङ्ग हैं, नपुंसक लिङ्ग तीसरा अन्य भाषा में आता है, हिन्दी भाषा में नहीं आता ॥

प्र० पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग किसे कहते हैं ?

उ० जिस नामसे पुरुषत्व का बोध होय उसे पुंलिङ्ग कहते हैं, जैसा घोड़ा, गधा, गाड़ा, सोटा इत्यादि ॥

जिस नाम से स्त्रीत्वका बोध होय वह, स्त्रीलिङ्ग; जैसा घोड़ी, भैंस, खाट, कृपा, गाड़ी, घड़ी इत्यादि ॥

प्र० प्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग भेद शीघ्र समझ में आता है, पर अप्राणि वाचक पदार्थों का लिङ्ग किस रीति से समझना चाहिये ?

उ० लिङ्ग का निर्णय तो बहुत कठिन है, परंतु इस विषय में कुछ नियम लिखता हूँ ॥

॥ १ ॥ संस्कृत में जो शब्द पुंलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग हैं वे हिन्दी में बहुधा पुंलिङ्ग होते हैं जैसा सागर, रत्न, जल, मुख; रत्न और जल और मुख संस्कृत में नपुंसक लिङ्गी हैं ॥ जो शब्द संस्कृत में स्त्री लिङ्ग हैं वे हिन्दी में भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं जैसा कृपा, माया, गति, बुद्धि इत्यादि ॥

॥ २ ॥ आकारान्त नाम जिसका उपान्त्य वर्ण तु न होय और आकारान्त हिन्दी नाम प्रायः पुंलिङ्ग हैं; जैसा विघ्न, पत्थर, बैल, घोड़ा, लड़का, कपड़ा इ० ॥

॥ ३ ॥ जिन शब्दों के अन्त में ई वा त होवे वे प्रायः स्त्रीलिङ्ग हैं

फरंतु घी, पानी, जी, वही इत्यादि शब्द छोड़ कर; जैसा घोड़ा, टोपी, कुर्सी, हवेली, रात, बाल इत्यादि ॥

॥ ४ ॥ जिस नाम के अन्त में आवट वा आहट प्रत्यय हो वह सदा स्त्री लिङ्ग जानो; जैसा सजावट, बनावट, घबराहट इत्यादि ॥

॥ ५ ॥ सामासिक शब्दों का लिङ्ग निर्णय बहुधा अन्त्य शब्द के लिङ्गानुसार होता है, और बहुब्रीहि समास में अन्य पदार्थवत् लिङ्ग होगा ॥ जैसा दयानिधि यह पुल्लिङ्ग है क्योंकि निधि शब्द पुल्लिङ्ग है ॥ इसी तरह से भूत दया उपकार बुद्धि ये स्त्रीलिङ्ग हैं कुमति पुरुष अर्थात् जिस की मति खराब है ऐसा पुरुष यहाँ कुमति यह विशेषण पुल्लिङ्ग है कुमति स्त्री यहाँ कुमति यह विशेषण स्त्री लिङ्ग है ॥

४ पाठ

पुल्लिङ्ग नाम से स्त्रीलिङ्ग नाम बनाने की रीति ॥

प्र० पुल्लिङ्ग शब्द से स्त्रीलिङ्ग किस प्रकार से बनता है ?

उ० ॥ १ ॥ प्राणि वाचक अकारान्त और आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्याक्षर के स्थान में ई आदेश होने से स्त्रीलिङ्ग होता है; जैसा देव, देवी; दास, दासी; लडका, लडकी; घोड़ा, घोड़ी इत्यादि ॥

॥ २ ॥ कहीं २ इया आदेश होता है वहाँ अन्त्याक्षर द्वित्व होवे तो एक व्यञ्जन का लोप होजाता है जैसा बुड्ठा, बुढ़िया; लट्ट, लठिया; कुत्ता, कुतिया इत्यादि ॥

॥ ३ ॥ व्यापार करने वाले पुरुष वाची अकारान्त वा आकारान्त वा ईकारान्त शब्द अन्त्याक्षर को अन्न वा इन्न आदेश करने से स्त्रीलिङ्ग होते हैं ॥

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सेनार	सेनारिन, सेनारन	कसेरा	कसेरिन, कसेरन
लोहार	लोहारिन, लोहारन	ठठेरा	ठठेरिन, ठठेरन
कलवार	कलवारिन, कलवारन	तेली	तेलिन, तेलन
माली	मालिन, मालन	धीबी	धीबिन, धोबन

॥ ४ ॥ ब्राह्मणों के उपनाम वाची शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये अन्त्यस्वर को आइन् आदेश विकल्प से करके आदि अक्षर के स्वर को ह्रस्व कर देते हैं पर ए ओ को ह्रस्व नहीं होता, एक पक्ष में अन् आदेश होता है ॥

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
मिसर	मिसराइन, मिसरन	तिवारी	तिवारन, तिवारिन
दुबे	दुबाइन, दुबन	ओभा	ओभन
पांड़े	पांड़ाइन, पांडन	चौबे	चौबन

॥ ५ ॥ पुंलिङ्ग शब्द के अन्त्य वर्ण को अन् आद्यन तायन नी आनी ये आदेश होने से कभी २ स्त्रीलिङ्ग होते हैं; जैसा

पुंलिङ्ग आदेश	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग आदेश	स्त्रीलिङ्ग
कूँजड़ा अन्	कूँजड़न	नायक अन्	नायकन
कवी तायन	कवितायन खतरी	आयन } खतरायन	
		आनी } खतरानी	
पण्डित आनी	पण्डितानी	मेहतर आनी	मेहतरानी
आयन	पण्डितायन		

॥ ६ ॥ कई पुंलिङ्ग शब्दों का स्त्रीलिङ्ग भिन्न शब्दों से होता है जैसा

पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
भाई	बहिन	पुरुष	स्त्री	पिता	माता
बाप	मा	राजा	रानी	मर्द	औरत
		बैल	गाय	नर	मादी

भाषा में हर एक नाम का लिङ्ग जानना बहुत कठिन है, इसलिये यह ध्यान में रखना चाहिये कि जिस नाम का लिङ्ग ज्ञात न होय उसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग में करने से पुंलिङ्ग में करना उचित है ॥

५ पाठ

वचन का वर्णन ॥

प्र० वचन किसे कहते हैं और वे कितने हैं ?

उ० वचन संख्या को कहते हैं; वे दो हैं एकवचन और बहुवचन नामके जिस रूप से एक का बोध हो उसे एक वचन और जिस से एकसे अधिक का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं; जैसा लड़का, घोड़ा एक वचन, लड़के, घोड़े बहुवचन ॥

प्र० नाम का बहुवचन किसरीति से बनता है ?

उ० आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य आ के स्थानमें ए आदेश करने से बहुवचन होता है; जैसा एकवचन बहुवचन, ए-व ब-व ए-व ब-व-
घोड़ा घोड़े मोटा मोटे दण्डा दण्डे
गधा गधे कोठा कोठे लड़का लड़के॥

शेष पुल्लिङ्ग शब्दोंके एक वचन और बहुवचन के रूप एक से होते हैं; जैसा मर्द, पर्वत, माल, साधु इत्यादि ॥

सम्बन्धवाचक आकारान्त और इतर कई एक आकारान्त शब्द एक वचन और बहुवचन में समान रूप होते हैं जैसा बाबा, पिता, माता, सौदा, दर्या, दाना, दाता इत्यादि ॥

स्त्रीलिङ्ग इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त और ऊकारान्त शब्दों को छोड़ कर बाकी शब्दों के अन्त्यस्वर के स्थान में सानुनासिक एं आदेश करने से बहुवचन होता है; जैसा

एकवचन, बहुवचन— ए-व— ब-व— ए-व— ब-व

औरत औरतें कितार कित बें तलवार तलवारें इत्यादि ॥

इकारान्त और ईकारान्त शब्दों के आगे यां प्रत्यय करके ईकारको ह्रस्व करने से बहुवचन होता है; जैसा ॥

घोड़ी, घोड़ियां; बकरी बकरियां, बुद्धि बुद्धियां इत्यादि ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्गी शब्दों के अन्त्य आ पर प्रायः अनुस्वार देनेसे बहु-

वचन होता है; जैसा एकवचन बहुवचन ए-व- व-व-
गेय्या गेय्यां, भैंसिया, भैंसियां इत्यादि ॥

बहुत से नामों के एक वचन और बहुवचन के रूप समान होते हैं
इसलिये अनेकत्व का बोध करने के वास्ते लोग, गण, जाति इत्यादि
बहुत्व वाचक शब्द नाम के साथ आते हैं; जैसा चाकर लोग, देवगण,
पशु जाति इ० ॥

ई पाठ

विभक्ति और कारक विचार ॥

प्र० कारक और विभक्ति किनको कहते हैं ?

उ० क्रिया का सम्बन्ध जिस नाम वाचक शब्द में हो उसे कारक क-
हते हैं; और क्रिया और कारक का सम्बन्ध जिस रूपसे ज्ञात होवे उसको
विभक्ति कहते हैं; और सम्बन्ध बोधक अक्षरों को विभक्ति प्रत्यय कहते हैं ॥

प्र० कारक कौन २ हैं ?

उ० कारक छः हैं, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिक-
रण, इनका वर्णन आगे किया है ॥

प्र० विभक्तियां कितनी हैं ?

उ० ये विभक्तियां सात हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी,
षष्ठी, और सप्तमी, ॥

प्र० विभक्ति प्रत्यय कौन २ हैं और उनका योजना कैसी होती है ?

उ० विभक्ति का नाम प्रत्यय	विभक्ति का नाम प्रत्यय
१ प्रथमा	०
२ द्वितीया	को
३ तृतीया	ने, से
४ चतुर्थी	को
५ पञ्चमी	से
६ षष्ठी	का, की, के
७ सप्तमी	में, पे, पर
८ सम्बोधन	०

प्रथमा विभक्ति में नाम से कुछ प्रत्यय नहीं होता जो मूल रूप है
वही रहता है; प्रथमा के एक वचन का रूप और कभी २ बहुवचन का
रूप दोनों तुल्य होते हैं ॥

इतर विभक्तियों में प्रत्यय होते हैं, वे नाम वाचक के मूल रूप से या उस रूप में कुछ विकार होकर आगे जोड़े जाते हैं, जिस रूप से प्रत्यय जोड़े जाते हैं उसको सामान्य रूप कहते हैं, जैसा लड़का, लड़के को, लड़कों को, यहां लड़के और लड़कों ये लड़का शब्द के क्रम से एक वचन और बहुवचन सामान्य रूप हैं; द्वितीया आदि विभक्तियों में और सम्बोधन में इतना भेद है कि सम्बोधन में प्रत्यय नहीं है और अय, अरे, हे इत्यादि शब्द नाम को पूर्व लगाते हैं ॥ विभक्ति प्रत्ययों का योग करना विभक्ति कार्य कहलाता है ॥

प्र० प्रथमादिष्टः कारक और सम्बन्ध दोनोंक षष्ठी इनका पृथक् २ लक्षण कहिये ?

उ० क्रिया को जो करे उसे कर्त्ता कहते हैं; जैसा देवदत्त जाता है ॥
क्रिया का फल जिस पर रहे उसे कर्म जानो; जैसे देवदत्त किताब को पढ़ता है ॥

क्रिया का साधन अर्थात् जिसके द्वारा क्रिया की जावे उसे कारण समझो; जैसा राम ने रावण को बाण से मारा, यहां बाण कारण है ॥

जिसको कुछ दिया जावे वा जिसके निमित्त कुछ दिया जावे उसे संप्रदान कहते हैं; जैसा मोहनलाल गरीबों को खाने को देता है ॥

जिससे वियोग किया जावे उसे अपादान कहते हैं; जैसा बाजार से लाया है ॥

षष्ठी का अर्थ सम्बन्ध है, वह दो पदार्थों पर रहता है, एक कृत सम्बन्धी दूसरा सम्बन्धी ॥ कृतसम्बन्धी से षष्ठीके प्रत्यय का की के होते हैं; सम्बन्धी पुल्लिङ्ग एकवचन होता कृत सम्बन्धीके आगे क; स्त्रीलिङ्ग होता की, पुल्लिङ्ग बहुवचन हो तो के लगाते हैं, कृत सम्बन्धी सम्बन्धी का विशेषण होता है, उसका क्रिया में अवयव नहीं होता, हमलिये षष्ठी कारक में नहीं ली; जैसा राजा का घोड़ा, राजा की घोड़ी, राजा के घोड़े इत्यादि ॥

सप्तमी का अर्थ अधिकारस्थ अर्थात् आधार होता है; जैसा श्रीकृष्ण घरमें है, गोपाल बोड़े पै बैठकर गया है इत्यादि ॥

सम्बोधन = सम्मुखी करण अर्थात् किसी को चिता कर अपने सम्मुख करना, सम्बोधन के बोधक है, अरे, अथ, इत्यादि अव्ययनामों को पूर्व लगाते हैं, जैसा हेराम मेरा दुःख दूरकर, अरे मोहन, अब कुसकर, इनका वर्णन कारक विचार में अच्छी तरह से किया जायगा ॥

प्र० नाम से विभक्ति कार्य कैसा होता है यह मेरे ध्यान में अच्छी तरह से नहीं आया इसलिये उदाहरण देकर मुझे समझाइये ?

उ० विभक्ति कार्य अच्छी तरह से समझ में आवे इसलिये पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के विभक्ति कार्यके विषय में पृथक् २ नियम लिखता हूँ ॥

१ पाठ

पुल्लिङ्ग नाम ॥

इननामों के दे। गना किये हैं १ एक अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम; २ दूसरा अकारान्त पुल्लिङ्ग नामों का छेड़ शेष पुल्लिङ्ग नाम ॥

नियम ॥

१ अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम के अन्त्य आ को ए आदेश करने से प्रथमा का बहुवचन और एक वचन सामान्य रूप और सम्बोधन के एक वचन का रूप बनता है; अन्त्य आ को औ आदेश करने से बहुवचन सामान्य रूप, होता है, और सम्बोधन के बहुवचन में ओ आदेश होता है; सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं ॥

२ अब शिष्ट पुल्लिङ्ग नामों की प्रथमा के बहु वचन का रूप और एक वचन सामान्य रूप प्रथमा के एक वचन के रूपवत् होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अन्त्यवर्ण के आगे औ आगम करके बहुवचन सामान्य रूप बनता है, सम्बोधन में केवल ओ आगम किया जाता है ॥ सामान्य रूप के आगे प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

प्रथम नियम का उदाहरण ॥

आकारान्त पुल्लिङ्ग लङ्का शब्द ॥

विभक्ति	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ लङ्का	लङ्के
द्वितीया	२ लङ्के को	लङ्केों को
तृतीया	३ लङ्के ने - से	लङ्केों ने - से
चतुर्थी	४ लङ्के को	लङ्केों को
पञ्चमी	५ लङ्के से	लङ्केों से
षष्ठी	६ लङ्के का - की - के	लङ्केों का - की - के
सप्तमी	७ लङ्के में - पै - पर	लङ्केों में - पै - पर
सम्बोधन	८ अय लङ्के	अय लङ्केों

इसी रीति से आगे लिखे हुये नामों को छोड़ शेष सब आकारान्त पुल्लिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जानो ॥

अपवाद—आकारान्त पुल्लिङ्ग विशेषनाम, सम्बन्ध वाचक नाम, और संस्कृत शब्द ये पूर्वोक्त नियम के अपवाद हैं; इनका विभक्ति कार्य दूसरे नियम से होता है; जैसा, मोहना, रामा, भैया, काका, मामा, दाता, कर्मा इत्यादि ॥

	एक वचन	बहुवचन
प्रथमा	१ भैया	भैया
द्वितीया	२ भैया को	भैयाओं को
तृतीया	३ भैया ने - से	भैयाओं ने - से
चतुर्थी	४ भैया को	भैयाओं को
पञ्चमी	५ भैया से	भैयाओं से
षष्ठी	६ भैया का - की - के	भैयाओं का - की - के
सप्तमी	७ भैया में-पै-पर	भैयाओं में-पै-पर
सम्बोधन	अय भैया	अय भैयाओं

द्वितीय नियम के उदाहरण ॥

अकारान्त पुल्लिङ्ग-नाम +

द्वितीयादि विभक्तियोंके बहुवचन में अंत्य अ को ओं आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं, सम्बोधन के बहुवचन में अंत्य अ को ओ आदेश किया जाता है ॥

अकारान्त पुल्लिङ्ग बालक शब्द ॥

एक वचन	बहुवचन
प्र० १ बालक	बालक
द्वि० २ बालक को	बालकों को
तृ० ३ बालक ने - में	बालकों ने - में
च० ४ बालक को	बालकों को
प० ५ बालक से	बालकों से
ष० ६ बालक का-की-के	बालकों का-की-के
स० ७ बालक में-पै-पर	बालकों में-पै-पर
सं ८ हे बालक	हे बालको

इसी प्रकार तालाब, मालिक, पालक, वृत्त, पर्वत इत्यादि जानें ॥

इकारान्त औ ईकारान्त पुल्लिङ्ग नाम ॥

इकारान्त पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्द शुद्ध हिन्दी नहीं हैं, पर जो हिन्दी में हैं वे संस्कृत से आये हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में अंत्य वर्णसे आगे यों आगम करते हैं सम्बोधन के बहुवचन में यो होता है, और अंत्यवर्ण दीर्घ ई होवे तो उसे ह्रस्व करते हैं ॥

इकारान्त पुल्लिङ्ग कवि शब्द ॥

एकवचन	बहुवचन
प्र० १ कवि	कवि
द्वि० २ कवि को	कवियों को

+ धन, धन, बालक आदि शब्दों का उच्चारण कुछ हलाने वा किया करते हैं पर इनके अन्त अक्षर के नीचे व्यंजन का चिह्न नहीं लगाते हैं और ये शब्द संस्कृत में बराबर अकारान्त हैं इसलिये उन्हें यहाँ भी अकारान्त माना है ॥

तृ०	३ कवि ने, से	कवियों ने, से
च०	४ कवि को	कवियों को
पं०	५ कवि से	कवियों से
प०	६ कवि का—की—के	कवियों का—की—के
स०	७ कवि में—पै—पर	कवियों में—पै—पर
सं०	८ हे कवि	हे कवियो

इसी तरह से हरि, रवि, पति इत्यादि जानो ॥

ईकारान्त पुंलिङ्ग माली शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	माली	माली	५	माली से	मालियों से
२	मालीकी	मालियों को	६	मालीका—की—के	मालियों का—की—के
३	मालीने-से	मालियोने-से	७	मालीमें-पै-पर	मालियों में-पै-पर
४	मालीको	मालियों को	८	हे माली	हे मालियो

इसी तरह से धावी, तेजी, धनी इत्यादि जानो ॥

उकारान्त पुंलिङ्ग साधु शब्द ॥

१	साधु	साधु	५	साधु से	साधुओं से
२	साधु को	साधुओं को	६	साधु का—की—के	साधुओं का—की—के
३	साधुने-से	साधुओंने-से	७	साधुमें-पै-पर	साधुओंमें-पै-पर
४	साधु को	साधुओंको	८	अथसाधु	अथसाधुओं

इसी तरह से भानु, प्रभु आदि जानो ॥

ऊकारान्त पुंलिङ्ग भालू शब्द ॥

ऊकारान्त, के बहुवचन सामान्य रूप में अंत्य ऊ को ह्रस्व होजाता है ॥

१	भालू	भालू	३	भालूने-से	भालुओंने-से
२	भालू को	भालुओंको	४	भालूको	भालुओंको

+ को३ २ को३ द्वितीया आदि विभक्तियों के बहुवचन में ईकारान्त पुंलिङ्ग के ह्रस्व को के बदले को आगम करके बनाते हैं जैसा मालियों को मालियों ने-से क० ॥

७ भालू से भालुओं से ७ भालूमें-पै-पर भालुओंमें-पै-पर

६ भालूका-की-के भालुओं का-की-के ८ अयभालू अयभालुओ

एकारान्त पुंलिङ्ग नाम ॥

१ चौबे चौबे ६ चौबेका-की-के चौबेओं का-की-के

२।४ चौबे को चौबेओंको ७ चौबेमें-पै-पर चौबेओंमें-पै-पर

३।५ चौबेने, से चौबेओंने, से ८ अयचौबे अयचौबेओ

इसी प्रकार पांडे आदि शब्द जानो, और ऐ, ओ, औ, ये जिनके अन्त में है ऐसे शब्द हिन्दी भाषा में नहीं है ॥

८ पाठ

स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

प्रथमा के बहुवचन को छोड़कर शेष विभक्तियों में स्त्रीलिङ्ग नामों का विभक्ति कार्य जो पुंलिङ्ग नाम आकारान्त नहीं हैं उनके समान होता है, स्त्रीलिङ्ग नामों के भी दो गण मान लिये हैं ॥

१ इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

२ शेष स्त्रीलिङ्ग नाम ॥

१ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों के अन्त्य इ और ई को इयाँ आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप बनता है, शेष रूप पुंलिङ्ग इकारान्त और ईकारान्त नामों के सदृश होते हैं ॥

२ नियम ॥

इकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नामों को छोड़के शेष स्त्रीलिङ्ग नामों में से कई नामों के अन्त्य अन्तर को ए आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप सिद्ध होता है, और कई नामों के प्रथमा के एकवचन और बहुवचन समान होते हैं ॥

उदाहरण १**अकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द ॥**

विभक्ति-एक वचन बहु वचन विभक्ति एक वचन बहु वचन
 प्र०१ बुद्धि बुद्धियां प०५ बुद्धि से बुद्धियों से
 द्वि०२ बुद्धि को बुद्धियों को प०६ बुद्धिका-की-के बुद्धियोंका-की-के
 तृ०३ बुद्धिने-से बुद्धियोंने-से म०७ बुद्धि में-पै-पर बुद्धियोंमें-पै-पर
 च०४ बुद्धि को बुद्धियों को सं०८ हे बुद्धि हे बुद्धियो

इसी तरह मति आदि शब्द जानो ॥

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग घोड़ी शब्द ॥

१ घोड़ी घोड़ियां ६ घोड़ा का-का-के घोड़ियों का-की-के
 २ ४ घोड़ी को घोड़ियों को ७ घोड़ा में-पै-पर घोड़ियों में -पै-पर
 ३ ५ घोड़ीने-से घोड़ियोंने-से ८ अग्र घोड़ा अग्र घोड़ियो

२ गणनियम और उदाहरण ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य अक्षर को एं आदेश करने से प्रथमा के बहुवचन का रूप मिलता है, और शेष रूप अकारान्त पुल्लिङ्गवत् ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग बात शब्द ॥

विभ-एक वचन बहु वचन वि- एक वचन बहु वचन
 १ बात बातें ५ बात से बातों से
 २ बात को बातों को ६ बात का-की-के बातों का-की-के
 ३ बातने-से बातोंने-से ७ बातमें-पै-पर बातेंमें-पै-पर
 ४ "बात को" बातों को ८ हे बात हे बातो

इसी तरह किताब, चील, रात आदि जानो ॥

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अंत्य आ के शिर पर अनुस्वार देने से प्रथमा के बहुवचन का रूप होता है, शेष रूप मुख्य नियम से बनते हैं ॥

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप ॥

विभ- एक वचन बहु वचन वि- एक वचन बहु वचन
 १ गेय्या गेय्यां ५ गेय्या से गेय्याओं से

३।५	गेय्याने-से	गेय्याओंने-से	०	गेय्यामें-पै-पर	गेय्याओंमें-पै-पर
६	गेय्याका-की-के	गेय्याओंका-की-के	८	हे गेय्या	हे गेय्याओ
उकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप			उकारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के रूप		
१	धेनु	धेनु	१	भाडू	भाडू
२।४	धेनुको	धेनुओंको	२।४	भाडूको	भाडूओंको
३।५	धेनुने-से	धेनुओंने-से	३।५	भाडूने-से	भाडूओंने-से
६	धेनुका-की-के	धेनुओंका-की-के	६	भाडूका-की-के	भाडूओंका-की-के
०	धेनुमें-पै पर	धेनुओंमें-पै-पर	०	भाडूमें-पै-पर	भाडूओंमें-पै-पर
८	हे धेनु	हे धेनुओ	८	हे भाडू	हे भाडूओ

जो शब्द की प्रथमा का बहुवचन जोरुआं होता है; यकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में नहीं आता ॥

६ पाठ

सर्वनाम विचार ॥

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० नाम को एक बार कह कर फिर उसके कहने का प्रयोजन पड़े तो उसका जगह जो शब्द आते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं; इससे वाग्भार नाम को कहने का काम नहीं पड़ता, और सर्व नामों की जगह आता है, इसलिये सर्व नाम यह सार्थक संज्ञा रखी गई है ॥ सर्वनामों को नामवत् लिङ्ग वचन और विभक्ति कार्य होता है ॥ पर लिङ्गभेद से उनके रूपों में कुछ भेद नहीं होता नाम के अनुरोध से सर्व नाम का लिङ्ग ब्रूमा जाता है ॥

प्र० सर्वनाम कितने प्रकार के हैं ?

उ० सर्व नाम पांच प्रकार के हैं; पुरुषवाचक, दर्शक, सम्बन्धी, प्रशार्थक, सामान्य ॥

पुरुष वाचक सर्व नाम ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० मैं तू वह ये पुरुष वाचक सर्वनाम हैं, मैं यह अपने का वाचक बोलने वाले को बताता है, इसलिये उसे प्रथम पुरुष कहते हैं तू यह जिसको बोलता है उसे बतलाता है, इस कारण से उसे द्वितीय पुरुष कहते हैं, और वह उक्त दोनों को छोड़ तीसरे का बोधकरता है, इस से उसे तृतीय पुरुष कहते हैं ॥

प्र० पुरुष वाचक सर्वनामों के रूप वचन भेद से कैसे होते हैं ?

उ० इनके रूप पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में एक से होते हैं पर वचनों में बदलते हैं ॥

पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग

पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग

पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग

एक वचन बहुवचन

एक वचन व-व-

ए-व- व-व-

मैं

हम

तू

तुम

वह वे

प्र० प्रथम पुरुष सर्वनाम की कारक रचना में रूप किस प्रकार से होते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में मैं और बहुवचन में हम होता है, और षष्ठी के छोड़ द्वितीयादि त्रिभक्तियों के एक वचन में मुझ और बहुवचन में हम आदेश होकर अगे प्रत्यय जोड़ते हैं, द्वितीया और चतुर्थी के एक वचन में ए बहुवचन में ए प्रत्यय विकल्प से करके मुझ और हम सामान्य रूपों के अन्त्य अकार का लोप होता है, तृतीया का ने प्रत्यय लगे तो मुझ आदेश न होगा मूल रूपों से जोड़ा जाता है, षष्ठी के एकवचन में प्रकृति को मैं आदेश और का की के प्रत्ययों का

+

इसी रे आदेश क्रम से करते हैं बहुवचन में हम के अन्त्य आ का दीर्घ करते हैं, सर्व नामों का सम्बोधन नहीं होता ॥

+ षष्ठी के ॥ त्वं या री रे केवल प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्व नामों के होते हैं ॥ और का नी मैं हम का वाचक आप पद से होते हैं ॥ इन रूपों की योजना का की के प्रत्ययान्त रूपों के समान होती है ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	मैं	हम
२	मुझको, मुझे	हमको, हमें
३	मैंने, मुझ से	हमने, हमसे, हमोंसे
४	मुझको, मुझे	हमको, हमें
५	मुझे	हमसे
६	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे
७	मुझमें, पै, पर	हममें, पै, पर

प्र० द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम के रूप कैसे बनते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में तू बहुवचन में तुम होते हैं, द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में तुझ और बहुवचन में तुम्ह आदेश होते हैं, पर यष्टी के एक वचन में ते और बहुवचन में तुम्ह आदेश होते हैं, आदेशों के आगे प्रत्ययों का योग किया जाता है शेष कार्य पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	तू	तुम
२ । ४	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
३	तूने, तुझसे	तुमने, तुमसे
५	तुझ से	तुम से
६	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
७	तुझ में	तुम में

प्र० तृतीय पुरुष के रूप किस प्रकार से होते हैं ॥

उ० प्रथमा के एक वचन में वह बहु वचन में वे होते हैं, शेष विभक्तियों के एकवचन में उस बहुवचन में उन वा उन्हीं आदेश करके प्रत्यय जोड़ते हैं द्वितीया और चतुर्थी में कभी २ प्रत्ययों को ए वा एं आदेश पूर्ववत् करते हैं और बहुवचन में प्रकृति को उब आदेश करते हैं ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	वह	वे
२।४	उसको, उसे	उनको, उन्हें, उन्हीं
३	उसने, उस से	उनसे, उन्हींसे, उनूने, उन्हींने
५	उससे	उनसे, उन्हींसे
६	उसका, उसकी, उसके	उनका, उन्हींका, की-के
७	उनमें, पै- पर	उनमें, उन्हींमें, पै- पर

द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष वाचक सब नामों को आदर्श में आप आदेश करके विभक्तियाँ लगाते हैं और इस के रूप बहुवचन में होते हैं; जैसा १ आप २।४ आपको ३।५ अपने, से ६ आपका-की-के ७ आपमें-पै-पर ॥

आदर्शक आप शब्द के साथ लोग शब्द का प्रयोग यथार्थ बहुत्व बताने के लिये करते हैं; जैसा आप लोगों को यह बात उचित है, आप लोगों में हत्यादि ॥

कभी २ आप इस सर्व नाम का प्रयोग तीनों पुरुषों में किया जाता है; तब वह शब्द निज का वाचक होता है इसलिये उसे सामान्य सर्व नाम कहना उचित है, उसके रूप ऐसे होते हैं कि एक वचन और बहु वचन में १ आप २।४ आपको अपने-को ३।५ अपने से, आपसे ६ अपना-नी-ने ७ आप में, अपने में, वह अपने घर को चला; मैं अपने बाप से कहता था, तुम अपने भाई से कहना ॥ आपस यह परस्पर बोधक है इससे प्रायः षष्ठी और सप्तमी विभक्तियों के प्रत्यय होते हैं जैसा आपस का-की-के आपस में, जैसा तुम लोग आपस में को। भगड़ा करते हो ॥

१० पाठ

दर्शक सर्व नाम ॥

* प्र० दर्शक सर्वनाम किसे कहते हैं और उनसे विभक्ति कार्य कैसा होता है ?

उ० वह और यह दर्शक सर्व नाम कहलाते हैं, वह दूरकी वस्तु को बतलाता है और यह समीप की वस्तु को; वह के रूप तो लिख आये हैं, यह के रूप प्रथमा के एक वचन में यह बहु वचन में ये होता है, शेष विभक्तियों के एक वचन में इस बहु वचन में इन इन्हीं इन्ह आदेश विकल्प से कर के प्रत्यय जोड़ते हैं ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	यह	ये
२।४	इमको, इसे	इनको, इन्हींको, इन्हें
३।५	इमने, इससे	इनने, इन्हींसे, इनसे
६	इमका-की-के	इनका, इन्हीं-का-की-के
७	इममे-पै-पर	इनमें, इन्हींमें-पै-पर

११ पाठ

सम्बन्धी सर्व नाम ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम किसे कहते हैं ?

उ० जो या जौन इसे सम्बन्धी सर्व नाम कहते हैं, क्योंकि जहां इमका प्रयोग होवे वहां सो वा तौन इस दर्शक सर्व नाम का प्रयोग करना अवश्य पड़ता है, वैय्याकरण लोग जो सो और वह इनको वा इनसे बने हुए शब्दों को परस्पर नित्य सम्बन्धी कहते हैं; जैसा जो कर्म आयाथा सो अच्छा था, जिमने यह काम किया है उसे इनाम दो, जैसा करोगे वैसे फल पाओगे ॥

प्र० सम्बन्धी सर्व नाम के रूप कैसे होते हैं ?

उ० प्रथमा के एक वचन में और बहु वचन में जो ऐसाही रहता है शेष विभक्तियों के एक वचन में जिस बहु वचन में जिन वा जिन्ह वा जिन्हों आदेश पूर्णवत् होते हैं, और सो के रूप द्वितीयादि विभक्तियों के एक वचन में तिस बहु वचन में तिम वा तिन्ह वा तिन्हों आदेश होते हैं; आदेशों के आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं; शेष पूर्ववत् ॥

विभक्ति	एक वचन	बहु वचन
१	को, कौन	-को, कौन
२।४	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्होंको, जिन्हें
३	जिसने, से	जिनने, जिन्होंने, से
५	जिससे	जिनसे, जिन्हों से
६	जिसका-की-के	जिनका, जिन्होंका-की-के
७	जिसमें, पे-पर	जिन में, जिन्हों में-पे-पर

१	सा तौन	सा तौन
२।४	तिसको, तिसे	तिनको, तिन्होंको, तिन्हें
३।५	तिसने-से	तिनने-तिन्होंने-से
६	तिसका-की-के	तिनका- तिन्होंका-की-के
७	तिसमें-पे-पर	तिनमें-तिन्होंमें-पे-पर

१२ पाठ

प्रश्नार्थक सर्व नाम

प्र० प्रश्नार्थक सर्व नाम किसे कहते हैं और उन के रूप कैसे होते हैं ?
 उ० कौन और क्या ये प्रश्न के लिये आते हैं इस वास्ते प्रश्नार्थक सर्व नाम कहते हैं ॥ केवल कौन शब्द सामान्यतः मनुष्य को और क्या अप्राणि वाचक को लगाते हैं; पर नाम के साथ आवे तो दोनों प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक को लगाते हैं; जैसा किस तरह से; क्या दाना आउमो; जिसका घोड़ा ? मेरा; क्या है ? चीज़ ॥

कौन शब्द को द्वितीयविभक्तियों के एक वचन में किस बहुवचन में किन किन्ह वा किन्हों आदेश करके आगे प्रत्यय का योग होता है, शेष पूर्ववत् जानो ॥

विभक्ति	एकवचन	बहु वचन
१	कौन	कौन
२।४	किसको, किसे	किनको, किन्होंको, किन्हें

३।५	किसने, किससे	किनने, किन्होंने, से
६	किसका-की-के	किनका-किन्होंका-की-के,
०	किसमें-मे-पर	किनमें-किन्हेंमें-मे-पर

क्या इसके रूप दोनों वचन में एकमेही होते हैं द्वितीयादि विभक्तियों में काहे आदेश होकर आगे प्रत्यय जोड़े जाते हैं जैसा १ क्या २।४ काहे को ३।५ काहेसे-ने, ६ काहेका-की-के, काहे-में-मे-पर ॥

१३ पाठ

सामान्य सर्वनाम ॥

प्र० सामान्य सर्वनाम किसे कहते हैं और कैसा प्रयोग होता है ?

उ० कोई, कुछ, आप ये सामान्य सर्वनाम हैं; इनमेंसे केवल कोई इस का प्रयोग मनुष्य वाचक में होता; और कुछ का सामान्य पदार्थ मात्र में; पर नाम के पीछे विशेषण के सदृश आवें, तो प्राणि वाचक और अप्राणि वाचक में उनका प्रयोग किया जाता है; जैसा किसी को दो, किसी नगर में, कुछ पानी दे, कुछ लोग इत्यादि ॥

प्र० इनको विभक्ति प्रत्यय लगाने से कैसे रूप होते हैं ?

उ० आप के रूपतो पुरुष वाचकों में लिख आये हैं, बाकी दोके ऐसे होते हैं कि कोई द्वितीयादि विभक्तियों में किसी आदेश और कुछ का

किस आदेश होते हैं और दोनों वचनों में एक से रूप जानें; जैसा १ कोई २।४ किसी को ३।५ किसीने-से, ६ किसी का-की-के, ० किसी में-मे-पर ॥ १ कुछ २।४ किसे ३।५ किसने-से ६ किसे का-की-के ० किसे में-मे-पर ॥

प्र० और कोई शब्द सामान्य सर्वनाम होंगे तो कहिये ?

+ कोई ० कहते हैं कि कोई इस सामान्य सर्वनामके रूप द्वितीया आदि विभक्तियों के कुछ वचन में नहीं हैं पर ऐसे वाक्य ने देखो, हमारी पाठशाला की परीक्षा हुई तब किसी ने यात्री ने अच्छे २ जवाब दिये, यहाँ स्पष्ट है कि किसी २ अस्तित्व वतचाता है इनलिखे कुछ वचा है किसी रूप की विभक्ति, तबके आगे प्रत्ययों को जोड़ कर बहुवचन वतचाते हैं ॥

उन्हीं एक दूसरों के भी और सब इनसे विभक्ति प्रत्यय होते हैं; द्वितीयादि विभक्तियों के बहुवचन में सब शब्दों के आदेश विकल्प से करते हैं; जैसा सबने कहा, वा समने कहा- सभी का, दो +

कई सामान्य सर्वनाम हैं, कई को विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़े जाते; पर कई एक इस संयुक्त पद को विभक्ति कार्य होता है यदि इस पद का अर्थ बहुत्व बोधक है तो भी बहुवचन सामान्य रूप नहीं होता अर्थात् एक शब्द से प्रत्ययों का योग होता है; जैसा कई एक को मैंने देखा कई एकों को नहीं बोलते ॥

१४ पाठ

सर्व नामों के विषय में—म्फुट विचार ॥

प्र० नाम के साथ सर्वनामों को योजना किस प्रकार से होती है ?

उ० नाम के पीछे सर्वनाम विशेषण के रूप से आवे तो यह नियम है कि विभक्ति प्रत्यय नाम से जोड़ देते हैं सर्वनाम से नहीं, नाम प्रथमान्त होवे तो सर्वनाम भी प्रथमान्त रहता है, नाम अन्य विभक्ति में होवे तो सर्वनाम का सामान्य रूप पीछे आता है, नाम के वचनानुसार सर्वनाम का वचन रहता है; जैसा क्या, तुम होशियार मनुष्य ऐसे फसे, वह बात मैंने सुनी, कौन जानवर है, कोई सरकारी नौकर रहता है, मुझ गरीब को धन दो, उस लड़के का हाथ टूट गया, मुझ निबुद्धि को इतना यश मिला यही बहुत है इत्यादि ॥

प्र० बहुवचन में द्वितीयादि विभक्तियों के दो २ रूप जो लिखे हैं उनके अर्थ में कुछ भेद होवे तो कहिये ?

उ० आकारान्त सामान्य रूप से जो रूप बनते हैं वे सदा बहुत्व बतलाते हैं, इन्हीं को, उन्हीं को, इत्यादि ॥ अन्य रूप कभी २ आठराश

+ कई कहते हैं कि कई यह मन्त्रार्थक सर्वनाम है ॥ पर यह रूप पुत्र में नहीं आता ज आता है और इसके अर्थ कितने हैं ॥

बहु वचन में आते हैं हमको, हमें, तुमकी इत्थम्कि, उक्त सर्वनामों का परिमाण कोशुक में पृथक् २ लिखता हूँ ॥

पुरुषवाचक दर्शक सर्व	सम्बन्धी	प्रश्नार्थक	सामान्य	ये मुख्य हैं ॥
सर्व नाम	नाम	सर्व नाम	सर्व नाम	सर्व नाम
मे, तू, यह, यह, वह, सो, तौन	जो, जौन	कोन, क्या	कोई, कुछ, आप	
०	०	०	०	इनमें से वाचक अन्यस-
०	०	०	०	एक दूसरा नाम वाचक योग
०	०	०	०	दोनों और से भी सर्वनाम और
०	०	०	०	वाजे, बहुत विशेषण बनते हैं, जे-
०	०	०	०	मव, हर, प्र सा जो कुछ जो कोई, दू
०	०	०	०	तान, कई सारा कोई, हर एक ०
०	येसा, जैसा,	जैसा	कैसा	प्रकारार्थ बोधक, इस
०	तौमा			कितना ही उस, इत्यादि रूपों
०	इतना, इ-	जितना,	कितना	के सकेतना और
०	ता, उतना,	जित्ता,	कित्ता	ता अदि शब्द करने से
०	उत्ता, तित-			बनते हैं ॥ बेपरिमा-
०	ना, तित			ण बोधक कहाते हैं ॥

इनमें से प्रकारार्थ वा परिमाणार्थ वा दूसरा, फलाना, बाँझ, इनको स्त्रीलिङ्ग कानन हो तो अन्त्य वर्ण को ई आदेश करते हैं जैसा कैसा, कैसी इत्यादि और बहुधा सर्व १३ शब्द विशेषण भी होते हैं ॥

१५ पाठ

विशेषण विचर ॥

प्र० विशेषण किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द में न.म. का गुण वा धर्म साक्षात् जाय उसे विशेषण

कहते हैं; जैसा धर्म, नीला सनुष, दोसमर लडका इत्यादि, यहां धर्म, शील, नीला, होकर, विशेष्य है । विशेष्य को नाम के बहुवचन लिङ्ग वचन और विभक्ति में होता है ।

प्र० विशेष्य कितने प्रकार के हैं ?

उ० गुण वाचक और संख्या वाचक से विशेष्य के दो प्रकार हैं; जैसा आकाश, लाला, कमीना इत्यादि । ये गुण वाचक विशेष्य हैं; पदार्थ का संख्या रूप गुण किसके समझा जाय वह संख्या वाचक विशेष्य होता है; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥

प्र० विशेष्य किसे कहते हैं ?

उ० जिस नाम का गुण विशेष्य बोधित करे वह उस विशेष्य का विशेष्य होता है; जैसा काला घोड़ा, एक घोड़ा, यहां घोड़े का काला और एक विशेष्य है और विशेष्य बोधित विशेष्यत्व अर्थात् कालापन और एकत्व घोड़े में है, इसमें घोड़ा यह नाम विशेष्य है ॥ हिन्दी भाषा में विशेष्य के लिङ्ग वचनानुसार विशेष्य के लिङ्ग वचन होते हैं और विशेष्य विशेष्य के पहिले रहता है; जैसा काला घोड़ा, काली घोड़ियां ॥

गुण विशेष्य ॥

प्र० गुण विशेष्य किसे कहते हैं और उसके रूप लिङ्ग और वचन में कैसे होते हैं ?

उ० जिसमें केवल गुण आया जाय वह गुण विशेष्य है । उनमें आकारान्त विशेष्यों को छोड़ बाकी विशेष्यों के रूप विशेष्य के लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार नहीं बदलते हैं; जैसा सुन्दर मर्द, सुन्दर औरत, सुन्दर लडका, सुन्दर लडके इत्यादि ॥

प्र० आकारान्त विशेष्य की योजना कैसी होती है ?

उ० विशेष्य का रूप नामके लिङ्ग वचन और विभक्ति के अनुसार होता है अर्थात् विशेष्य पुलिङ्ग और प्रथमा के एक वचन में होवे तो, विशेष्य आकारान्त ही रहता है, विशेष्य पुलिङ्ग और प्रथमा के बहु वचन में हो या द्वितीयादि विभक्त्यन्त अथवा सशब्द ये गिरक होवे तो विशेष्य

के अर्थ 'का' को ई कादेश होता है विशेष्य स्त्रीलङ्कार होता है विशेष्य-
के अर्थ 'का' को ई कादेश होता है, जैसा 'कालीघोड़ी', 'कालीघोड़', 'कालीघोड़े'
को, 'कालीघोड़ों' पर, 'कालीघोड़ी', वा 'काली घोड़ियाँ', 'काली घोड़ों' आदि ॥

प्र० विशेषण विभक्ति का योग किस प्रकार से होता है ?

उ० जब विशेषण सद्गुण विशेष्य नाम वाचक के समर्थ अ.ता है
तब उसको नामके समान विभक्ति निङ्ग वचन लगता है, विशेष्य आकार
रान्त होवे तो आकारान्त नामवत् ईकारान्तादिकों को ईकारान्तादि नाम-
वत् विभक्ति कार्य होता है ॥

पुंलिङ्ग भली शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-की-के	भली-की-की
२।४	भलीका	भलीका	७	भलीमें-पै-पर	भलीमें-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलीने-से	८	हेभली	हेभली

स्त्रीलिङ्ग भली शब्द ॥

वि०	एकवचन	बहुवचन	वि०	एकवचन	बहुवचन
१	भली	भली	६	भलीका-की-के	भलियोंका-की-के
२।४	भलीका	भलियोंका	७	भलीमें-पै-पर	भलियों में-पै-पर
३।५	भलीने-से	भलियोंने-से	८	हेभली	हेभलियों

तद्गुण विशिष्ट अकारान्त सुन्दर शब्द ॥

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन	विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
१	सुन्दर	सुन्दर	६	सुन्दरका-की-के	सुन्दरोंका-की-के
२।४	सुन्दरका	सुन्दरोंका	७	सुन्दरमें-पै-पर	सुन्दरोंमें-पै-पर
३।५	सुन्दरने-से	सुन्दरोंने-से	८	हेसुन्दर	हेसुन्दरों

इस तरह और विशेषण जानें ॥

१६ पाठ

उपरोक्त वाचक और विशेषण का ल्यन और अधिक भाव ॥

प्र० सादृश्यार्थक प्रत्यय किन २ शब्दोंसे होते हैं ?

उ० यह प्रत्यय संज्ञक और विशेषण बोधक साह प्रत्यय का योग नाम, सर्वनाम, और विशेषण के साथ किया करते हैं। विशेषण के साथ वह प्रत्यय आवे तो कभी २ अर्थ न्यूनत्व बनाता है जैसा तेरी कुलिया सी कुलिया, मेरी सी आखें, छोटासा घर; इत्यादि। सांताद के आकारान्त विशेषण के समान लिङ्ग वचनावि कार्य होता है।

प्र० एक सदर्थ में दूसरे से वा सब सजातीय पदार्थों से गुणाधिक्य या गुण न्यूनत्व होवे तो किस प्रकार से वतुल्यना चाहिये ?

उ० यह गुणाधिक्य बताने के लिये विशेषण को कुछ कार्य नहीं होता, पर जिसके साथ तुलना की जावे उस नाम को पञ्चमी का प्रत्यय से जोड़ा जाता है, और सब सजातियों से तुलना होवे तो उस नाम के पीछे सब यह शब्द लगादिते हैं; यह नियम हिन्दी में साधारण है, पर कभीर संस्कृत की रीति के अनुसार विशेषण को तत् और तस्म प्रत्यय जोड़के पूर्वाक्त कार्य करते हैं; जैसा मेहिन लाल सुन्दर लाल से बुद्धिमान है, विद्या द्रव्य से अच्छी चीज है, हमारी घोड़ी तुमारी घोड़ी से चालाक है, हिमालय पर्वत सब पर्वतों से ऊँचा है, गणपति अपने सब साथियों से होशियार है, पुण्य-पुण्यतर-पुण्यतम-प्रिय-प्रियतर-प्रियतम इत्यादि ॥

१७ पाठ

संख्या विशेषण ॥

प्र० संख्या विशेषण किसे कहते हैं और उसके रूप कैसे होते हैं ?

उ० संख्या जिस से बोधित होय उसे संख्या वाचक कहते हैं; जैसा एक, दो, तीन इत्यादि ॥ इन शब्दों का प्रयोग विशेष्य के साथ किया जावे तो रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा एक मर्द को वा औरत को, दो तीन मर्दों में इत्यादि ॥ दो संख्या वाचक से विभक्ति का योगकिया जावे तो वैसेरूप होते हैं; जैसा १ दोनो २४ दोनोका ३ दोनो ५ दोनो से ६ दोनोका-की-के ७ दोनोमें-नौ-पर ८ हे दोनो-गलमेंसे कोई दो व्यक्तियां

लीजाय तो वहाँ केवल दो इस रूप को विभक्ति प्रत्यय जोड़ते हैं जैसा टैकिनि-से हो ॥ क्योंकि एक तीन चार इ० ॥ अक्षरान्त वा अकारान्त इकारान्त ईकारान्त संख्या वाचकों से विभक्तियों का योग करते हैं तब तत्तद्वर्जित नामों के सदृश रूप होते हैं और कई एक संख्या विशेषण समूह वाचक विशेषण हैं जेस गंडा, कोरी, सिकड़ी इत्यादि ॥ बहुत्व बताने में विशेष्य के पूर्वी संख्या वाचक से भी जोड़ते हैं, जैसा हजारे आदमी लाखों रुपये इत्यादि ॥

क्रम वाचक ॥

प्र० क्रमवाचक विशेषण किसे कहते हैं और इसके रूप भेद इति कहिये ?
उ० जो विशेषण क्रम बतावे उसे क्रम वाचक विशेषण कहते हैं, जैसा पहिला, दूसरा, हजारवां यहां सात से आगे संख्या वाचक को वां वां वे आश्रम करने से क्रम वाचक बन जाता है, और एक से छः तक पहिला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां, छठवां, छठा इत्यादि आदेश होते हैं, और इन से लिङ्ग वचन और विभक्ति का योग करना होता आकारान्त विशेषण के समान रूप होते हैं; जैसा दसवां लड़का, दसवें लड़के को-से-का-की दसवां लड़की, दसवीं लड़कियां, दसवीं लड़कीकी, दसवीं लड़कियोंको इत्यादि ॥

आवृत्ति वाचक ॥

प्र० आवृत्ति वाचक किसे कहते हैं ?
उ० संख्या वाचक से गुणा प्रत्यय लगाने से औः प्रकृति को ह्रस्व वान लोप वा ओकार आदि अदेश करने से आवृत्ति वाचक होते हैं, जैसा संख्या वाचक दो तीन चार पांच छः इत्यादि ॥
आवृत्ति वाचक दुगुना, त्रिगुना, चैगुना, पचगुना, षगुना इत्यादि ॥
संख्या वाचक को बार वा बेर प्रत्यय जोड़ने से भी आवृत्ति वाचक बनजाते हैं ॥ जैसा एक बार, दो बार वा बेर इ० ॥

संख्या वाचक ॥

प्र० संख्यांश वाचक किसे कहते हैं और वे कौन २ हैं ?

उ० संख्या का अंश अर्थात् भाग प्रदर्शक जो विशेषण उसे संख्यांश वाचक कहते हैं ॥

जैसा पच, चौथे, चौथाई, तिहाई, आधा, आध, पौन, पौने, सवा, डेढ़, अढ़ाई ॥ कोई संख्या उत्तर अङ्कसे एक चतुर्थींश कम होवे वा अधिक होवे तो पौने, पौन, सवा क्रमसे पीछे आते है जैसा पौने दो, सवा दो इत्यादि, और एक द्वितीयांश अधिक होवे तो एकसे डेढ़, दोसे अढ़ाई, तीन आदि से साढ़े तीन; साढ़ेचार इत्यादि होते हैं और जब सौ हजार लाख इत्या-
द्यन्त संख्या वाचक के साथ पौने, सवा, साढ़े आते हैं तब सौ हजार इत्यादि संख्या का भाग जानो; जैसा पौने दोसौ १०५ सवा दोसौ २२५ साढ़ेतीन सौ ३५० इत्यादि ॥

क्रियापद विचार १६

क्रियापद का लक्षण और उसके भेद ॥

प्र० क्रियापद किसे कहते है ?

उ० जिससे कृति वा स्थिति अर्थात् देह और मन के व्यापार का बोध हो उसे क्रिया पद कहते हैं जैसा लिखता है, बोलता है, शोचता है, खाचुका इत्यादि ॥

प्र० क्रियापद किस से बनता है ?

उ० क्रियापद धातुसे बनता है ॥

प्र० धातु किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया का मूल अर्थात् प्रत्ययादि कार्य रहित व्यापार बोधक जो शुद्ध रूप है उसे धातु कहते हैं, जैसा गा, सो, बैठ, कर इ० ॥ भाषा वाले इन धातुओं के आगे ना प्रत्यय लगाकर धातु बतलाते हैं, इसमें कुछ हानि नहीं ॥

प्र० धातु कितने प्रकार की हैं ?

उ० धातु दो प्रकार की है एक सकर्मक दूसरी अकर्मक ॥

प्र० सकर्मक और अकर्मक क्रियापदों का क्या लक्षण है ?

उ० जिस क्रिया के व्यापार से उत्पन्न फल कर्ता से अन्य पदार्थ में जावे वह क्रियापद और उसकी धातु सकर्मक कहाती है, जैसा वह लड़के को पढ़ाता है, और जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ताही में रहे उस क्रियापद को और उसकी धातु को अकर्मक कहते है, जैसा वह सोता है॥

उदाहरण ॥

सकर्मक क्रियापद

वह घरको बनाता है

मोहन पोर्यालिखता है

बालक रोटी खाता है

अकर्मक क्रियापद

बालमुकुन्दबैठा है

कुत्ता भोंकता है

यज्ञदत्त पढ़ता है

क्रियापद सकर्मक है वा अकर्मक है इसका ज्ञान
जाने की और भी रीति है ॥

१ जिस क्रियापद से क्या और किसको ऐसा प्रश्न करके उत्तर मिल सके तो वह क्रियापद सकर्मक जानो, जैसा वह खाता है और खिलाता है इस वाक्य में क्या खाता है और किसको खिलाता है ऐसा प्रश्न करने से रोटी और कुत्तेको इत्यादि ये उत्तर मिलते हैं इसलिये खाता है और खिलाता है ये क्रियापद सकर्मक है जिस धातुका प्रयोग सामान्य भूतकाल में किया जावे तो कर्ताको तृतीया विभक्ति का प्रत्यय नै लगता है वह धातु सकर्मक जानो जैसा गोविन्दने बैल छोड़ा, रामने रावण को मारा इत्यादि लाना, भूलना, बोलना, समझाना, बकना, ये कहीं २ अपवाद हैं, और जिस क्रियापद से उत्तर न मिले उसे अकर्मक जानो, जैसा सोता है, बैठा है इत्यादि ॥

धातुओं के भेद ॥

प्र० धातुओं के और कौन २ भेद है ?

उ० सिद्ध धातु, साधित धातु, और अनुकरण धातु ये तीन भेद है; सिद्ध धातुओं का सहाय धातु यह एक भेद है ॥

प्र० सिद्ध धातु किसे कहते हैं ?

उ० जो किसी से न बना होवे वह सिद्ध धातु है; जैसा सो, बैठ, खा, पो इत्यादि ॥ एक धातु के आगे दूसरा धातु आकर मूल धातु का अर्थकाल इत्यादि बतलाता है उसे सहाय धातु कहते हैं; जैसा सो गया, पकाता रहता है, करता होगा, पका करता है इत्यादि ॥

प्र० साधित धातु किसे कहते हैं ?

उ० सिद्ध धातु के प्रत्ययादि कार्य करने से जो नया धातु बनता है वह साधित धातु है; जैसा स्नाना, समझाना, खिलावना इ० ॥ इन के दो भेद हैं प्रयोजक, और नाम धातु ॥

प्र० प्रयोजक क्रिया पद किसे कहते हैं ?

उ० जहाँ क्रिया के मुख्य कर्त्ता का कोई दूसरा प्रेरक होकर वाक्य में कर्त्ता होता है वहाँ वह क्रियापद प्रयोजक जानो ॥ प्रयोजक क्रियापद का यह धर्म है कि मूल धातु अकर्मक होवे, तो सकर्मक हो जाता है अर्थात् अकर्मक क्रिया पद का कर्त्ता प्रयोजक क्रियापद का कर्म होता है, और मूल धातु सकर्मक होय तो और एक कर्म बढजाता है, पर यह कर्म हिन्दी में करण या अपादान रूप से आता है, जैसा अन्न पकाता है, और क्रियापद प्रयोजक करने से, वह मनुष्य अन्न पकाता है यहाँ मनुष्य कर्त्ता और अन्न कर्म हुए हैं- वह घर बनाता है ॥ प्रयोजक क्रियापद करने से मैं उससे घर बनवाता हूँ ॥ प्रयोजक क्रियापद की धातु भी प्रयोजक जानो ॥

प्र० नाम धातु किसे कहते हैं ?

उ० नाम धातु उन धातुओं को कहते हैं, जो कि नाम अथवा विशेषण से बनते हैं; जैसा चौड़ा, चौड़ाना; तरस, तरसाना; पानी, पनियाना; आधा, अधियाना; ॥

प्र० अनु करण धातु किसे कहते हैं ?

उ० कार्य शृद्धश उच्चारण जिस धातु का हो वह अनुकरण धातु कहलाता है जैसा घुरघुराता है इत्यादि ॥

१६ पाठ

क्रियापद के लिङ्ग वचन और पुरुष ॥

प्र० क्रियापद में कौन २ बातें अवश्य हैं ?

उ० लिङ्ग, वचन, पुरुष, अर्थ, काल, और प्रयोग अवश्य होते हैं, और इनका ज्ञान क्रियापद के रूप से होता है इन भेदों से क्रियापद के रूप प्रायः बदलते हैं ॥

प्र० क्रियापद के लिङ्ग, वचन, और पुरुष कितने हैं ?

उ० दो लिङ्ग पुंलिङ्ग और स्त्री लिङ्ग; दो वचन एक वचन और बहु वचन, तीन पुरुष प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष, तृतीय पुरुष ॥

पुंलिङ्ग

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
प्रथम पुरुष	मैं करता हूँ	हम करते हैं
द्वितीय पुरुष	तू करता है	तुम करते हो
तृतीय पुरुष	वह करता है	वे करते हैं

स्त्री लिङ्ग

प्र०-पु	मैं करती हूँ	हम करती हैं
द्वि-पु	तू करती है	तुम करती हो
तृ-पु	वह करती है	वे करती हैं

२० पाठ

अर्थ विचार ॥

प्र० क्रियापद का अर्थ समझाइये और उसके भेद बतलाइये ?

उ० कोई क्रिया अथवा व्यापार करने के विषय में बोलने वाले के मन में जो भाव होवे तद्भावे बोधक जो क्रिया पद का रूप उसे अर्थ कहते हैं और वे अर्थ पांच प्रकार के हैं स्वार्थ, आज्ञार्थ, विध्यार्थ, संशयार्थ और सङ्गतार्थ ॥

१ जब कोई बात है वा नहीं इतना बोध क्रियापद से होता है तब वह क्रियापद स्वार्थ में रहता है; जैसा वह करता है, उसने काम नहीं किया ॥

२ जब बोलने वाला आज्ञा वा उपदेश वा प्रार्थना करता है तो उस क्रिया पद को आज्ञार्थ में जानो; जैसा तू काम मत कर; अपने से हलके को कोई काम करने के लिये कहना आज्ञा है और अपने बड़े से कुछ करने के लिये कहना, प्रार्थना है पर कभी २ दोनों अर्थों में क्रियापद के रूप एकसेही आते हैं; जैसा अय राजा मेरा सड़क दूर कर, पानी ला, यहां पहिले में प्रार्थना और दूसरे में आज्ञा है ॥

३ आज्ञा का अर्थ गर्भित होकर धर्म, शक्यता, योग्यता, सम्भावना, आशंसा इत्यादि अर्थों का बोध क्रिया पदके रूप से होता है, तब विध्यर्थ में क्रिया पद है ऐसा जानो; जैसा वह काम करे, अर्थात् जो वह काम करे तो योग्य है; होमके सो कर ॥

४ जिस क्रिया पद से सन्देह का बोध होवे, उसे संशयार्थ कहते हैं, जैसा वह गया होगा ॥

५ एक क्रियाकी सिद्धि दूसरी क्रिया पद है तो वह क्रिया सङ्केतार्थ में जानो; जैसा अगर मैं आज तक पाठशाला में पढ़ता तो मेरी बढ़ती होजाती, इस अर्थ की हेतु हेतु मत भी कहते हैं, कभी २ यह अर्थ समझाने के लिये अगर तो यदि इत्यादि अव्ययों की ये जना करतेहैं; ॥

२१ पाठ

काल विचार ॥

प्र० काल किसे कहते हैं ?

उ० क्रिया जिस समय में हुई हो उसे काल कहते हैं, और उसका बोध क्रिया पद के रूप से होता है ॥

प्र० कालके कितने भेद है ?

उ० वर्तमान, भूत, भविष्य ये तीन भेद है ॥

प्र० वर्तमान काल किसे कहते है ?

उ० जो होरहा है उसे वर्तमान काल कहते हैं जैसा मैं पूजाकरताहूं ॥

प्र० भूतकाल किसे कहते हैं ?

उ० : वर्तमान काल से पूर्व होगया जो समय उसे भूतकाल कहते हैं
जैसा मन्दलाल ने पुस्तक पढ़ी, यह भूतकाल सामान्य भूत, अपूर्ण भूत,
भूतभूत, वर्तमान भूत के भेद से चार प्रकार का है १ जो क्रिया पूर्वकाल
में होगई हो और पूर्वकाल का निश्चित ज्ञान न पाया जाय उसे सामान्य
भूत कहते हैं, जैसा वह गया, २ भूतकाल में जिस क्रिया की पूर्णता न
हो जाय उसे अपूर्ण भूत कहते हैं, जैसा मैं करता था, ३ भूतकाल में
क्रिया का प्रारम्भ होकर पूरी होगई होवे तो उसे भूतभूत काल समझो ॥
कभी २ जो क्रिया दूसरी भूत क्रिया के पूर्व होगई हो उसका प्रयोग भूत
भूतकाल में होता है, जैसा आप के आने के पूर्व वह गया था ४ जो क्रिया
भूतकाल में प्रारम्भ होकर वर्तमान काल में समाप्त हुई है उसे वर्तमान
भूत कहते हैं, जैसा मैंने उसको मरा है, इसे आसन्न भूत भी कहते हैं ॥

प्र० भविष्यत्काल किसे कहते हैं ?

उ० भावी अर्थात् होने वाली क्रिया के समय को भविष्यत्काल कह-
ते हैं जैसा वह जावेगा इ० ॥

२२ पाठ

प्रयोग विचार ॥

प्र० प्रयोग किसे कहते हैं ?

उ० हिन्दी में क्रिया पद के लिङ्ग वचन और पुरुष कर्त्ता के अनु-
सार और कर्मा २ कर्म के अनुसार होते हैं, और कई एक स्थलों में दोनों
के भी अनुरोध से क्रियापद नहीं रहता है ॥ इस क्रियापद में कर्त्ता और
कर्म से ऐक्य या भिन्नत्व वाक्य की रचना से बोधित होता है, इस वाक्य
रचना के प्रकार को या इस तरह से क्रियापद के विकृत रूप को प्रयोग
कहते हैं ॥

प्र० प्रयोग कितने प्रकार के होते हैं ?

उ० कर्त्तारि प्रयोग, कर्मणि प्रयोग, भावे प्रयोग ये तीन प्रकार हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस रीति से जाने जाते हैं और इन को कुछ भेद हीं तो कहे ?

उ० जहाँ कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का रूप होता है वहाँ कर्त्तरि प्रयोग जानो ॥ कर्त्तरि प्रयोग के दो भेद हैं, एक सकर्मक कर्त्तरि और दूसरा अकर्मक कर्त्तरि ॥ जहाँ क्रियापद सकर्मक होवे, वहाँ सकर्मक कर्त्तरि प्रयोग होता है; और जहाँ क्रियापद अकर्मक होवे, वहाँ अकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो; जैसा लड़का जाता है, लड़के अते है, लड़कियां जाती हैं, मैं जाता हूँ-अकर्मक कर्त्तरि, मेहनताना खत लिखता है, शिव प्रसाद पानी पीता है- सकर्मक कर्त्तरि प्रयोग जानो ॥

जहाँ कर्म के अनुसार क्रियापद हैं वहाँ कर्मणि प्रयोग जानो, जैसा रामने सिंहमार, सिंहनामारी, मैंने खत भेजा, चिट्ठी लिखी, इत्यादि ॥

कर्त्ता और कर्म के अनुसार जहाँ क्रियापद का रूप नहीं होता केवल सामान्यतः पुल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन में रहता है अर्थात् जहाँ क्रिया का भावही कर्त्ता हो वहाँ भावे प्रयोग जानो; जैसा राम लाल ने सिंह को मारा, राम ने सिंहनी को मारा, इत्यादि प्रयोगों में क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं बदलता इस लिये ये भावे प्रयोग हैं ॥

प्र० ये प्रयोग किस काल और अर्थ में होते हैं ?

उ० ये प्रयोग, धातु वर्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बनते हैं ॥

सब अर्थ और काल में अकर्मक धातु और बीज, भूल, ला, वक, समझ इन सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग होता है, जैसा वह जावे, रामलाल घरको पहुँचा, वह बोला, मैं यह बात भूला, वह बासन लावेगी इत्यादि ॥

धातु और वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जो रूप बनने हैं उनमें सकर्मक धातुओं से कर्त्तरि प्रयोग बनता है; जैसा वह लड़का अपनी माँ को बहुत कष्ट देता है, नर्मदा प्रसाद अच्छा बोलता था इ० ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उनमें बीज धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं से कर्मणि और भावे

प्रयोग होते हैं, पर इतना ध्यान में रखना चाहिये कि कर्मणि प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त, और कर्म के अनुसार क्रियापद रहते हैं; और भवे प्रयोग में कर्त्ता तृतीयान्त, कर्म द्वितीयान्त; और क्रियापद पुल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन होते हैं; जैसा मैंने त्रिष्टी लिखी, कृष्ण ने शेर मारः; उसने बहुत से देश देखे हैं, कर्मणि प्रयोग ॥ कृष्ण ने शेर को मारा, मैंने आप के यहां सेवक को भेजा था- भावे प्रयोग ॥

२३ पाठ

क्रिया पद बनाने की रीति ॥

प्र० धातु से क्रियापद किसरीति से बनते हैं ?

उ० हिन्दी भाषा में क्रियापद बहुधा एकही रीति से बन जाते हैं इस विषय में तीन नियम हैं ॥

१ धातु का शुद्ध रूप अर्थात् धातु साधित भाव वाचक नाम का ना गिरा कर जो शेष रहता है वह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन का रूप होता है जैसा बोलना से बोले यह आज्ञार्थ द्वितीय पुरुष एकवचन का रूप होता है ॥

२ धातु को ता प्रत्यय लगाने से वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण होता है जैसा बोलता ॥

३ धातु के अन्त वर्णको आ मिलाने से भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण होता है; जैसा बोला ॥

धातु के अन्त में आ ई ऊ ए ओ हेवें तो पूर्वोक्त आकार आदिकों के पीछे य आगम करके ईकार और एकार को ह्रस्व कर देते हैं; जैसा ला लाया, पी पिया, कु कुआ, दे दिया, रो रोया, परंतु कई धातुओं के रूप और रीति से होते हैं, जैसा कर किया, जा गया, हो हुआ इत्यादि ॥

इन तीन रूपों से और इनसे हो इस सहाय धातु के वर्तमान और भूतकाल के रूप जो जोड़कर सब अर्थ और कालों के रूप बन जाते हैं ॥

यह स्मरण रखना चाहिये कि क्रियापद का रूप पुलिङ्ग एक वचन में आकारान्त होवे, तो अन्त्य आ को बहुवचन में ए स्त्रीलिङ्ग एकवचन में ई और बहु वचन में ईं आदेश होते हैं, यह प्रायः रीति है ॥ जब दो अथवा अधिक रूप स्त्रीलिङ्गी आते हैं तब रूप के अन्त्य ई पर अनुस्वार कर देते हैं; जैसा चारतें बैठती थीं ॥

सहाय धातु है ॥

वर्तमानकाल			भूतकाल	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्र-पु	मैं हूँ	हम हैं	मैं था	हम थे
द्वि-पु	तुम्हें	तुम हो	तू था	तुम थे
तृ-पु	वह है	वे हैं	वह था	वे थे
		स्त्री-	मैं थी	हम थीं इ० ॥

२४ पाठ

केवल धातु से बने हुए अर्थ और काल ॥

प्र० शुद्धधातु से कौन २ अर्थ और काल बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु से हेतुहेतुमद्विषयकाल, और आज्ञार्थ के रूप बन जाते हैं ॥

हेतुहेतुमद्विषयकाल ॥

धातु से वक्ष्यमाण प्रत्यय लगाने से हेतुहेतुमद्विषयकाल के रूप बन जाते हैं ॥ इसके रूपों में लिङ्ग भेद नहीं होता ॥ प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र-	अं	अं
द्वि-	ए	आ
तृ-	ए	ए

जब धातु अकारान्त है तब उसके अन्त्य अ के स्थान में ये प्रत्यय आदेश होते हैं; जैसा बोलूँ, बोले इ० ॥ धातु के अन्त में आकारादि स्वर

होवे तो ऊं और ओ प्रत्ययों को छोड़ बाकी के प्रत्ययों को पीछे व आगम विकल्प से होता है; जैसा खावे वा खाय ॥

और जब आगम नहीं होता तब ये प्रत्यय धातुओं के आगे छोड़े जाते हैं; कभी ए को य आदेश करते हैं; जैसा लावे, लाय, लाय, लाय ॥

धातु एकारान्त हो तो ऊं और ओ को छोड़ शेष प्रत्ययों के पीछे व आगम विकल्प से पूर्वोक्त नियम से होता है, पर जब आगम नहीं करते हैं तब धातुके एकारके स्थानमें उन प्रत्ययोंको आदेश करते हैं; जैसा दे धातु

एकवचन-बहुवचन एकवचन-बहुवचन

देऊं	देवें	दूं	दैं
देवे	देओ	दे	दे
देवे	देवें	दे	दैं

भविष्यकाल ॥

हेतु हेतु मद्भविष्यकाल बोलूंगी, देऊंगा, दूंगा ॥

आज्ञार्थ ॥

दे, बोल, खा, पी इत्यादि ॥

प्र० वर्तमानकालवाचक धातुसाधित विशेषण से कौन २ काल बनते हैं ?

उ० सङ्केतार्थभूत, वर्तमानकाल, और अपूर्ण भूत ॥

सङ्केतार्थभूत ॥

बोलता, बोलते, बोलती, बोलतीं ॥

वर्तमानकाल ॥

बोलता है, बोलते है इत्यादि ॥

अपूर्णभूत ॥

बोलता था, बोलती थी ॥

प्र० भूतकाल वाचक धातुसाधित विशेषणसे कौन २ काल बनते हैं ?

उ० सामान्य भूतकाल, वर्तमान भूतकाल, और भूत भूतकाल बनते हैं ॥

सामान्य भूत ॥

बोला, बोली, बोले इत्यादि ॥

वर्तमान भूत ॥

बोला है, बोले हैं इत्यादि ॥

भूत भूत ॥

बोलीया, बोले थे, बोलीथी इ० ॥

प्र० धातु से पूर्वोक्त रूपों के सिवाय और कीन ९ रूप बनते हैं ?

उ० आठर पूर्वक आज्ञार्थ और भविष्य काल का प्रयोग बनाना हो तो धातु को **इये** **इयो** वा **इयेगा** ये प्रत्यय लगा देते हैं; आकारान्त धातु हो तो अन्त्य **अ** के स्थान में इन प्रत्ययों को आदेश करते हैं; धातु के अन्त में **ई** वा **ए** हो तो उस धातु को **जिये** **जियो** **जियेगा** ये प्रत्यय लगाने हैं; और **ए** कारको **ई** में बदलते हैं, बाकी की धातुओं को **इये** इत्यादि प्रत्यय लगाने हैं; जैसा लाइये, पीजिये ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

शुद्ध धातु से **ना** प्रत्यय जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और उससे विभक्ति प्रत्यय आकारान्त पुंलिङ्ग नामवत् होते हैं; जैसा बोलना; बोलने का, की, के, बोलने में इत्यादि ॥

कृष्ट वाचक धातु साधित नाम ॥

बोलने वाला-बोलनेवाला इत्यादि ॥

धातु साधित विशेषण ॥

बोलता, बोलताहुआ; बोला, बोलाहुआ इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

जैसा यौन, बोलकर, बोलके, बोलकरके, बोलकरकर इत्यादि-**ता** प्रत्ययान्त वर्तमान कालवाचक धातुसाधित विशेषण के **ता** को **ते** आदेशकरके आगे **ही** अव्यय जोड़ने से तत्काल बोधक धातुसाधित अव्यय बन जाता है जैसा बोलतेही इत्यादि ॥

२५ पाठ

क्रियापद के रूप ।

प्र० पूर्व में क्रियापद बनाने के नियम आपने कहे उनके अनुसार बने हुये रूप कहिये ?

उ० क्रियापद के रूप समझ में सुलभ से आवें इसलिये तीन भागों में बभाकर लिखता हूँ ।

होना .. अकर्मक

हो .. शुद्धधातु

होता .. वर्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण

हुआ .. भूतकालवाचक धातुसाधित विशेषण ..

शुद्ध धातु से बने हुए काल ।

कर्त्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतुमद्विविधकाल—विध्यर्थ वर्तमानकाल

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्र- पु-	मैहोऊं-हो	हमहोवें-होयें-हो
द्वि-पु-	तूहोवे-होय-होय-हो	तुमहोवो-हो
तृ-पु-	वह होवे-होय-होय-हो	वे होवें-होयें-हो-होय

स्वार्थ भविष्य काल ॥

	मैहोऊंगा-हूंगा	हमहोवेंगे-होयेंगे-हो
	तूहोवेगा-होयगा-होगा	तुमहोओगे-होगे
	वहहोवेगा-होयगा-होगा	वेहोवेंगे-होयेंगे-हो
स्त्री-	मैहोऊंगी-हूंगी	हमहोवेंगी-होयेंगी-हो

आज्ञार्थ वर्तमान काल ॥

मैहोऊं-हो	हम होवें-होयें-हो
तू हो	तुम होओ-हो
वहहोवे-होय-हो	वे होवें-होयें-हो

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

सङ्केतार्थ भूतकाल—स्वार्थरीति भूतकाल ॥

पुंलिङ्ग

मैं होता	हम होते
तू होता	तुम होते
वह होता	वे होते
स्त्री-मैं होती	हम होतीं- इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं होता हूँ	हम होते हैं
तू होता है	तुम होते हो
वह होता है	वे होते हैं
स्त्री-मैं होती हूँ	हम होतीं हैं-इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूत काल ॥

मैं होता था	हम होते थे
तू होता था	तुम होते थे
वह होता था	वे होते थे
स्त्री-मैं होती थी	हम होती थीं इत्यादि ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुए काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैं हुआ	हम हुए
तू हुआ	तुम हुए
वह हुआ	वे हुए
स्त्री-मैं हुई	हम हुईं इत्यादि ॥

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैं हुआ हूँ	हम हुए हैं
-------------	------------

तू हुआ है
वह हुआ है
स्त्री-में हुई हूँ

तुम हुए हो
वे हुए हैं
हम हुई हैं-इ० ॥

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं हुआ था
तू हुआ था
वह हुआ था
स्त्री-में हुई थी

हम हुए थे
तुम हुए थे
वे हुए थे
हम हुई थीं-इ० ॥

आदर पूर्वक आशय ॥

हूजिये हूजियो हूजियेगा इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

होना..... भव वाचक होने वाला ॥ होने द्वारा..... कर्तृवाचक

धातु साधित विशेषण ॥

होता— होता हुआ—
स्त्री-होती-होती हुई- } वर्तमानकालवाचक (पु-हुआ-स्त्री-हुई-भूत काल
वाचक ॥

धातु साधित अव्यय ॥

हो - होकर - होके - होकरके-.... समुच्चयार्थक

होतेही तत्काल बोधक

बोल धातु का गण छोड़ सकर्मक धातुओं का यह धर्म है कि जिन कालों के रूप भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बनते हैं, उनमें सकर्मक क्रियापद के कर्ता से तृताया विभक्ति होता है, यह आगे लिखे हुये रूपों से समझ में आवेगा ॥

भारना सकर्मक ॥

मार..... शुद्ध धातु

मारता वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

मरा भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

केवल धातु से बने ऊये काल ॥

कर्त्तरि प्रयोग ॥

हेतु हेतु मद्बिध्य काल—विध्यर्थ वर्त्तमान काल ॥

पुरुष एक वचन	बहु वचन
प्र- मैं माहूँ	हम मारेँ
द्वि- तू मारे	तुम मारो
तृ- वह मारे	वे मारेँ

स्वार्थ भविष्यत्काल ॥

मैं माहूँगा	हम मारेँगे
तू मारेगा	तुम मारेँगे
वह मारेगा	वे मारेँगे
स्त्री- मैं माहूँगी	हम मारेँगी

आज्ञार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं माहूँ	हम मारेँ
तू मार	तुम मारो
वह मारे	वे मारेँ

वर्त्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुये काल ॥

सङ्केतार्थ भूत वा स्वार्थ रीति भूत काल ॥

पुरुष एकवचन	पुरुष-बहुवचन
मैं मारता	हम मारते
तू मारता	तुम मारते
वह मारता	वे मारते
स्त्री- मैं मारती	हम मारतीं

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारता हूँ	हम मारते हैं
तू मारता है	तुम मारते हो

वह मारता है
स्त्री- मैं मारती हूँ
वे मारते हैं
हम मारतीं हैं ॥ ३० ॥
स्वार्थ अपर्ण भूतकाल ॥

मैं मारता था
तू मारता था
वह मारता था
स्त्री- मैं मारती थी
हम मारतीं थीं
भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल
कर्मणि वा भावे प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूत काल ॥

पुरुष	एकवचन		पुरुष-	बहुवचन
	मैंने	} मारा		हमने
	तूने			तुमने
	उसने			उन्होंने
				} मारा

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैंने	} मारा है	हमने	} मारा है
तूने		तुमने	
उसने		उन्होंने	

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने	} मारा था	हमने	} मारा था
तूने		तुमने	
उसने		उन्होंने	

आदर पूर्वक आज्ञार्थ ॥

मारिये मारियो मारियेगा इत्यादि ॥

धातु साधित नाम ॥

मारना . . भाववाचक . . मारनेवाला . . मारने द्वारा . . कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

पुं-मारता-मारता-हुआ } वर्तमानकालवा- { मारा, माराहुआ } भूतकाल
 स्त्री-मारती-मारती-हुई } { मारी, मारी हुई } वाचक

धातु साधित अव्यय ॥

मार ... मारकर ... मारके ... मारकरके ... समुच्चयार्थक
 मारतेही ... तत्काल बोधक

गिरना अकर्मक धातु ॥

गिर ... शुद्ध धातु

गिरता ... वर्तमान कालवाचक धातु साधित विशेषण

गिरा ... भूतकाल वाचक धातुसाधितविशेषण ...

हेतुहेतुमदभविष्यकाल
 भविष्यकाल ...
 आक्षार्थवर्तमानकाल ...
 सङ्केतार्थभूतकाल ...
 वर्तमानकाल ...
 अपूर्णभूतकाल ...

इस धातु के इन छः कालों के रूप मार
 धातु के रूपों के सदृश होते हैं ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल

कर्त्तरिप्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल	स्वार्थ वर्तमान भूतकाल
पुं-एकवचन	पुं-बहुवचन
मैं गिरा	हम गिरे
तू गिरा	तुम गिरे
वह गिरा	वे गिरे
स्त्री-मैं गिरी	हम गिरीं
	स्त्री- मैं गिरी हूं
	हम गिरीं हैं

स्वार्थभूत भूतकाल ॥

मैं गिरा था	हम गिरे थे	वह गिरा था	वे गिरे थे
तू गिरा था	तुम गिरे थे		

स्त्री-मै गिरिथी हमगिरिथीं शेषरूप मारधातु के सदृश होतेहैं ॥

खाना सकर्मक ॥

मुख्यभाग { खा ... शुद्धधातु
खाता ... वर्तमानकाल वाचक धातु साधितविशेषण
खाया ... भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातु से बने ऊये काल ॥

हेतुहेतुमद्भविष्यकाल—विध्यर्थ वर्तमान काल

पुरुष एकवचन

प्र- मैं खाऊँ

द्वि- तू खाए खावे खाए

तृ- वह खाए खावे खांय

पुरुष बहुवचन

हम खाएँ खावें

तुम खाओ खावो

वे खाएँ खावें खांय

स्वाये भविष्य काल ॥

मैं खाऊँगा

तू खाएगा खावेगा

वह खाएगा खावेगा

स्त्री- मैं खाऊँगी

हम खाएँगे खावेंगे

तुम खाओगे खावोगे

वे खाएँगे खावेंगे

हम खाएँगी ह० ॥

आज्ञार्थ वर्तमान ॥

मैं खाऊँ

तू खा

वह खाए खावे

हम खाएँ खावें

तुम खाओ खावो

वे खाएँ खावें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए काल ॥

सङ्केतार्थ भूतकाल स्वायेतीति भूतकाल ॥

पुरुष एक वचन

मैं खाता

तू खाता

वह खाता

स्त्री- मैं खाती

पुरुष बहु वचन

हम खाते

तुम खाते

वे खाते

हम खाती ह० ॥

स्वार्थ वर्तमान काल ॥

मैं खाता हूँ	हम खाते हैं
तू खाता है	तुम खाते हो
वह खाता है	वे खाते हैं
स्त्री- मैं खाती हूँ	हम खाती हैं इत्यादि ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं खाता था	हम खाते थे
तू खाता था	तुम खाते थे
वह खाता था	वे खाते थे
स्त्री- मैं खाती थी	हम खाती थीं इत्यादि ॥

कर्मणि या भावे प्रयोग ॥

भूतकाल वाचक धातु माधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

मैंने	} खाया	हमने	} खाया
तूने		तुमने	
उसने		उन्होंने	

स्वार्थ वर्तमान भूतकाल ॥

मैंने	} खाया है	हमने	} खाया है
तूने		तुमने	
उसने		उन्होंने	

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैंने	} खाया था	हमने	} खाया था
तूने		तुमने	
उसने		उन्होंने	

आदर पूर्वक आज्ञाये ॥

खाइये, खाइयो, खाइयेगा,

धातु साधित नाम ॥

खाना.....भाववाचक, खाने वाला-खानेद्वारा-कर्तृ वाचक

धातु साधित विशेषण ॥

खाता-खाता हुआ.....वर्तमान कालवाचक

खाया-खाया हुआ.....भूतकाल वाचक ..

धातु साधित अव्यय ॥

खा-खाकर-खाने-खा करके.....समुच्चयार्थक

खातेही तत्काल वाचक

सेना अकर्मक ॥

मुख्यभाग	}	से शुद्ध धातु
		सेता वर्तमान कालवाचकधातु साधित विशेषण
		सेया भूतकाल वाचक

हेतुहेतुमङ्गविषयकाल.....	}	इसधातुकेइनकालीनिकेरूप खा धातुके तुल्य
स्वार्थभविष्यकाल.....		
आज्ञार्थवर्तमानकाल.....		
सङ्केतार्थभूतकाल.....		
स्वार्थवर्तमानकाल.....		
स्वार्थअपूर्णभूत.....		

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों से बने हुये काल

कर्त्तरि प्रयोग ॥

स्वार्थ सामान्य भूतकाल ॥

पुरुष एकवचन

मे सोया

तू सोया

वह सोया

पुरुष बहुवचन

हम सोये

तुम सोये

वे सोये

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

पुरुष एक वचन
मैं सोया हूँ
तू सोया है
वह सोया है

पुरुष बहुवचन
हम सोये हैं
तुम सोये हो
वे सोये हैं

स्वार्थ भूत भूतकाल ॥

मैं सोया था
तू सोया था
वह सोया था

हम सोये थे
तुम सोये थे
वे सोये थे

शेष रूप खा धातु के सदृश होते हैं ॥

इसी रीति से हिन्दी भाषा में जो धातु हैं उनके रूप बनालो और छः धातुओं के भूतकाल वाचक विशेषण के रूप और प्रकार से बनते हैं वे नीचे लिखे हैं ।

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण ॥

धातु	एकवचन		बहुवचन		आदर पूर्वक आज्ञार्थ
	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	
जा	गया	गई	गये-गए	गई	
कर	क्रिया	की	किये	कीं	कीजिये—कींजियो
मर	मुआ	मुई	मुए	मुई	
हो	हुआ	हुई	हुए	हुई	
दे	दिया	दी	दिये	दीं	दीजिये—दीजियो
ले	लिया	ली	लिये	लीं	लीजिये—लीजियो

इनमें से होना जाना मरना अकर्मक हैं और करना देना लेना सकर्मक ॥ होना धातु के रूप लिखे हैं—जाना और मरना इनके रूप गिरना धातु के रूपवत् होते हैं—करना देना लेना इनके रूप सकर्मक धातु के रूपवत् होते हैं—जा धातु तो संस्कृत धातु या जाना से निकली और गया

यह रूप संस्कृत गम धातु=जाना से बना है; भूतकाल वाचक विशेषण जाया की योजना केवल संयुक्त क्रिया पद में होती है; जैसा जाया करता है इत्यादि ॥

संस्कृत धातु कृ करनासे हिन्दी धातु कर निकली है और हम धातु के भूतकाल वाचक विशेषण और आठर पूर्वक आद्यर्थ के रूप करा वा करिये होते हैं, पर ये रूप प्रायः प्रचार में नहीं आते, इनके स्थान में की धातु से बने हुए रूप क्रिया कीजिये क्रमसे आते हैं ॥

मरना संस्कृत धातु मृ=मरना से निकली है ॥ मुआ यह रूप संस्कृत से प्राकृत भाषा के द्वारा आया है, उसमें मृ के बदले ऊ होता है, मरा यह भूत काल वाचक धातु साहित्य विशेषण केवल संयुक्त क्रिया पद में आता है जैसा मरा चाहता है अथा यह रूप कभी २ हुआ के स्थान में आता है और संस्कृत भू धातु से निकला है ॥

२५ पाठ

कर्मवाच्य क्रियापद ॥

प्र० कर्मवाच्य क्रियापदका लक्षण और इसके बनाने की रीतिबतलाइये ?

उ० जो नाम तत्त्वतः अर्थ में क्रिया का कर्म है जिस पर क्रियाके

व्य.पर का फल होवे यह जब क्रिया पदका उद्देश्य हो तब क्रियापद का रूप कर्म वाच्य कहलाता है ॥

कर्मवाच्य क्रियापद हिन्दी में हर जगह नहीं लाते हैं ॥ जहां कर्ता ज्ञात न होय वा छिपा हो वहां येमे क्रिया पदकी योजना प्रायः करते हैं जैसा, वह मरा गया, देखा जायगा इ० ॥

हिन्दी भाषा में कर्मवाच्य क्रिया पद बनाने की यह रीति है, कि सकर्मक धातुके भूत काल वाचक विशेषण के आगे जा धातुके रूप सब काल और अर्थ में जोड़न; इसभूतकाल वाचक धातुसाहित्य विशेषणका रूप लिङ्ग वचनानुसार बदलता है; जैसा ॥

+ वचन में जिसके विषय काई बात नहीं जान उसे उद्देश्य करते हैं ॥

मारा जाना ॥

मारा जा आञ्जार्थ द्वितीय पुरुष एक वचन या शुद्ध धातु
मारा जाता वर्तमानकाल वाचक धातु साधित विशेषण
मारा गया भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण

धातुसे बने हुए काल ॥

हेतु हेतु मद्भावप्यकाल—विध्यर्थ वर्तमान काल ॥

पुं० एकवचन	पुं० बहुवचन
मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें-जायें
तू मारा जावे-जाय	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे-जाय	वे मारे जावें-जायें
स्त्री-मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें इत्यादि ॥

स्वार्थ भविष्यकाल ॥

मैं मारा जाऊंगा	हम मारे जावेंगे-जायेंगे
तू मारा जावेगा	तुम मारे जाओगे
वह मारा जावेगा	वे मारे जावेंगे-जायेंगे
स्त्री-मैं मारी जाऊंगी	हम मारी जावेंगी इ० ॥

आञ्जार्थ वर्तमान काल ॥

मैं मारा जाऊं	हम मारे जावें
तू मारा जा	तुम मारे जाओ
वह मारा जावे	वे मारे जावें
स्त्री-मैं मारी जाऊं	हम मारी जावें

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषणसे बने हुए रूप

सङ्केतार्थ भूत ॥

मैं }
तू } मारा जाता
वह }

हम }
तुम } मारे जाते
वे }

एकवचन
स्त्री- मैं मारी जाती

बहुवचन
हम मारी जातीं

स्वार्थ वर्त्तमान काल ॥

मैं मारा जाता हूँ
तू मारा जाता है
वह मारा जाता है
स्त्री- मैं मारी जाती हूँ

हम मारे जाते हैं
तुम मारे जाते हो
वे मारे जाते हैं
हम मारी जाती हैं इ० ॥

स्वार्थ अपूर्ण भूतकाल ॥

मैं }
तू } मारा जाता था
वह }
स्त्री- मैं मारी जाती थी

हम }
तुम } मारे जाते थे
वे }
हम मारी जाती थीं इ० ॥

भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषण से बने हुए रूप

स्वार्थ सामान्य भूत काल ॥

मैं }
तू } मारा गया
वह }
स्त्री- मैं मारी गई

हम }
तुम } मारे गये
वे }
हम मारी गई ॥

स्वार्थ वर्त्तमान भूतकाल ॥

मैं मारा गया हूँ
तू मारा गया है
वह मारा गया है
स्त्री- मैं मारी गई हूँ

हम मारे गये हैं
तुम मारे गये हो
वे मारे गये हैं
हम मारी गई हैं

स्वार्थ भूत काल ॥

मैं }
तू } मारा गया था
वह }
स्त्री- मैं मारी गई थी

हम }
तुम } मारे गये थे
वे }
हम मारी गई थीं

संशयार्थ भूतकाल ॥

मैं बोला होऊँ - होऊंगा	हम बोले होयें - होवेंगे
तू बोला होवे - होवेगा	तुम बोले होओ - होओगे
वह बोला होवे - होवेगा	वे बोले होयें - होवेंगे
स्त्री-मैं बोली होऊँ - होऊंगी	हम बोली होयें - होवेंगी

संकेतार्थ वर्तमान काल ॥

मैं } तू } वह }	बोलता होता	हम } तुम } वे }	बोलते होते
स्त्री-मैं	बोलती होती	हम	बोलती होतीं

संकेतार्थ भूत ॥

मैं } तू } वह }	बोला होता	हम } तुम } वे }	बोले होते
स्त्री-मैं	बोली होती	हम	बोली होतीं २० ॥

इस प्रकार से सब धातुओं के रूप बनाना ॥

२७ पाठ

प्रयोजक क्रिया पठ विचार ॥

प्र० यहाँ तक तो सिद्ध धातु के रूप बनाने की रीति आपने बतला दी वह मैं समझा, अब साधित क्रियापद किस प्रकार से बनते हैं यह मुझे समझाइये ?

उ० हिन्दी भाषा में साधित क्रियापद बहुतसे आते हैं और उनका लक्षण पूर्व में किया है अब इन के बनाने के नियम लिखता हूँ ॥

१ मुख्य नियम यह है कि मूलधातु को प्रयोजक करना होता धातु के अन्य वर्णों को आ मिलाने हैं, प्रयोजक वा सकर्मक धातु को

योग भी द्विकर्मक वा प्रयोजक करना होता मूलधातु के अन्त्यबर्ण के आगे वा जोड़ देते हैं; जैसा ॥

मूलधातु, सकर्मक वा	प्रयोजक	द्वितीय प्रयोजक
जल	जलाना	जलवाना
पढ़	पढ़ाना	पढ़वाना
बन	बनाना	बनवाना
बज	बजाना	बजवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
छिप	छिपाना	छिपवाना
मिल	मिलाना	मिलवाना
सुन	सुनाना	सुनवाना
पैर	पैराना	पैरवाना
दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
समझ	समझाना	समझवाना
सरज	सरजाना	सरजवाना

२ द्वयन्तर धातुओं के आद्य अक्षर में दीर्घ स्वर होवे तो उसको ह्रस्व कर आ वा वा जोड़ देते हैं, यकादर धातु का स्वरदीर्घ हो तो उसको भी ह्रस्व करके आगे ला वा लाया प्रत्यय जोड़ देते हैं, ह्रस्व करने से आ के आ ई वा ए को इ ऊ वा ओ को उ आदेश क्रम से होते हैं; जैसा

मूल या सिद्धधातु,	प्रयोजकधातु,	द्वितीयप्रयोजक धातु,
जाग	जगाना	जगवाना
भिग	भिगाना	भिगवाना
भूल	भुलाना	भुलवाना
लिट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
दे	दिलाना	दिलवाना

धा

धुलाना

धुलवाना

३ कई एक अकर्मक धातुओं के आद्य अक्षर में ह्रस्व स्वर होवे तो उसको दीर्घ करदेते हैं, पर यह नियम प्रयोजक से प्रयोजक करना हो तो वे काम है, प्रथम नियम से वा माच जोड़ा जाता है; जैसा ॥

कटना

काटना

कटवाना

पलना

पालना

पलवाना

बंधना

धांधना

बंधवाना

खुलना

खोलना

खुलवाना

मरना

मारना

मरवाना

४ कई एक धातुओं के आद्य स्वरको गुण आदेशकर उनमें, ट, क, ङ, होवें तो उनके स्थान में, ड, च, छ, आदेश क्रम से होते हैं, द्वितीय प्रयोजक तो प्रथम नियम से होता है; जैसा ॥

बिकना

बेचना

बिकवाना

बिचवाना

तूटना

तोड़ना

तुड़ाना

तुड़वाना

फटना

फाड़ना

फड़ाना

फड़वाना

छूटना

छोड़ना

छुड़ाना

छुड़वाना

फूटना

फोड़ना

फुड़ाना

फुड़वाना

रहना

रखना

रखाना

रखवाना

५ कई एक धातुओं के प्रयोजक के दो दो रूप होते हैं; जैसा
सीखना सिखाना सिखलाना सिखवाना
बैठना बिठाना बैठाना बिठवाना बैठलाना बैठालना बिठालना
देखना दिखाना दिखलाना दिखवाना
रखना रखाना रखवाना इत्यादि ॥

नाम धातु ॥

कई नाम वा विशेषण के अंत्यवर्ग का लोपकर इत्या प्रत्यय जोड़ देते हैं, और आद्यस्वर ह्रस्व होता है; जैसा पानी-पनियाना-आधा-अधियाना-
ऐसी धातुओं को नाम धातु कहते हैं ॥

२८ पाठ

संयुक्त क्रियापद विचार ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद किसे कहते हैं ?

उ० संयुक्त क्रियापद उस क्रियापद को कहते हैं जो अर्थ विशेष में प्रधान धातु और सहाय धातुसे बनता है; उसके पांच प्रकार हैं १ गौर-
वार्थक २ शक्तार्थ बोधक ३ समाप्ति वाचक ४ पौनः पुन्य बोधक ५ आशंसा-
र्थक इत्यादि ॥

१ गौरवार्थक क्रियापद उसे कहते हैं जो शुद्ध क्रियापद से अर्थ की विशेषता बताता है और वह प्रधान धातु के आगे **डाख दे जा** इत्यादि धातुओं के रूप लगाने से बनता है; जेमा मारडालता है, रख देता है, खा जाता हूं, यहाँ यह स्पष्ट है कि मारता है इससे मारडालता है इसमें अर्थ गौरव है; इन क्रियापदों का यह धर्म है कि अप्रधान धातुका अर्थ तत्त्वतः कुछ नहीं परन्तु उसके योगसे प्रधान धातुका अर्थ दृढ़ होता है; छोड़-देना, फेंकदेना, गिरादेना, काटडालना, तोड़डालना, होजाना, मरजाना ॥

२ शक्तार्थ बोधक वा सम्भावनार्थ क्रियापद काम कर सकता है ॥

३ समाप्ति वाचक बह कर चुका, कह चुकना, मार चुकना, लेचुकना, लाचुकना इत्यादि ॥

४ पौनः पुन्य बोधक क्रियापद मारा करता है, मारा करते हैं, आया करना, बोला करना, किया करना इत्यादि ॥

५ आशंसार्थक क्रियापद बोला चाहता है, किया चाहता है, पढ़ा चाहना, देखा चाहना; यह क्रियापद कभी २ आसन्न भावीक्रिया बतलाता है जेसा मरा चाहता है, गिरा चाहता है इत्यादि ॥

प्र० संयुक्त क्रियापद के मुख्यभेद और उनका अर्थ में समझा, उसके और कोई भेद हैं तो कहिये ?

उ० कभी २ नाम वा विशेषणके आगे धातु जोड़ने से संयुक्त क्रिया-
पदवत् रूप बन जाता है; जेसा मेरे अपराध को समाकर ॥ सातत्य

वाचक क्रियापद वह करता रहता है, वे करते रहते हैं, मारती जाती है, मारती जाती हैं, लिखता जाना, बोलता रहना, इत्यादि ॥

स्थितिवाचक क्रियापद, गाने आता है, रोते दौड़ना, हंसते चलना इ० ॥

धातु साधित भाववाचक नाम के समान्य रूप से दे और पा धातुके रूप जोड़ने से अनुमति और लग धातु के रूपोंकी योजना करनेसे प्रारम्भ समझा जाता है; जैसा अनुमति देना-वह मुझे जाने देता है, उसको वाम करने दो ॥

अनुमति पाना-वह लिखने पावे, जाने पाता है ॥

प्रारम्भ: वह काम करने लगा, पढ़नेलगी ॥

पर ऐसी जगह में कर दे काव्याकरण से पदच्छेद करने में ऐसा क्रिया जावे तोभी ठीक है ॥ कभी २ नाम और विशेषण से क्रियापद की योजना करने से नाम साधित क्रियापद होता है जैसा गीता खाना - गीता मारना, जमा करना वा होना - खड़ा करना इत्यादि ॥ गाड़ी को खड़ी कर ऐसे स्थान में खड़ी कर इतना क्रियापद जानो-कई क्रियापद पुनर्जात वाचक होते हैं जैसा बोलता चालता है, बोल चालकर, समझा बुझाकर इत्यादि ॥

२६ पाठ

अव्यय विचार ॥

प्र० अव्यय किसे कहते हैं ?

उ० जिस शब्द को विभक्त्यः दिक्कार्य नहीं होता है, उसे अव्यय कहते हैं; इसका रूप सदा वैसाही बना रहता है अर्थात् कुछ भेद नहीं होता और इनका वाक्य रचना में बहुत प्रयोजन पड़ता है; जैसा तब, फिर, यहां इ० ॥

प्र० अव्ययों के भेद कौन २ हैं सो कहिये ?

उ० अव्ययों के चार भेद हैं, क्रिया, विशेषण, उभयान्वयी, शब्दयोगी, उद्गारवाची, अथवा विस्मयादि बोधक ॥

क्रिया विशेषण अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण अव्यय किसे कहते हैं और उसके कौ प्रकार हैं ?

उ० जिस शब्द से क्रिया के गुण वा प्रकार का बोध होवे, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसा धीरे चलता है, बहुत बकता है इत्यादि ॥

सामान्यतः जितने शब्द विशेषण हैं वा विशेषण से होवें वे सब क्रिया विशेषण होते हैं; हिन्दी भाषा में जो क्रिया विशेषण बारम्बार आते हैं वे पाँच सर्वनामों से बने हैं, उनका एक कोशक आगे दिया है यह, वह, कौन, जौन, तौन इन पाँच सर्वनामों से स्थल वाचक, कालवाचक, प्रकारार्थक, परिमाण वाचक, क्रिया विशेषण अव्यय, बनते हैं ॥

	यह	वह	कौन	जौन	तौन	
१	अब	०	कब	जब	तब	} कालवाचक
	०	०	कद	जद	तद	
२	यहां	वहां	कहां	जहां	तहां	} स्थलवाचक
३	इधर	उधर	किधर	जिधर	तिधर	
४	यों	वों	क्यों	ज्यों	त्यों	} प्रकारार्थ वा गुणवाचक
५	ऐसा	वैसा	जैसा	जैसा	तैसा	
६	इत्ना	उत्ता	किता	जित्ना	तित्ना	} परिमाणवाचक
७	इतना	उतना	कितना	जितना	तितना	

निश्चय वाचक अथवा दृढ़ता बोधक क्रिया विशेषण अभी, कभी, तभी, कधी, इत्यादि हैं ॥

इसी प्रकार से दूसरे वर्ग के क्रिया विशेषणों के अंत्य **आं** को **ई** आदेश करते हैं और चौथे वर्ग के क्रिया विशेषणों के अंत्य वर्णों के आगे **ही** मिला देते हैं; जैसा यहीं-कहीं-वोहीं-योंहीं इत्यादि ॥ इन अव्ययों के आगे **लो तक तक** इत्यादि प्रत्ययों का योग करने से मर्यादा बोधित होती है; जैसा अबलो-अबतक-अबतलक-जबतक-जबतलक इत्यादि ॥ इनमें से कभी २ द्विरुक्ति और कभी २ एक वा दो का योग करने से क्रिया

विशेषण बनजाते हैं जैसा कभी २ जहां तहां, जहां कहीं, जबकब, जब कभी इत्यादि ॥

कई एक क्रिया विशेषणों के साथ निषेधार्थक न की योजना करने से अनिश्चितता वा सर्व व्यापकता के अर्थका बोध होता है; जैसा बरस में मेरे हाथ में कभी न कभी आवेगा, कहीं न कहीं, जब तब इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण अव्ययों के और उदाहरण ॥

प्रकारार्थक—अकस्मात्-अचानक-अर्थात्-केवल-परस्पर-ठीक-तत्त्वतः विशेषतः शीघ्र-वृथा-निपट-यथार्थ-सच-अवश्य-निःसन्देह-साधारणरूपसे-निःसंशय इत्यादि ॥

स्थलवाचक—आम-पास-आगे-पीछे-निकट-नजदीक-पार-सबब-परे इ० ॥

काल वाचक—आज-कल-परसों-नरसों-हररोज-प्रतिदिन-सदा-बारम्बार-तुल्य-एकदा-फिर-इत्यादि ॥

प्र० कौन २ शब्द वा शब्द समुच्चय अर्थ में क्रिया विशेषण होते हैं और किस रूप से वाक्य में आते हैं ?

उ० कई गुण विशेषण और सर्वनामका प्रथमान्त रूप वा सामान्य रूप क्रिया विशेषण होता है जैसा वह सुन्दरलिखता है अच्छा बोलता है, सीधे चलो, धीरे बोलो, वह अपना काम कैसा करता है इत्यादि ॥

धातु को कर करके इत्यादि प्रत्यय जोड़नेसे जो रूप बनता है उसकी कभी २ क्रिया विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा उसने हंसकर कहा, यहां हंसकर क्रिया विशेषण है ॥ पंचम्यन्त नामका अर्थ कई जगह क्रिया विशेषणवत् होता है; जैसा जो मनुष्य नीति से चलता है वह सुख पावेगा, दिलसे काम करोगे तो प्रयत्न सफल होगा, किस तरह या किस तरह से काम करोगे इत्यादि ॥

क्रिया विशेषण के साथ कभी २ विभक्ति प्रत्ययों का योग करदेते हैं; जैसा यहां का रहने वाला, आजका काम, यहां से जाओ, कहां को जाते हो इत्यादि ॥ ऐसे स्थल में पष्ठि प्रत्ययान्त शब्दविशेषणवत् और शेष शब्द क्रिया विशेषणवत् मानना ॥

+ उभयान्वयी अव्यय विचार ॥

प्र० उभयान्वयी अव्यय का क्या लक्षण है और उसके कै प्रकार हैं ?

उ० जिस अव्यय का सम्बन्ध दो शब्दों के अथवा दो वाक्यों के अव्यय की तरफ होता है उसे उभयान्वयी अव्यय कहते हैं; जैसा और, पर, इत्यादि ॥ राम और कृष्ण आये, इस वाक्य में और शब्द से राम और कृष्ण इनका अव्यय आगमन क्रिया में है अर्थात् राम आया और कृष्ण भी आया ॥

जो उभयान्वयी अव्यय बारम्बार बोलने लिखने में आते हैं, उनका कुछ परिगणन ॥

समुच्चय वाचक और - भी

कारण वाचक क्योंकि

यत्नान्तर्ग बोधक . . पर-परन्तु- किन्तु - वा-या-अथवा- नहींतो- चाहें

संकेतार्थक यदि-जो-ते-तथापि- तोभी

स्वरूप बोधक कि

शब्द योगी अव्यय ॥

प्र० शब्दयोगी अव्यय किसे कहते हैं और उनकी योजना - किस रीति से होती है ?

उ० जिस अव्यय से स्थान और काल का बोध होता है और जिस की योजना नाम और सर्वनाम के साथ होनेमें उनका पृष्ठान्त सामान्य रूप प्रायः होता है, उसे शब्द योगी अव्यय कहते हैं ॥ हिन्दी भाषा में शब्द योगी अव्यय तो केवल रूपमा विभक्त्यन्त नाम हैं परन्तु विभक्ति प्रत्यय लुप्त हैं, इस लिये जब इन अव्ययों की योजना की जावे तब पूर्वनाम को और सर्वनाम पृष्ठी विभक्ति का को प्रत्यय लगाते हैं और उसके आगे अव्ययों को बोलते; पर बिना वा बिना यह शब्द योगी अव्यय बहुधा नाम के पूर्व आता है; जैसा, मर्दके आगे, लड़के के पास, उसके, समस्त, बिना स्याही के काम नहीं चलता है ॥

शब्द योगी अव्ययों की गणना ॥

आगे - अन्दर - भीतर - ऊपर - बाहर - बराबर - बदले - बदले-समीप - बीच - पास - पछे - तले - सामने - गिर्द - नज़दीक - नीचे-पार - बाद - बिन - बिना - साथ - लिये - मारे-समझ ॥

इनमें से कोई २ शब्दयोगी अव्यय सर्वनामों के साथ आवें तो उनका विभक्ति सामान्य रूप होता है, पगु का प्रत्यय नहीं जोड़ते है; जैसा जिसलिये, उसबिना; किसलिये इत्यादि ॥

सहित- समेत-मुझा इत्यादि शब्दयोगी अव्यय नाम के साथ आवे तो नाम से पगु विभक्ति नहीं होता; जैसा बाल गोपाल समेत कृष्ण जी आये, गोपा सहित इत्यादि ॥

शब्द योगी अव्यय नाम वा सर्वनाम के साथ न आवें तो वे क्रिया विशेषण अव्यय होते हैं ॥

केवल प्रयोगी विचार्यादि बोधक अव्यय ॥

प्र० केवल प्रयोगी अव्यय क्या बतलाता है ?

उ० जिन अव्ययों से कहने वाने का दुःख कर्ष धिक्कार धन्यता इत्यादि मन के भाव समझे जाते हैं, उन्हें केवलप्रयोगी अव्यय कहते हैं जैसा ॥

दुःख और धिक्कार बोधक—वापरे, हाय हाय, अरे रे, ऊं, हाहा, धिक्,
दूर दूर, चुप, छिः

हर्ष और धन्यता बोधक—जय जय, शाबाश, वाहवा, धन्य धन्य, वा जी वा, सम्मुखी काश बोधक—अय, ओ, अरे, हे, अवे ॥

साधित शब्द विचार ॥

३० पाठ

धातु साधित शब्द ॥

पूर्व में मूल प्रकृति का और साधित शब्दों को विवक्षित रूप बनाने के लिये जो विभक्ति प्रत्ययादि कार्य विशेष करना अवश्य है, उसका वर्णन

किया अब मूल सिद्ध शब्दों से जो साधित शब्द बनते हैं उनका व्युत्पत्ति प्रकार लिखता हूँ ॥

प्र० साधित शब्द किसे कहते हैं ?

उ० जो शब्द मूल शब्द से प्रत्ययादि लगाकर बनते हैं, उनको साधित शब्द कहते हैं ॥

प्र० साधित शब्दों के धितने भेद है ?

उ० दो; एक, धातु से बने हुए शब्द इनको संस्कृत में कृदन्त कहते हैं; दूसरा, धातु से अन्य जो शब्द उनसे बने हुए शब्द इनको संस्कृत में तद्धित कहते हैं ॥

प्र० धातु साधित शब्दों के कौन से प्रकार हैं, और वे शब्द किस रीति से बनते हैं यह मुझे समझाये ?

उ० धातु साधित शब्द तीन प्रकारके हैं नाम, विशेषण, और अव्यय, ये धातु के आगे प्रत्ययों की योजना करने से बनजाते हैं ॥

धातु साधित नाम ॥

धातुके आगे कौन ० प्रत्यय जोड़ने से धातु साधित नाम बनते हैं ?

उ० ना—धातु के आगे यह प्रत्यय लगाने से और कभी २ केवल धातु का शुद्धरूप भाव वाचक नाम होता है; जैसा सोना, करना, बोलना, चाह, बोल इ० ॥

वाला, हारा—भाववाचक नाम के अंत्य ना के ने में बदल कर आगे इन प्रत्ययों को जोड़ने से कर्तृवाचक होता है; जैसा बोलने वाला, बोलने हारा, करने वाला, करने वाला इत्यादि ॥

अरु, वैया—कई धातुओं के ये प्रत्यय मिलाकर कर्तृवाचक बनाते हैं; जैसा पाल, पालक; पूज, पूजक; जीत, जितवैया; जल, जलवैया इत्यादि ॥

कई धातुओं से भाववाचक आगे लिखे हुए प्रत्यय बहुल करके लगाने से होते हैं ॥

+ कहीं होना और कहीं न होना इसको भङ्गन कहते हैं ॥

धातु	प्रत्यय	साधित शब्द
कह	आ	कहा
बो	आई	बोआई
मिल	आप	मिलाप
जल	न	जलन
पी	आस	प्यास
भुना	वा	भुलावा
सजा	आवट	सजावट
घबरा	आहट	घबराहट

साधनार्थक नाम ॥

कतर—नी—कतरनी; भाड़—ऊ—भाड़ू; बेल—अन—बेलन इ० ॥

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषण किसरीति से बनता है ?

उ० वर्तमान और भूतकाल वाचक धातु साधित विशेषणों का वर्णन क्रियापद प्रकरण में किया है; उन धातु साधित विशेषणों की वाक्य में योजना करना होवे, तो उनके आगे ही धातु के भूतकाल वाचक विशेषण के रूपों का योग लिङ्ग वचनानुसार करते हैं ॥

पुंलिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

एकवचन बहुवचन
बोलताहुआ बोलतेहुए
बोलाहुआ बोलेहुए

एकवचन बहुवचन
बोलतीहुई बोलतीहुई
बोलीहुई बोलीहुई

सकर्मक धातु से बनाहुआ वर्तमान काल वाचक विशेषण कर्तृवाचक होता है; और भूतकाल वाचक विशेषण कर्म वाचक होता है, जैसा करता हुआ मनुष्य, किया हुआ काम इ० ॥

अकर्मक धातु से बनेहुए, वर्तमान काल वाचक और भूतकाल वाचक विशेषण सदा कर्तृवाचक होते हैं; जैसा जाता हुआ आदमी, गया हुआ आदमी इत्यादि ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्यय किसरीति से बनते हैं ?

उ० शुद्धधातु वा उस से कर के करके करकर इत्यादि प्रत्यय जोड़ने से भूतकाल वाचक अव्यय होता है जैसा बोल बोलकर, बोलकर के, बोल के इत्यादि ॥

३१ पाठ

धात्वन्व्य शब्द साधित—साधित नाम ॥

प्र० धातुओं से अन्य जो शब्द उन से और शब्द कैसे बनते हैं यह बतलाइये ?

उ० वान-मान-ई-नाम को ये प्रत्यय मिलाकर स्वामि वाचक शब्द होता है अर्थात् नाम बोधित वस्तु उस प्राणी के पास है; ई प्रत्यय अंत्य स्वरको आदेश होता है; जैसा धनवान, बुद्धिमान, पापी इत्यादि ॥

वाला—नाम को यह प्रत्यय जोड़ने से कर्तृ वाचक वा स्वामि वाचक होता है, आकारान्त पुल्लिङ्ग नाम के अंत्य आ को ए आदेश कर प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसा छोड़े वाला, बेलयाला, धनवाला इ० ॥

पूर्वाक्त अर्थमें कई एक नामों से और भी प्रत्यय बहुल करके होते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम	नाम	प्रत्यय	सिद्धनाम
राह	वर	राहवर	नाल	बन्द	नालबन्द
मशाल	ची	मशालची	जमीन	दार	जमींदार
लड़का	पन	लड़कपन			
नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द	नाम	प्रत्यय	सिद्धशब्द
लोहा	आर	लोहार	उमेद	वार	उमेदवार
पानी	हारी	पनहारी			
घड़ि	याल	घड़ियाल	इसरीतिसे और भी जानो ॥		

भाव वाचक ॥

विशेषणों से भाव वाचक, करना होता ये प्रत्यय लगाने से होते हैं ॥

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक	विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक
गरम	ई	गरमी	कम	ती	कमती
बूढ़ा	पा	बुढ़ापा	भला	पन	भलापन
मीठा	स	मिठास	बुरा	ई	बुराई
कड़वा	हट	कड़वाहट	लघु	त्व, ता, लघुत्व, लघुता	

संस्कृतमें त्व ता होते हैं

चतुर आई चतुराई इत्यादि और भी जानो ॥

कहीं २ य प्रत्यय होता है वहां आद्य स्वर को वृद्धि और अन्त्य स्वरका लोप करके जो अन्त्य हल् रहा उसे य में जोड़ते हैं, जैसा उदार य औदार्य कृपण य कार्पण्य-मुन्दर-य-सौन्दर्य, इत्यादि ॥

न्यून वाचक ॥

आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त आ को ई आदेश करने से न्यून वाचक होता है, जैसा, रस्सा, रस्सी; लोटा, लोटी; डोला, डोली; छुरा, छुरी इ० ॥

शब्द	प्रत्यय	साधितशब्द
बेटी	इया	बिटिया
बाग	ईचा	बागीचा
ता।	अक	तुपक

साधित विशेषण ॥

नाम से विशेषण बनाने होवें तो आगे लिखे हुए प्रत्यय जोड़ने से हो जाते हैं; जैसा ॥

नाम	प्रत्यय	साधितविशेषण	नाम	प्रत्यय	साधित०
भूख	आ	भूखा	मोह-धर्म-अक-इक-मोहक-धर्मिक		
बल	ई	* बली	दुःख	इत	दुःखित
बन	इष्ट	बलिष्ट	रङ्ग	ईला	रङ्गीला

घर	ख	घरू	पच	गुना	पचगुना
सागर	वाला	सागरवाला	नाम	घर	नामघर
धन	वन्त	धनवन्त	दया	वान	दयावान
			कृपा-दया	लु-	कृपालु, दयालु

—

३२ पाठ

उपसर्ग विचार ॥

प्र० जिस भांति से धातु वा अन्य शब्द के आगे प्रत्ययों की योजना होने से साधित शब्द बनते हैं वैसे शब्द के पूर्व अक्षर वा अक्षर समुच्चय जोड़ने से साधित शब्द होते हैं वा नहीं ?

उ० ठीक प्रश्न किया धातु वा अन्य शब्द के पूर्व अर्थ रहित एक वर्ण वा वर्ण समुच्चय जोड़ा जाता है, अन्य शब्द के योग से वे सार्थक होते हैं, इनको संस्कृत में उपसर्ग कहते हैं, उपसर्ग के योग से भिन्न २ अर्थ होते हैं ॥

अ—निर्णैधार्थक, जैसा अपूर्व, असत्य, अमृत इ० ॥ शब्द के आदि में स्वर हो वे तो अन् होता है; जैसा अनादि, अनायास, अनिष्ट इ० ॥

अप—वियोगार्थक, अपराध-अपकीर्ति इ० ॥

अति—बहुत, दूर अतिदुष्ट, अति कृपा इ० ॥

अधि—आधिक, ऊपर, अधिपति, अधिकार इ० ॥

अनु—पीछे, समान, अनुयायी, अनुसार, अनुरूप इ० ॥

अन्त—भातर; अन्तर्गत इ० ॥

अभि—तरफ़; अभिप्राय, अभिलाष इ० ॥

अव—नीचे, वियोग, दूर; अवगुण, अवतार, अवज्ञा इ० ॥

अ—प्रति, उलटा, मर्याद, अवधि, आराम, आगमन, आदान, आमूल इ० ॥

उत्—ऊपर, उत्पन्न, उत्कर्ष इ० ॥

उप—निकट, सदृश; उपगुरु, उपवन इ० ॥

कु—खराब, कुत्सित; कुमार्ग, कुपुत्र इ० ॥

दुस्-दुर्—कठिन, खराब; दुराचार, दुर्घट, दुष्कर्म इ० ॥

नि—नीचे, निकृष्ट, निपात इ० ॥

निर्—बाहर, निषेध; निरपराध, निराकार इ० ॥

परा—पीछे, पराजय; पराभव इ० ॥

परि—आसपास; परिपूर्ण; परिभ्रमण इ० ॥

प्रति—विरुद्ध, उलट; प्रत्युत्तर, प्रतिस्पर्धी इ० ॥

स-सह—सकाम, सलज्ज इ० ॥

वि—वियोग; विधवा, विजातीय इ० ॥

सु-सं—अच्छा; सुपुत्र, सुगम, सुमार्ग, सुलभ, सम्मान, सङ्गति इ० ॥

३३ पाठ

सामासिक शब्द विचार ॥

प्र० सामासिक शब्द किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्द मिलकर जो एक शब्द बनता है, उसे सामासिक शब्द कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, मा बाप, गिल्लीदण्डा, सेलापगड़ी, इत्यादि ॥ यहाँ गिल्ली और दण्डा ये दो शब्द मिलकर गिल्लीदण्डा, यह शब्द हुआ है, इसी तरह से और भी जानो ॥

इन शब्दों का आपस में जो सम्बन्ध है, उसे समास कहते हैं, जैसा गिल्लीदण्डा यह द्वंद्व समास है; समास से जो बना हुआ शब्द है उसे सामासिक शब्द कहते हैं, और जिससे समासका अर्थ समझा जावे उसवाक्य को विग्रह कहते हैं; जैसा देवाज्ञा, देव की जो आज्ञा सो देवाज्ञा ॥

प्र० समास कितने प्रकार के है ?

उ० समास छः प्रकार के है; द्वंद्व तत्पुरुष कर्मधारय द्विगु बहुव्रीहि और अव्ययी भाव ॥

द्वंद्व समास ॥

प्र० द्वंद्व समास किसे कहते हैं ?

उ० दो अथवा अधिक शब्दों का योग होकर बीचके और शब्द का लोप होवे, उसे द्वंद्व जानो; इस समास में उत्तर शब्द जो लिङ्गवही

सामासिक शब्द का लिङ्ग बना रहता है, राम कृष्ण, मा बाप, इनको पुलिङ्ग जानो; यहां राम और कृष्ण मा और बाप, यह विग्रह है ॥

हिन्दी भाषा में द्वंद्व का और भी एक प्रकार है उसे समाहार द्वंद्व कहते हैं, दो शब्दों के योग से तदन्तर्गत का समावेश होता है, जैसा हाथ पांव टूटे, यहां हाथ और पांव के बीच में जो अवयव हैं उनका भी संग्रह होता है, इसी तरह में सेठसाहूकार, दालरोटी इत्यादि जानो ॥

तत्पुरुष समास ॥

प्र० तत्पुरुष समास किसे कहते हैं और उसके कै प्रकार हैं ?

उ० तत्पुरुष समास उमे कहते हैं कि जिसमें उत्तर पद प्रधान हो और उसकी तरफ पूर्व शब्द की विभक्ति का सम्बन्ध होकर विभक्ति का लोप हो इसमें द्वितीयादि विभक्तियों के योग से छः प्रकार होते हैं, जैसा

विभक्तिकेतत्पुरुष	विग्रहवाक्य	सिद्ध सामासिकशब्द	विभक्तिलोप
२ द्वितीयातत्पुरुष	द्विजकोताडन	द्विजताडन	द्वितीयाकालोप
३ तृ- त-	भक्ति से वश्य	भक्तिवश्य	तृ-लो-
४ च- त-	यज्ञकेलियेस्तम्भ	यज्ञस्तम्भ	च-लो-
५ पं- त-	पदसेच्युत	पदच्युत	पं- लो-
६ ष- त-	देवकाभक्त	देवभक्त	ष- लो-
७ स- त-	शास्त्रमेंनिपुण	शास्त्रनिपुण	स- लो-

जब प्रौढ भाषण में सर्वनाम का समास होता है, तब उसका रूप संस्कृत के नियम से होजाता है जैसा मेरा जन्म, मज्जन्म; तेरा भाग्य, त्वद्भाग्य; मेरा वस्त्र, मद्दस्त्र; तेरागुण, त्वद्गुण; यहां मैं तू के मत् त्वत् संस्कृत के अनुसार रूप होते हैं इसी तरह से और भी जानो ॥

हिन्दी भाषा में सर्वनामकेरूप संस्कृत के रूपवत् समासमें होते हैं ॥

हिन्दी में सर्वनाम के रूप	संस्कृतमें	सामासिक रूप
वह वे	तत्-चरित्र	तच्चरित्र, तद्गुन
मैं हम-	मत्-भाग्य	मद्भाग्य, अस्मद्भाग्य
	अस्मत्-	

तू तूम

त्वत्-गृहं

त्वद्गृहं, युष्मद्गृहं

युष्मत्

वह ये

एतत्-देशीय

एतद्देशीय

प्र० कर्म धारय समास का लक्षण बतलाइये ?

उ० जहां वक्ता की इच्छा से दोनों शब्दों का भाव तुल्य हो अथवा दोनों का उपमान उपमेय भाव सम्बन्ध होवे अगर विशेष्य विशेषण भाव होवे तो उस समास को कर्म धारय जानो, जैसा ॥

भक्तिमार्ग.....भक्तिवहीमार्गभक्तिरूपामार्ग

चन्द्रमुख चन्द्रवत्मुख उपमान वाची वत् का लोप हुआ
नीलकमल नीलयेसा जो कमल विशेष्य विशेषण भाव समास

द्विगु समास ॥

प्र० द्विगु समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां पूर्व पद संख्यावाची होकर, पूर्वोत्तरपदों से समास किया जाता है उसे द्विगु समास कहते हैं, और यह समास बहुधा समाहार अर्थ में आता है; जैसा अष्टाध्यायी, आठ अध्यायों का समूह उसे अष्टाध्यायी कहते हैं, इसी तरह से चतुर्युग, चैलोक्य इत्यादि जानो ॥

बहुब्रीहि समास ॥

प्र० बहुब्रीहि समास किसे कहते हैं ?

उ० जहां दो अथवा अधिक शब्दों के योग से अन्य पदार्थ का बोध होता है, उसे बहुब्रीहि जानो; जैसा चक्रपाणि चक्र है पाणि में जिसके अर्थात् विष्णु का बोध होता है; इसी तरह से चतुर्भुज (विष्णु) दशमुख, (रावण) जानो ॥ ये बहु ब्रीहि समास बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, और इनका लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है ॥ यह समास द्वितीयादि छः विभक्तियों में होता है, परंतु हिन्दी में बहुधा तृतीया, षष्ठी, सप्तमी इन विभक्तियों के उदाहरण आते हैं; जैसा जित क्रोध, जीता है क्रोध जिसने, दीर्घ बाहु, दीर्घ अर्थात् बड़े हैं बाहु जिसके,

बहु, धनिकानगरी, बहुत है धनिक जिस नगरी में, इत्यादि जानो ॥

अव्ययी भाव समास ॥

प्र० अव्ययी भाव समास किसे कहते हैं ?

उ० जिस में हर, प्रति इत्यादि अव्ययों के साथ दूसरे शब्द से समास होता है, उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं; जैसे हर घड़ी, प्रति दिन इत्यादि, और ये शब्द क्रिया विशेषण होते हैं ॥

१ पाठ

वाक्य का लक्षण रूप और पृथक्करण ॥

वाक्य विचार ॥

प्र० वाक्य विचार में किस का वर्णन किया जाता है ?

उ० शब्दों की योजना अर्थात् किस स्थान में कौन शब्द किस रीति से रखना चाहिये और उनका परस्पर सम्बन्ध इत्यादिकों का विचार किया जाता है ॥

प्र० वाक्य किसे कहते हैं ?

उ० शब्दों की सुसंबद्ध व्यवस्था जो बात पूरी करे उसे वाक्य कहते हैं; जैसे गोबिन्द सोता है, धीमर मछली मारता है ॥

प्र० वाक्य के कौन २ रूप होते हैं ?

उ० वाक्य के पांच प्रकार के रूप होते हैं; कथनात्मक, प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, विस्मयादि बोधक, इच्छा प्रबोधक; जैसे वह घर को गया, यहाँ ठसका उद्देश्य करके घरका जाना कथन है; तू क्या करता है, यह प्रश्नार्थक है; तूहाट को जा, यह आज्ञार्थक; वाः क्या समयाचित ठसर दिया, विस्मयादि बोधक; ईश्वर तुम्हें सुखी रखे, यह इच्छा प्रबोधक है ॥

प्र० वाक्य में कौन २ शब्द अवश्य हैं ?

+ कथनात्मक और प्रश्नार्थक वाक्यों की रचना कभी २ एकही ही होती है ॥ निर्णय रूप में प्रबोधक वाक्य से होता है जैसे तुम जाओगे वहाँ क्या नग सके तो मज्र होगा पर दूसरा कोई वाक्य जोड़ा जाय और क्या न नग सके तो कथनात्मक होगा ॥ जैसा तुम जानो तो केरा सन्देशभी केजाओ ॥

उ० वाक्य में उद्देश्य और विधेय अवश्य हैं, जिस के विषय कोई बात कही जाय उसे उद्देश्य कहते हैं; और उद्देश्य के विषय में जो बात कही जाय उसे विधेय कहते हैं; जैसा वह आया, इस वाक्य में वह उद्देश्य और आया विधेय है, इस से स्पष्ट है कि प्रत्येक वाक्य में कम से कम नाम वा नाम समान दूसरा शब्द और क्रियापद ये दो चाहिये, सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये, यह वाक्य की केवल मूल स्थिति समझाई; उद्देश्य और विधेय को बढ़ाना होता दोनों के साथ गुण बोधक शब्दों का योग करना चाहिये इस प्रकार से वाक्य के चार भाग हुए दो प्रधान और दो अप्रधान ॥

प्रधान		अप्रधान	
उद्देश्य	विधेय	उद्देश्य गुणवाचक	विधेयगुण वाचक
नाम, सर्वनाम विशेषण वा कर्मोपवाक्य	क्रियापद, वा हो धातु के साथ नाम वा विशेषण	विशेषण, वा विशेषणवात् शब्द वा वाक्य	क्रिया विशेषण, वा क्रिया विशेषणवात् शब्द वा वाक्य

उद्देश्य के घरेमें नाम, सर्वनाम इत्यादि जो लिखे हैं उनसे यह समझो कि नाम वा सर्वनाम वा विशेषण वा वाक्य उद्देश्य होता है ॥ इसी तरह से और भी जानो ॥

उदाहरण ॥

“चिड़िया उड़ती है यहाँ नाम उद्देश्य है-
 “वह, गया- सर्वनाम-
 “बहुत से,, बुलाये गये थे किन्तु थोड़ेसे,, पसन्द हुए- विशेषण-
 लोगोंको उचित है कि “क्रोध, ईर्ष्या, छल, लालच,
 घमण्ड, जुगला आदि बुराइयों को अपने चित्तमें,
 न रहने दें,, वाक्य

“विद्यावान्,” पुरुष सब जगह प्रतिष्ठा पाता है- यहां विशेषण उद्देश्य गुण वाचक है-

जिसके पास विद्या है, वह सब जगह प्रतिष्ठा-
पाता है- विशेषणवत् वाक्य ..

“अच्छे चाल चलनका,” मनुष्य सब जगह मान्य-
होता है- विशेषणवत् शब्द ..

“ध्यान पूर्वक,” काम करता है- यहां क्रियाविशेषण विधेय गुण वाचक है

वह “दिल लगाके,” वा “दिलसे,” काम करता है क्रिया विशेषणवत् शब्द ..
“जैसा चौकस मनुष्य काम करता है,” वैसा वह करता है क्रिया विशेषणवत् वाक्य ..

वह “नहीं देख सकता,” यहां क्रियापद विधेय है ..
वह “अंधा है- हो धातुके साथ विशेषण ..

ऐसे स्थल में है को केवल उद्देश्य और विधेय का संयोजक अर्थात् मिलाप करने वाला कहते हैं; पर उस वाग में एक वृत्त है, ऐसे स्थान में है मुख्य क्रियापद वा विधेय होता है, बहुधा है का समावेश विधेय में किया जाता है ॥

वाक्य का अर्थ पूरा होने के लिये जो शब्द अवश्य है, उसे विधेयार्थ +
पूरक कहते हैं; ॥

और जिस शब्द से वाक्य के अर्थ का विशेष ज्ञान होता है, उसको विधेयार्थ वर्धक कहते हैं, वाक्य का पृथक्करण इमर्गति से होता है; जैसा ॥

विद्यावान् मनुष्य सब जगह प्रतिष्ठा पाता है,

उद्देश्य	}	विधेय	{	विधेयार्थपूरक	{	विधेयार्थ वर्धक
विद्यावान् मनुष्य		पाता है		प्रतिष्ठा		सब जगह

+ स्वतंत्र क्रियापदके साथ कर्म को अवश्य कहना चाहिये ॥ यह कर्म वदा विधेयार्थपूरक होता है ॥

प्र० वाक्य में शब्दों की योजना किस तरह से होती है ?

उ० सामान्यतः वाक्य के अवयवों की व्यवस्था इस तरह से होती है, कि पहिले कर्त्ता वा उद्देश्य, दूसरे विधेय पुरुष वा कर्मादि कारक, और सब के पीछे क्रियापद आता है; विशेषण विशेष्य के पूर्व और शृङ्खल नाम वा सर्वनाम सम्बन्धी के पूर्व आते हैं ॥ जैसा मैंने शेर को तलवार से खाल के लिये भरका से निकलतेही जङ्गल में मारा, उसने अपने छोटे भाई को मारा यह नियम छोटे वाक्यों के लिये है ॥ कविता में और गद्य में जहां विरोध वा किसी शब्द को जोर से कहना हो तहां यह नियम काम में नहीं आता; जैसा ॥

शकुन्तला नाटक ॥

इनको (अर्थात् दुर्वासा को) छोड़ और किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि अपराधी को आपसे भस्म करदे ॥

रामायण में ॥

रङ्ग भूमि आये द्वी भाई । अस सुधि सब पुर बासिन पाई ॥
चले सकल गृह काजबिसारी । बालक युवा जरट नर नारी ॥

२ पाठ

कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप ॥

प्र० कर्त्ता और क्रियापद का मिलाप किस तरह से होता है ?

उ० वाक्य में नाम वा सर्वनाम वा विशेषण उद्देश्य होवे तो वह सदा प्रथमा विभक्ति में रहता है ॥ साधारणतः हिन्दी में क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष कर्त्ता के लिङ्ग वचन और पुरुष के सदृश होते हैं, पर इस नियम के कई अपवाद हैं उन को ध्यान में रखी ॥

(१) आदर्शार्थ में एक वचनान्त कर्त्ता के साथ बहुवचनान्त क्रियापद आता है ॥

(२) मनुष्य से अन्य जीव वा पदार्थ बोधक शब्द दो अथवा अधिक एक वचन में आवें तो क्रियापद एकवचन में विकल्प से आता है ॥

(३)- कर्ता भिन्न लिङ्गी होवे तो क्रियापद पुंलिङ्ग में आता है, वा-
-सक से निकट जो कर्ता होवे तदनुसार होता है ॥

(४) जब क्रियापद सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण
से बनाहोवे तब कर्ता की तृतीया विभक्तिका प्रत्यय लगाते हैं-कर्म प्रथ-
मान्त होवेतो तदनुसार क्रियापद का रूप बनता है, और कर्म द्वितीया
विभक्ति में हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष पुंलिङ्ग एक वचन में आता है ॥

उदाहरण ।

वह लिखता है, वह लिखती है, वे लिखते हैं, वे गाती हैं, हे सखी
हमारी सहेली शकुन्तला का गान्धर्व विवाह हुआ, और पति भी उसी के
समान मिला इससे हमारे मनको सुख हुआ परन्तु फिरभी चिन्ता न मिटी ॥

(१) इसकी कुछ चिन्ता मत करो, ऐसे गुणवान मनुष्य कधी नि-
र्लज्ज नहीं होते हैं, अब चिन्ता की बात यह है कि न जाने पिता कब
इस वृत्तान्त को सुनकर क्या कहेंगे ॥ यहां मनुष्य और पिता एकवचन
हैं तो भी क्रियापद बहुवचन में है ॥

शत्रु का पराजय करके राजा फिर नगर में आये और राज करने लगे ॥

(२) अभी बैल और घोड़ा पहुंचाहे यहां दो कर्ता है पर क्रियापद
एक वचन में है ॥ जन धन स्त्री और राज मेरा क्यों न सब गया आज ॥

(३) उसके मा बप भाईतीनों उसके विवाह की चिन्ता में थे, यहां
यद्यपि एक कर्ता स्त्री लिङ्ग है तथापि क्रियापद पुंलिङ्ग में है, उसकी गा-
ड़ी जंट घोड़े हाथी लादे आते है, लड़के लड़कियां वहां दौड़ती थीं इस
वाक्य में क्रियापद निकट कर्ता लड़कियों के अनुसार है ॥

(४) हम बन बांसयो ने ऐसे भूषण आगे कभी नहीं देखे थे, यह
वही मृगछीना है जिसको को तैने पुत्र सम पाला है ॥

वक्ष्यांश व वाक्य क्रियापदका कर्ता होवे तो क्रिया पद तृतीय पुरुष
पुंलिङ्ग एकवचन में आता है; जैसा इनका थोड़ा सीधा होना भी बहुत
है, लोगों को उचित है कि जो काम करना हो उसके गुण दोष पहिले
जोख लें ॥

क्रियापद के कर्ता भिन्न २ पुरुष वाचक होवें तो यह नियम है कि प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम कर्ता होवे तो क्रियापद प्रथम पुरुष में चाहिये, द्वितीय और तृतीय पुरुष वाचक कर्ता होवे तो क्रियापद द्वितीय पुरुष में चाहिये जैसा हम तुम उस काम को करेंगे, तुम और वे जानें ॥

३ पाठ

विशेष्य विशेषण का मिलाप ॥

प्र० विशेष्य विशेषण की योजना वाक्य में कैसी होती है ?

उ० विशेषण सदा प्रत्यक्ष वा अध्याहृत नाम वा सर्वनाम का गुण बनता है और वह प्रायः विशेष्यके पूर्व आता है, पूर्व में लिखा है कि आकारान्त विशेषणोंको छोड़ शेष विशेषणोंके रूप में विशेष्यके लिङ्ग वचना अनुसार कुछ भेद नहीं होता; आकारान्त विशेषण का लिङ्ग वचन विशेष्य के अनुसार होता है, उसका यह स्वभाव है कि विशेष्य पुंलिङ्ग बहु वचनान्त होवे वा एक वचन में द्वितीयादि विभक्त्यन्त वा शब्दयोगी अव्यय समेत हो, तो विशेषण के अन्त्य आ को ए आदेश करके सामान्य रूप करते हैं; और विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हो तो आ को ई आदेश होता है ॥ यह नियम जो शब्द विशेषण के समान अर्थात् सर्वनाम और धातु साधित विशेषण वाक्य में आते हैं उन्हें भी लगता है; जैसा सीधा मनुष्य, सीधे मनुष्य, सीधे मनुष्यों को, सीधी स्त्री या सीधी स्त्रियां, सीधी स्त्रियों को, गङ्गा के तारपर घर बनाया है, इस लड़के का पालने हारा कौन है, तुम्हारी घड़ी अच्छी है, उसका मन उदास है, पाँचवाँ लड़का, पाँचवें लड़के ने, गिराहुआ घर, गरी हुई हवेली ॥

सामान्य नियम ये हैं कि विशेषण विशेष्य के साथ आवे तो उस विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय आं हैं एं ओं वा विभक्ति प्रत्यय नहीं जोड़ते; जैसा अच्छी किताबें, अच्छे लड़कों को ॥ पर विशेष्य प्रत्यक्ष न होवे तो विशेषण से बहुवचन के प्रत्यय और विभक्ति प्रत्ययका योग

होता है, जैसा गरीबों का देना उचित है धनवान का सर्वत्र आटर होता है, साधु अपने समान सबों को मान कर उनपर दया करते हैं ॥

आकारान्त विशेषण के विशेष्यको का प्रत्यय का योग करके विशेषण क्रियापद के साथ जोड़ा जावे तो उसके रूप में कुछ भेद नहीं होता; जैसा उसके मुंह को काला करो, पर यह नियम सर्वत्र व्यापक नहीं है, क्योंकि नाम यदि स्त्रीलिङ्ग होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्ग बहुधा रखते हैं यद्यपि उसका योग क्रियापद के साथ क्रिया हो; जैसा लाठी को सीधी कर, रस्सी को लम्बी करो ॥

विशेषण भिन्न लिङ्गी दो वा अधिक नामों का गुण बतावे तो विशेषण पुल्लिङ्ग नाम के अनुसार होता है, पर अन्य विशेषण स्त्री लिङ्गी होकर विशेषण के निकट होवे तो विशेषण स्त्रीलिङ्ग में आता है जैसा उसके मा बाप जीते हैं, उसके लड़के लड़कियाँ अच्छी हैं ॥ परन्तु विशेष्य अप्राणि-वाचक नाम होवे तो विशेषण समीप विशेष्य के अनुसार रहता है; जैसा कपड़े बासन किताबें बहुत अच्छी हैं, कलकी हाट में अनाज तरकारी फल महंगे थे ॥

जब दो अथवा अधिक विशेषण नाम का गुण बतावें और उन में से एक दूसरे का विशेषण हो, तो भी उनमें से आकारान्त विशेषण का रूप विशेष्यके लिङ्ग वचनानुसार होता है; जैसा बड़ा लंबा वृक्ष, बड़ी लम्बी रस्सी ॥

४ पाठ

कारक विचार ॥

प्र० कारक किसे कहते हैं और वे कितने प्रकार के हैं ?

उ० जिसका क्रिया में अव्यय ही अर्थात् सम्बन्ध हो उसे कारक कहते हैं, उसके छः प्रकार हैं; जैसा कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ॥

प्रथमा विभक्ति का दर्शन ॥

प्र० प्रथमा विभक्ति कौन अर्थ बतलाती है ?

उ० कर्त्ता, कर्म, विधेय, अवधि, परिमाण इन पांच अर्थों में प्रथम होता है ॥ कर्त्ता—जो क्रिया के व्यापार को करे उसे कर्त्ता कहते हैं ॥ वह दो प्रकार का है; एक, प्रधान; दूसरा, अप्रधान; जिस कर्त्ताके लिये वचन और पुरुष के अनुसार क्रियापद का लिङ्गवचन और पुरुष होता है उसे प्रधान कर्त्ता कहते हैं जैसा गुरु विद्यार्थियों को पढ़ाता है, इसी प्रकार से लड़के रोटी खाते हैं; औरते नहाती हैं इत्यादि वाक्यों में जानें ॥ अप्रधान कर्त्ता का वर्णन, तृतीया के वर्णन में करेंगे ॥ एकनाम वा सर्वनाम दो अथवा अधिक क्रियापदों का कर्त्ता होवे तो वह केवल प्रथम क्रियापद के पूर्व आता है, और शेष क्रियापदों के साथ उसका अध्याहार करते हैं; जैसा मैं अपने मालिक के पास जाऊंगा और कहूंगा कि महाराज मुझ से यह अपराध हुआ है कृपा करके क्षमा कीजिये ॥

कर्म—कर्मवाचक शब्द से प्रथमा विभक्ति होती है; जैसा देवदत्त ने पोथी लिखी है, सुन्दर लालने किताब बेची, लक्ष्मीने कपड़े धोये इत्यादि; यहां लिखना बेचना धोना आदि व्यापारों का फल पोथी किताब कपड़ों पर है इसी से वे कर्म हैं और प्रथमा विभक्ति में हैं ॥

विधेय—नाम वा सर्वनाम को उद्दिश्य करके उसके विषय में किसी एक अर्थका विधान किया जावे, तो उस विधेयवाचक नाम से प्रथमा होती है; जैसा हीरा लाल ब्राह्मण है, वर्जारा मुसल्मान है, यहां हीरा लाल वा वर्जारा का उद्दिश्य करके ब्राह्मणत्व और मुसल्माना का विधान किया है इसलिये ब्राह्मण और मुसल्मान विधेयार्थ में प्रथमा हैं ॥

कई एक अकर्मक, कर्मवाच्य क्रियापद, होना, दिखाना, कहाना आदि अर्थवाचक के साथ प्रथमान्त नाम विधेयका अर्थ पूरा करने के लिये आता है; जैसा पत्थर, लोहा, खडिया, कोयला, नोन आदि सब धातु विशेष हैं; जो भाड़ होता है उसमें जड़सेही अनेक डालियां फूटती हैं, भाषण से वह बड़ा परिणत दीखता है प्रथम जीवधारी जो अपने आप हिल चल सकते हैं वे जीव जन्तु कहाते हैं ॥

अवधि—काल वा अन्तर की मर्यादा बतलाना हो तो तद्वाचक नाम

ये प्रथमा होती है; जैसा दो महीने वह यहां रहेगा, नागपुर सागर से एक सौ पैंतीस कोस दूर है ॥

परिमाण- किसी वस्तु के परिमाण का बोध करना हो, तो परिमाण वाचक से प्रथमा होती है, जैसा दो सेर सुपारी, पांच पैसेरी; गेहूं ॥

द्वितीयादि विभक्ति का वर्णन ॥

प्र० द्वितीया विभक्ति किससे होती है ?

उ० जो क्रिया का कर्म है उससे द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा गुरु लड़कों को पढ़ाता है, जब कर्म को निश्चित करना हो, तब द्वितीया का प्रत्यय को लगाते हैं; जैसा किताब को लावो ॥

अप्राणि वाचक नाम कर्म होवे तो प्रायः उन से द्वितीया के प्रत्यय का योग नहीं करते; जैसा खत लिखो, कई एक शब्द ऐसे हैं कि वे निश्चित होतीं भी उनको प्रत्यय लगाना चाहिये; व्यक्ति वाचक अर्थात् विशेष नाम, अधिकारि वाचक, और व्यापार कर्तृ वाचक इत्यादि शब्दों से को प्रत्यय का योग करना चाहिये जैसा विष्णु को भेजो, न्यायाधीश को बुलाओ इत्यादि ॥ जब वाक्य में कर्म और संप्रदान दोनों आवें तो कर्म प्रायः प्रथमा में रखते हैं और संप्रदान वाचक से चतुर्थी होती है, संप्रदानार्थक शब्द नाम वा सर्वनाम होवे और कर्म द्वितीयान्त होवे तो नाम के आगे को और सर्व नाम के आगे ए अथवा एं प्रत्यय लगते हैं; जैसा मर्दको कपड़े इनाम दो, उसने अपने भाई के हिस्से को उसकी बेटी को दिया, मैंने अपनी लड़की को उसे सौंप दिया ॥

गत्यर्थ क्रियापदों के साथ स्थलवाचक नाम से अधिकरणार्थ में द्वितीया होती है ॥ इसी तरह क्रिया के होने का समय जिस नाम से बोधित हो उससे भी द्वितीया होती है ॥ जैसा गङ्गा को गया, दिल्ली को पहुंचा, देश और काल वाचक नाम से द्वितीया के प्रत्यय का लोप करते हैं, परन्तु

+ दो महीने वहां रहेगा दो सेर सुपारी ऐसे वाक्यों में कर्म से एक और भर शब्दों का अर्थ निकाल करके कोई १ जोग महीने और सेर का को प्रत्यय लोप मानते हैं ॥

उस के पीछे विशेषण या विशेषण तुल्य शब्द होवे तो उसका सामान्य रूप होता है: जैसा उस दिन वह मेरे घर आया था, उस काल मछू जो बजता था सो तो मेघसा गाजता था ॥

तृतीया विभक्ति ॥

प्र० तृतीया विभक्ति से कौन २ अर्थ बोधित होते हैं ?

उ० तृतीया के मुख्य अर्थ पांच हैं; कर्त्ता, करण, हेतु, अङ्ग विकार, साहित्य ॥ कर्त्ता-तृतीया का प्रत्यय ने कर्त्ता से लगाते हैं, जब वाक्य में क्रियापद बोल धातुका गण छोड़ शेष सकर्मक धातु के भूतकाल वाचक विशेषण से बना होवे, ऐसे प्रयोग में कर्त्ता के अनुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन नहीं होता है, इसलिये उसे अप्रधान कर्त्ता कहते हैं; जैसा मैंने कुत्ता देखा ॥ तत्त्वतः बलिधातु का गण और अङ्ग भूतकाल को छोड़कर सकर्मक धातु के भूतकाल में जो प्रयोग होते हैं, वही कर्त्ता को तृतीया विभक्ति का प्रत्यय ने जोड़ते हैं, जब ऐसे वाक्य में कर्म प्रथमान्त होता है, तब उसके लिङ्ग वचनानुसार क्रियापद का लिङ्ग वचन होता है, वह कर्मणि प्रयोग जाने; जैसा हिरा लाल ने पोथी लिखी, उसने घोड़े भेजे ॥ और जब कर्म से को प्रत्यय का योग करते हैं, तब क्रियापद सामान्यतः पुलिङ्ग तृतीय पुरुष एत वचन में होता है और उसे भावे प्रयोग कहते हैं; जैसा उसने कुत्ते को देखा, पार्वती ने गीटी को खाया, सोभालाल ने बकरी को मारा, उस लड़के ने लूहे को पकड़ा इत्यादि ॥ अप्रधान कर्त्ता कहाँ आता है यह विद्यार्थियों का ध्यान में रखना चाहिये ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ अप्रधान कर्त्ता कभी नहीं आता ॥ केवल शुद्ध धातु से और वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण से जो काल और अर्थ बनते हैं उनके साथ नहीं आता है फिर वह धातु सकर्मक वा अकर्मक हो ॥ बोल भल ला इत्यादि धातुओं के साथ नहीं आता है; जैसा, वह बोला, वह सन्देश लाया; उर्दू व्याकरण में लिखा है कि लाना का अर्थ ले आना, यहां अंत्याद्ययव आ धातु अकर्मक है, इससे यह नियम

प्रथम में आता है कि जब संयुक्त क्रियापद का अन्त्यावयव अकर्मक होवे और सब क्रियमपद सकर्मक होवे, तो भी अप्रधान कर्ता की योजना नहीं करते हैं; जैसा वे फकीर खाना खागये हैं, मैं गत लिख चुका इत्यादि ॥ दो वाक्य और उभयान्वयी अव्यय से जोड़े गये हों, उनका कर्ता एकही होवे, और पहले वाक्य में क्रियापद अकर्मक होवे और दूसरे में क्रियापद सकर्मक होवे तो भी दूसरे वाक्य में अप्रधान कर्ता के कहने की कुछ अवश्यकता नहीं है, परन्तु वाक्य की रचना अप्रधान कर्ता के अनुसार होती है; जैसा वह भट फिर आई और कहा अर्थात् उसने कहा ॥

जिस वाक्यमें क्रियापद प्रयोजक वा कर्मवाच्य वा अकर्मक होवे, वहां कर्तृवाचक नाम से **से** प्रत्यय होता है; जैसा मैंने यह काम उससे करवाया, तुम्हसे रूखी रोटी बेंचकर खाई गई थी, वह मुझसे मारा गया था, यह अपराध उससे हुआ, मुझसे निपटना नहीं बनता है ॥

करण-क्रिया के होने के लिये जो साधन वा जिसके द्वारा क्रिया हो उसको क्रिया के अन्वय से करण कहते हैं; करण वाचक से तृतीया का प्रत्यय लगाते हैं; जैसा रिपाही ने तलवार से चीते को मारा, यहां मारने की क्रिया तलवार के द्वारा हुई इसलिये तलवार करण है और उससे तृतीया का प्रत्यय **से** हुआ; ऐसेही कलम से लिखा, हाथ से उठाया, पांवसे रगड़ा इत्यादि जानो ॥

हेतु-कोई क्रिया होनेके वा करने के लिये जो कारण हो उसे हेतु कहते हैं, तद्वाचक शब्दसे तृतीया का **से** प्रत्यय होता है; जैसा आपकी दवासे आराम हुआ, तुम्हारे आने से मेरा काम हुआ; गायन से संतोष होता है, यहां दवा आना गायन ये हेतु हैं, उनसे तृतीया हुई ॥

अङ्गविकार-जिस अङ्गावयव में विकार होवे उससे तृतीया होती है; जैसा आँखों से अंधा, पांव से लंगड़ा, कानसे बहरा इत्यादि ॥

साहित्य-क्रिया करने में कर्ता के साथ जो रहे उसे साहित्य बोलते

+ अङ्गावयव का अर्थ शरीर का भाग ॥

है । और तद्वाचक से तृतीया होती है; जैसा हजारों मल्ल एक आदमी से आया, हरभान एक कपड़े से गया, राजा पचास हजार फौज से चढ़ आया है इत्यादि ॥

मूल्यवाचक से भी तृतीया होती है; जैसा पांच रुपये से किलाब मोल ली इत्यादि ॥

कभी २ क्रिया करने का प्रकार वा रीति बताने के लिये नाम से तृतीया होती है, जैसा, उसको किसी ने नहीं कहा पर अपनेही दिलसे सीखने लगा, अन्तःकरण से काम करो, मेरे तरफ क्रोध से देखता है ॥

तृतीया के प्रत्यय का कभी २ लोप होता है; जैसा मैने उसके हाथ चिट्ठी भेजदी है, न आंखों देखा न कानों सुना, यहां हाथ से आंखों से कानों से जानों ॥ प्रछ कह और तदर्थक धातु के साथ नाम वा सर्व-नाम से को की जगह से आता है जैसा राजा से बिनती को, मैं उससे सच कहता था मैंने आपसे पूछा इत्यादि ॥

चतुर्थी का बर्णन ॥

प्र० संप्रदान किसको कहते हैं ?

उ० जिसको कुछ दिया जावे अथवा जिसके निमित्त कुछ किया होवे उसे संप्रदान कहते हैं और उससे चतुर्थी होती है; जैसा वह ब्राह्मण को गाय देता है, उसने गोपाल को पोथी दी, गुरुजी स्नानको गये हैं, पीनेको पानी लाओ, वह नाटक देखने को गया है ॥

हो धातु के साथ धातु साधित भाववाचक नाम आकर आवश्यकता बतावे, तो उसके पूर्व कर्तृवाचक शब्द से चतुर्थी होती है; जैसा हमें आज सभा को जाना है, इसको अभी पाठ सीखना है ॥

योग्यता आदि अर्थ बोधक विशेषण और उनके विरुद्ध शब्द वा नमस्कार वा कुशल आदि शब्दों के साथ नाम से चतुर्थी होती है; जैसा लड़कों को उचित है कि माता पिता का आदर करें; लोगोंको योग्य है कि सच्चे बोलना, उदारता, दया, पराये दोषका ठकना, सहना, विवेक, उपकार करना आदि अच्छी २ बातों को अङ्गीकार करें; बड़े आदमियों को

उचित नहीं है कि कभी झूठ बोलें; आपको नमस्कार; आपको कुशल हो ॥

पञ्चमी का वर्णन ॥

प्र० अपादान का क्या अर्थ है और यह कारक किस विभक्ति से जाना जाता है ?

उ० किसी को अवधि मानकर उससे वियोग वा विभाग वा न्यूनाधिक भावादि अर्थका बोध होवे, तो वह अपादान कहाता है और उससे पञ्चमी होती है जैसा गांवसे आया है, घोड़े से बिरपड़ा, गोबिन्द से राम प्रसाद बड़ा है, उस घोड़ेसे यह घोड़ा छोटा है, आगरे से कलकत्ता पूर्व है इत्यादि ॥

अकर्मक क्रियापद के साथ उत्पत्ति स्थान वाचक से पञ्चमी होती है; जैसा ब्रह्माके मुख से ब्राह्मण पैदा हुये, हिमालय पर्वत से गङ्गा निकली है ॥ कभी २ सप्रम्यन्त से पञ्चमी होती है; जैसा बाजार में से लाया, घोड़े पेसे गिरपड़ा इत्यादि ॥ वस्तुओं के समूह में से कुछ अंश अलग करना होता सप्रम्यन्त नाम से पञ्चमी होती है ॥ जैसा उनमें से चार बाकी रह गये, सन्दूक में पन्द्रह रुपये रखे है उनमें से पांच लो ॥

सप्तमी का वर्णन ॥

प्र० सप्तमी विभक्ति का अर्थ क्या है और किससे वह होती है ?

उ० क्रिया का अधिकरण अर्थात् आधार तद्वाचक शब्द से सप्तमी के प्रत्यय में, पै, पर,—होते है; जैसा धनमें मन रखता है, घोड़े पे बैठा जाता है, तालाब में स्नान करता है, हाथी पर बैठा है, पढ़ने में ध्यान लगावे तो अच्छा है ॥

कभी २ आधेय वाचक से सप्तमी होती है; जैसा, पांचमें जूता उंगली में अंगूठी इत्यादि ॥

बीच अनुसार विषयक आदि अर्थों में नाम से सप्तमी होती है; जैसा इन दोनो में कुछ भेद नहीं है, वह अपने जेठोंकी चाल पर चलेगा, इस बात पर तुम्हारा कहना क्या है ॥

जिस बात में प्राणिवाचक वा अप्राणिवाचक नाम का गुण प्रगट करना;

हो तो तटार्चक से सप्रमी होती है; जैसा सखा राम भट्ट वेद विद्या में निपुण है, बोलने में कठोर पर हृदय में दयावान है ॥

कभी २ सप्रमी का लोप करते हैं; जैसा गङ्गा के तीर रहता है, घोड़े चढ़ आया पर गधे चढ़ जावेगा ॥

भर यह शब्द नाम के आगे आकर नाम से बोधित वस्तु की सम-यता बताता है; जैसा दिन भर खेलता रहता है, सेर भर घी ॥

‘सम्बोधन का वर्णन ॥

प्र० सम्बोधन किसको कहते हैं ?

उ० किसी को चिताकर सम्मुख करना, इसे सम्बोधन कहते हैं और इसमें भी प्रथमा होती है उसका फल प्रवृत्ति वा निवृत्ति होता है; जैसा अब गोविन्द तू पाठशाला को जा, यहां गोविन्द सम्बोधन है उसे चिता-कर पाठशाला को जाने में प्रवृत्त करता है; ऐसे और भी जाने ॥ मोह-ननाल, पढ़ने में ध्यान दे, गोपाल, खेलना छोड़; हे राम, मेरा काम कर दे ॥

षष्ठी का वर्णन ॥

प्र० षष्ठी विभक्ति की योजना कहां की जाती है यह नहीं कहा रो मुझे समझाइये ?

उ० जो दो वस्तुओं पर है और दोनों से भिन्न रूप है अर्थात् जो एक शब्द पर दूसरे शब्द का आश्रय बतावे उसे सम्बन्ध कहते हैं ॥ उनमें एक सम्बन्धी है और दूसरा कृत सम्बन्धी, अर्थात् जिस पर दूसरे शब्द का सम्बन्ध है उसे सम्बन्धी कहते हैं, जिसका सम्बन्ध रहता है उसे कृत सम्बन्धी कहते हैं ॥ का की के ये प्रत्यय कृत सम्बन्धी से होते हैं; और कृत सम्बन्धी सम्बन्धी की विशेष्यता बतनाता है उसका अन्वय सम्बन्धी में है इसी से उसे कारकत्व अर्थात् क्रियान्वयित्व नहीं है, और कारको में नहीं गिना जाता ॥ जैसा, राजा का घोड़ा, यहां कृत सम्बन्धी राजा उससे षष्ठी विभक्ति हुई राजा का सम्बन्ध घोड़े की तरफ है ॥ सम्बन्धी पुल्लिङ्ग प्रथमा के एक वचन में होवे, तो कृत सम्बन्धी से का और पुल्लिङ्ग होकर बहुवचनान्त

वा द्विकीर्त्यादि विभक्त्यन्त होवे वा शब्दयोगी अव्यय के संग आवे, तो कृतसम्बन्धी से की प्रत्यय होता है; जैसा राजा का घोड़ा, राजा के घोड़े, राजा के घोड़े पर, राजा के घोड़ों का, राजा के घोड़ों पर इत्यादि ॥

सम्बन्धी स्त्रीलिङ्ग होवे, तो कृत सम्बन्धी से की प्रत्यय होता है; जैसा राजा की घोड़ी राजा की घोड़ियाँ इत्यादि ॥ कृत सम्बन्धी सम्बन्धी के पूर्व बहुधा आता है ॥ सम्बन्ध कई प्रकार का होता है ॥ बोध होने के लिये कुछ बताता हूँ ॥

वाक्य	सम्बन्ध	वाक्य	सम्बन्ध
राजा की घोड़ी	स्वस्वामिभाव	राजाकासिपाही	सेव्य सेवकभाव
तुलसीदासकीरामायण	कर्तृकर्मभाव	मनसारामकीलड़की	जन्यजनकभाव
चांदीकेतोड़े	द्रव्यजन्यभाव	हाथकीउंगली	अङ्गाङ्गिभाव

कभी २ अधिकरण में पड़ी होती है—रात का सोया है, दिनका थका हुआ है ॥

कभी २ पड़ी का अर्थ निमित्त होता है—वैद्य के यहां जाने की सामर्थ्य अबतक नहीं आई; कीमत, परिमाण, उमर, मुट्ठत, शक्यता, समयता, योग्यता आदि अर्थों में पड़ी की योजना की जाती है ॥ जैसा,

चारआनेकीचीमड़ी	} कीमत	पन्द्रहबरसकालड़का ..	} उमर और मुट्ठत
पांचरुपयेकागोटा		दस बरसकी लड़की ..	
		यहपच्चीसबरसकाहालहै	

दो हाथ का कपड़ा	} परिमाण	मैं आज ठहरने का नहीं शक्यता
तीनहाथ का सांटा		खेतकाखेत, घरकाघर-समयता अर्थात्
		सब खेत, सब घर

यह बात कहने योग्य नहीं है—योग्यता ॥

शब्द योगी अव्यय नाम के साथ होवे तो पड़ी का की प्रत्यय लगाने है; जैसा पत्थर के नीचे; कभी २ इस प्रत्यय का लोप भी होता है—पत्थर पर, तुम्हारी सहायता बिना यह काम नहीं होगा ॥

जब कोई पदार्थ दो अथवा अधिक मनुष्यों का है यह बातलाना हो तब अंत्य नाम से षष्ठी होती है; जैसा यह बगीचा मोहनलाल शिवप्रसाद और बेनीराम का है ॥ सादृश्य, समता, अनुसार, समीपता, योग्यता, आधीनता आदि गुण वाचक विशेषणों के पूर्व शब्द योगी अव्ययवत् नाम से षष्ठी होती है, जैसा, उस स्त्री का मुख चन्द्रमा के सदृश है, ज्ञान हीन मनुष्य पशु के समान है, यह धर्मशास्त्र के अनुसार है, वह लड़का राजा के समीप रहता था, पतिव्रता स्त्री का यह धर्म है कि अपने पति के आधीन रहे, ऐसा हार राजा को नज़र करने के योग्य है ॥

५ पाठ

सर्वनाम ॥

प्र० वाक्य में सर्वनाम की योजना किस रीतिसे होती है सो कहिये ?

उ० जिन पुरुष वाचक सर्वनामों के लिये क्रियापदों के पृथक् २ रूप हैं, उन रूपों के साथ सर्वनामों की योजना करना अवश्य नहीं; परन्तु जब विरोध अथवा विशेष्यता बतलाना हो तब उनकी योजना करते हैं, जैसा करता हूँ, लिखते हो, यहाँ पहिले में प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम और दूसरे में द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम का बोध होता है; इसलिये उनका स्पष्ट उच्चारण अवश्य नहीं; क्या तुम हो मैंने नहीं जाना ॥

पुरुष वाचक सर्वनामों के बहुवचनान्त रूप आदरार्थ में वा सामान्य संभाषण में एक वचन की जगह आते हैं—हमने तुमको एक धार कह दिया है कि ऐसी बात हमारे पास मत निकालो, हमने सुना कि तुम्हारे भाई आज बम्बई को जायेंगे कृपा करके उनसे कह दो कि हमारे लिये पाँच सौ रुपये तक मोतियों की जोड़ी लावें ॥

जब बोलने वाला और जिसके साथ वह बोलता है वे दोनों समान पदवी के होवें तब प्रत्येक को अपने विषय में एक वचन बोलना चाहिये और दूसरे को बहुवचन में, बहुत बड़े पदवी का आदमी अपने विषय में

कोई जो बहुवचन में बोलता है पर यह सभ्यरोति नहीं है और किसी को एक वचन में बोलना अच्छा नहीं है ॥

अतः हमारे के सिष्य में बोलना हो और वह अपने से बड़ा होवे तो बहुवचन में और हलका होवे तो एक वचन में बोलना चाहिये, पर समस्त में बहुवचन में बोलना उचित है और वह अति श्रेष्ठ हो, तो आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं; बराबरी वाले को वा बड़े को समस्त बोलना हो, तो भी आप इस सर्वनाम की योजना करते हैं, आप जब कर्त्ता हो तो क्रियापद तृतीय पुरुष बहुवचन में चाहिये ॥

यथार्थ बहुत्व बताना होवे तो सर्वनामों के आगे लोग शब्द की योजना करते हैं, जैसा हम लोगों में यह चाल नहीं है, पर तुम लोगों में हो तो करी, आप लोगों को इससे बड़ा लाभ होगा ॥

ईश्वर की प्रार्थना करने में अति आदर बताने के लिये वा अतिनीच मनुष्य को बोलने में वा अत्यन्त स्नेह की जगह द्वितीय पुरुष एकवचन की योजना करते हैं; जैसा है भगवान् तू सब प्राणियों का पालन कर्त्ता है, तूने सब सृष्टि उत्पन्न की इ० ॥ अरे तू कौन है ? बताव जल्द, क्यों यहां आया; बेटा, यहां आ मुझे मुंह चुम्बने दे ॥

भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम वाक्य में कर्त्ता होवे और उभयान्वयी अश्रय से पृथक् किये गये हों, तो प्रत्येक कर्त्ता के सङ्ग क्रियापद को बोलना चाहिये; जैसा तुम जानो वा वे जानें, किसी तरह से काम करना चाहिये ॥ वाक्य में भिन्न पुरुष वाचक सर्वनाम कर्त्ता हो तो पहिले प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पश्चात् द्वितीय और उसके पीछे तृतीय पुरुष वचक सर्वनाम आते हैं; हम तुम क्या कर सकेंगे, तुम और वे वहां जाकर बैठो और पाठ याद करो ॥ सर्वनाम अन्य विभक्ति में आवें तो भी यह नियम जानो; जैसा हमसे और तुमसे कुछ नहीं कह सकते हैं ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम क्रियापद के कर्म होते हैं, तब उनसे सदा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा यह मुझको वा मुझे मारता है, मैं तुम्हें वा तुम्हें देता हूं ॥ जब तृतीय पुरुष वाचक सर्व-

नाम सकर्मक क्रियापद का कर्म होता है, तब सामान्यतः उस सर्वनाम से द्वितीया विभक्ति बहुधा होती है; जैसा उसको मारो, उनको बुला दो ॥ मेरा तेरा तुम्हारा अपना आदि षष्ठ्यन्त रूपों की योजना जिन रूपों में का की के प्रत्यय किये जाते हैं उनके सृष्ट होती है; जैसा मेरी भूमि, मेरा हाथ, अपने भाइयों से झगड़ा कभी न करना ॥

कर्ता और क्रिया को छोड़ जो वाक्यांश उसमें कर्तृ सम्बन्धी षष्ठ्यन्त सर्वनाम की जगह अपना इस सर्वनाम का प्रयोग करते हैं; जैसा वह अपना काम करता था अपना = उसका ॥ तुमने अपना नया घर देखा है, अपना = तुम्हारा ॥ मैं यह बात अपने बाप से कहूंगा अपने = मेरे; हम और हमारे बाप अपने देश को जायेंगे; यहां जाने का कर्ता बाप और हम है, इस कारण से अपना की योजना नहीं हुई ॥

और पृथक्ता कहना है तो कभी २ द्विरुक्ति होती है जैसा वे अपने घरको गये ॥ आप अर्थात् निजका वाचक सामान्य सर्वनाम का प्रयोग आदरार्थक आप शब्द से भिन्न है, और उसकी योजना तीनों पुरुष और दोनों वचनों में होती है; जैसा मैं आप कहूंगा तुम्हारी सहायता न चाहिये; तुम आप क्यों न गये; तुम कुछ मत बोली, वे आप जायेंगे; इन्द्रियों की विद्या में अभ्यास करेंगे तो उन्हें देखने और प्रकाश और प्रतिबिम्ब का भेद आपसे आप खुल जायगा ॥

पूर्व भाग में कह आये हैं कि सर्वनाम का वचन नाम के वचन के अनुसार होता है फिर वह नाम प्रत्यक्ष हो वा अध्याहृत हो ॥ सर्वनाम नाम के पूर्व विशेषण सा आवे और नाम से द्वितीयादि विभक्ति का योग करना हो वा उसके सङ्ग शब्द योगी अव्यय जोड़ना हो, तो सर्वनाम के सामान्य रूप माचकी योजना करना चाहिये अर्थात् प्रत्ययों का योग नहीं होता जैसा आप ऐसे धर्मज्ञ जो मुझ अतिथि को मारने को उठे; तुम भले आदमी को झूठ बोलना उचित नहीं है; कदाचित् कोई इस बात का सन्देह करे; पृथ्वी जल और वायु इन तीनों में जीव रहते हैं उन जीवों में मुख्य

हैं भेद हैं; किन्तु धरती में अन्न और तरकारी उपजते हैं उसे खेत कहते हैं सब पुस्तकों हाथसेही लिखी जाती है वा और किसी प्रकार से भी होती है, किन्तु मनुष्य को बुलाते हो ॥ क्यों सर्वनाम का सामान्य रूप काहे नाम के पीछे विशेषण वत् कभी नहीं आता जैसा काहे के लिये बुलाते हैं, काहे की घड़ी बनी है ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनाम से सादृश्यार्थक **सा सी से** प्रत्यय जोड़े जाय तो उनके सामान्य रूप से जोड़ते हैं; जैसा तुमसा चतुर दूसरा नहीं ॥

कभी २ यह और वह इन एक वचन रूपों की बहु वचन में योजना करते हैं; जैसा यह दोनों भाई न्यायाधीश के पास गये, वह दान धर्म में कुछ पैसा देते हैं ॥

सम्बन्धी सर्वनाम जो वा जौन और तदर्थवाचक सो वा तीन वा वह अपने २ वाक्य में बहुधा सब से पहिले आते हैं ॥ पूर्व वाक्य में जो सर्वनाम का प्रयोग किया जावे, तो उत्तरवाक्य में सो वा वह सर्वनाम की योजना करनी चाहिये ॥ और जिस वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम होवे वह प्रायः पहिले आता है ॥ उनसे साधित शब्द अर्थात् जैसा, तैसा, जितना आदि शब्दों की योजना पूर्वोक्त प्रकार से होती है; जैसा जो छोड़े तुमने भेजे राजा ने बहुत पसन्द किये, जो यत्न करता है सो फल पाता है, जो तुमने कहा सोसत्र सच है, जहाँ धन तहाँ डर, जैसा दोगें वैसा पाओगे, जितना चाहिये तितना लो, चौकस वह आदमी है जो कि काम से पहिले परिणाम को सोचे ॥

प्रथम और द्वितीय पुरुष वाचक सर्वनामों के सङ्ग जो सम्बन्धी सर्वनाम आवे, तो उनके पश्चात् आता है; जैसा तुम जो गरीब हो इतना घमण्ड क्यों करते हो, मैं जो आज दश वर्ष से पढ़ता हूँ क्या कुछ नहीं जानता हूँ ॥

कभी २ बिना नाम के जो की योजना सामान्य अर्थ में करते हैं; जैसा जो ऐसा काम करेगा सो दण्ड पावेगा ॥ कि यह शब्द जो के

साथ बारम्बार आता है परन्तु अर्थ की विशेषता नहीं होती, जैसा कि दुःख कि हम को पहुँचा है दिल में न लावे ॥

जो यह सम्बन्धी सर्वनाम जो उभयान्वयी अव्यय-वर्धत्, यदि से भिन्न है और उसका ज्ञान वाक्य में पूर्वपर सम्बन्ध से होता है; जैसा जो आप आज्ञा दें तो मैं उसे पकड़ लाऊँ ॥

कौन कोई क्या कुछ इनकी योजना की रीति सर्वनाम प्रकरण में बतलाई है ॥ उन के उदाहरण यहां लिखे जाते हैं जैसा कौन है अर्थात् कौन मनुष्य है, क्या है अर्थात् क्या चीज है, कोई उस घर में रहता है, उस ठेकी में कुछ नहीं है, इस ठेक में कुछ है, किसी जन में एक सियार था, राजा से किसी को अधिकार मिलता वा किसी कारण से प्रतिष्ठा बढ़ाई जाती है; कोई सेठ, कोई कङ्गाल, कोई राज सेवक होते हैं परन्तु जहां जङ्गली लोग रहते हैं वहां राजा का कुछ प्रबन्ध नहीं होता; कुछ लोग वहीं जमा हुए थे, क्या निर्बुद्धि आदमी है, वा: क्या बात है ॥

नाना प्रकार बतलाने के लिये क्या शब्द की दुरुक्ति करते हैं जैसा क्या २ चीजें आई हैं, क्या २ लोग जमा हुए हैं ॥

कभी २ क्या उभयान्वयी भी होता है; जैसा खेत में क्या बाग में हुआ यहां क्या शब्द का अर्थ अथवा है ॥

तुल्यता के अभाव में कहां शब्द की योजना करते हैं; जैसा कहां सूर्य कहां खदोत, कहां राजा भोज कहां गङ्गा तेली ॥

निषेधार्थक वा संदेह बोधक अर्थात् जहां प्रश्न सूचित हो ऐसे वाक्य में सम्बन्धी सर्वनाम की जगह कौन और क्या प्रश्नार्थक सर्वनाम आते हैं, जैसा मैं नहीं जानता हूँ कि वह किस जगह गया है, मुझे स्मरण नहीं कि कौन २ आये थे और कौन २ नहीं; वह जानता है कि तुम्हें क्या २ चाहिए अर्थात् तुम्हें जो जो चाहिए सो सब वह जानता है ॥ इसी तरह से उनसे सन्धि व क्रिया विशेषण-दिकों की योजना होती है; जैसा न जाने वह कब आवेगा ॥

ईपाठ

क्रियापद का अधिकार ॥

प्र० वाक्य में शब्दों पर क्रियापद का अधिकार रहता है इसका अर्थ मैंने नहीं समझा कृपा करके बतलाइये ?

उ० कोई २ क्रियापद ऐसे होते हैं कि उनके साथ दूसरे शब्द अर्थात् नाम वा सर्वनाम किसी एक निश्चित रूप से सटा आते हैं; तुम जानते हो कि सकर्मक क्रियापद होवे तो कर्म अवश्य चाहिये और कभी २ संप्रदानार्थक शब्द की योजना करनी चाहिये; जैसा मैंने उसको कित्ताब दी, मैं पलंग पर सोता हूँ, मैं रोटी खाता हूँ, दूसरे वाक्य में सोता हूँ इस क्रियापद के संग पलङ्ग शब्द आया है और अर्थानुरोध से उस नाम से सप्रमी विभक्ति का प्रत्यय जोड़ा गया दूसरी विभक्ति का नहीं, तीसरे वाक्य में खाता हूँ इस क्रियापद के साथ रोटी इस नाम को कहना अवश्य है नहीं तो अर्थ पुरा न होगा और वह कर्म रूपसे आया है अन्य विभक्ति अर्थात् तृतीयादिकों के प्रत्यय नहीं जोड़ेगये इससे स्पष्ट है कि क्रियापद के अनुरोध से कारकों की योजना होती है ॥

प्र० वाक्य में नाम वा सर्वनाम पर क्रियापद का किसी एक प्रकार का अधिकार होता है यह मैं समझा, अब किस क्रियापद के संग नाम वा सर्वनाम किस रूप से आते हैं यह समझाइये ?

उ० पूर्व में कह आये हैं कि होना दिखाना कहाना आदि अर्थ बोधक अकर्मक और कर्मवाच्य क्रियापद के साथ नाम विधानार्थ प्रथमा में आता है; जैसा रामलाल अब बड़ा महाजन हुआ, जो पुत्र अपने माता पिता की आज्ञा को मानते हैं वे सुपुत्र कहाते हैं ॥

सकर्मक क्रियापद के कर्म के स्थान में नाम अथवा सर्वनाम आता है तब पूर्व नियम से प्रथमा वा द्वितीया विभक्ति होती है; जैसा ऐसे बली यदुकुल में कौन उपजे जिन्होंने सब असुरों समेत महाबली कंस को मारा मेरी बेटियों को रांड किया, परंतु आप का यह पुत्र है जो

वेश्याओं के सङ्ग आपकी सम्पत्ति खा गया है, जहाँ आया तोहीं आपने उस के लिये बछड़ू मारा है ॥

प्रयोजक क्रियापद और बतलाना, दिखाना, पहचाना आदि सकर्मक क्रियापद के संग दो कारक अर्थात् कर्म और संप्रदान अवश्य आते हैं, उनमें से कर्म प्रायः प्रथमान्त आता है जैसा लड़की को खाना खिलाकर घर को जाओ, उसे यह कपड़ा पहनाओ, उसको एक रुपया दो, तब उसने उनको अपनी सम्पत्ति बांट दी ॥

बोलना के साथ नाम से चतुर्थी होती है और कहना के सङ्ग उससे तृतीया का से प्रत्यय जोड़ा जाता है- मैं उठके पिता के पास जाऊंगा, और उन से कहूंगा हे पिता मैंने स्वर्ग के विरुद्ध आपके सामने पाप किया; इस नियम का अपवाद भी कई एक स्थान में देख पड़ता है, जब वह उन के सामने आया तब उनसे एक बात बोल न सका ॥ किसी की स्थिति वा गुण वा मने विकार बतलाना हो और वह नाम वा सर्वनाम अकर्मक धातु जैसा आना बनाना भाना चाहना पढ़ना पङ्चना रहना सोचना लगना मिलना और होना इनके साथ जब आवे तब उससे चतुर्थी विभक्ति होती है; जैसा मुझे नांद आती है; मुझे इस बात में सन्देह है; उसे देख नहीं पड़ता; न उन्हें नांद आती थी, न भूख प्यास लगती थी; हमको चाहिये कि वहां जावें; यहां और दूसरे स्थानमें चाहिये का अर्थ योग्य है, ऐसा है योग्यार्थक चाहिये के योग में चतुर्थी पुरुष वाचक से होती है; जैसा हमको जाना चाहिये, तुमको जाना चाहिये, जब चाहिये, का कर्ता वाक्य होता है तब उस वाक्य में क्रियापद विध्यर्थ में आता है; जैसा मुझे चाहिये कि बहुत परिश्रम कहुं न कहुं वे ले गये न हम लेखायेंगे इसलिये सभी को ऐसा काम करना चाहिये कि परलोक में जाकर भी उजले रहें ॥

भीति, द्विषाना, लजाना, वियोग, भिन्नता, सावधानी आदि अर्थ-बोधक क्रियापदों के साथ नाम से पञ्चमी होती है; जैसा वह तुम से

डरता है, यह बात मुझसे मत छिपाओ, वह अपनी दशा से लजाता है, मैं जीते जी तुम से अलग कभी न हूंगी, चौकस मनुष्य दुष्टों से सावधान रहता है ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ नाम से संप्रती भी होती है, किस समय स्थान, वा स्थिति में क्रिया होती है यह बोध जिस नाम से होवे उससे संप्रती का योग होता है; जैसा वे नगर में चले, दो दिन में वह वहां पहुंचेगा, तुम किस घर में रहते हो, वह प्लग पर सेता है, घोड़े में मुझसे यह अपराध हुआ ॥

७ पाठ

धातु साधित भाव वाचक नाम ॥

प्र० धातु साधित भाववाचक की योजना वाक्य में किस प्रकार से करनी चाहिये ?

उ० धातु को ना जोड़ने से भाव वाचक नाम होता है और वह क्रिया का व्यापार वा स्थिति बतनाता है; धातु साधित भाववाचक नाम से शब्द योगी अव्यय और विभक्त्यादिकों का योग करना ही, तो आकारान्त पुल्लिङ्ग नाम के समान होता है; पर इससे तृतीया का ने प्रत्यय और सम्बोधन नहीं होता और भाव वाचक सकर्मक धातु से बना हो, तो उसके सङ्ग कर्म आता है; जैसा उसका जाना उचित नहीं है, वह घर देखने को आया है, सहायता करने का समय यही है; पढ़ने के लिये आपके पास आया हूँ ॥

निश्चयार्थ में धातु साधित भाव वाचक को का की के ये षष्ठी के प्रत्यय जोड़कर उस रूप की विशेषणवत् योजना करते हैं; जैसा यह होने का नहीं, मैं नहीं मानने का, कभी २ संप्रदानार्थ में धातु साधित भाववाचक नाम से षष्ठी विभक्ति होती है; जैसा वहां जाने की आज्ञा दीजिये ॥

गत्यर्थ क्रियापद के साथ संप्रदानार्थ में भाववाचक नाम आवे तो उसके का प्रत्यय का लोप कभी २ करते हैं; जैसा वे खेलने वा खेलने के

गये, यह घर देखने को आया है, मैं कल हाट में कई चीजें मेल लेने और बेचने जाऊंगा ॥

धातु साधित भाव वाचक नाम वाक्यका उद्देश्य वा विधेय होता है ॥ उद्देश्य वा विधेय के सङ्ग धातु साधित भाव वाचक का रूप आवे तो कभी २ उसका योजना विशेषणवत् की जाती है, और विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है ॥ जैसा, लड़के को कमानों की सेहतमें रखना खराब करना है, बोलना सहज है पर करना कठिन है, तुम्हारी भाषा बोलनी मैंने नहीं सीखी, तलवार को धार पर ठंगली रखनी कठिन है, और जो नल ने निर्दयता का काम किया होता तो दमयन्ती को जमा करनी चाहिये ॥ आचार्य में धातु साधित भाववाचक नाम की योजना कभी कभी करते हैं और मत वा न ये निषेधार्थक अव्यय भी उसके साथ आते हैं; जैसा इस बात को मत भूलनु, वहाँ जाकर ऐसा काम न करना ॥

हो धातु के साथ जब भाववाचक का योग करते हैं, तब आवश्यकता से योग्यता का बोध होता है; जैसा निदान एक रोज़ मरना है, सब कुछ छोड़ जाना है, तुमको जाना होगा उसका लिखना होगा ॥

भाववाचक नाम के सामान्य रूप के साथ लग दे पा धातुओं का योग क्रम से आरम्भ अनुज्ञा देना और पाना इन अर्थों में होता है जैसा वह कहने लगा, वह लिखने लगा, हम को जाने दो, काम करने दो, वे नहीं आने पाते, मैं खेलने नहीं पाता ॥ शक्तार्थ का बोध करनेमें मुख्य धातु से सक्र धातु का योग करते हैं, पर निषेधार्थक अव्यय आवे तो उस धातु के स्थान में कभी २ भाववाचक नामका सामान्य रूप आता है ॥ जैसा वह काम कर सक्ता है, मैं चल न सक्ता था, मैं बोल नहीं सक्ता, मैं नहीं बोल सक्ता हूँ ॥

ट पाठ

धातु साधित विशेषण ॥

प्र० धातु साधित विशेषणों की योजना किस तरहसे की जाती है?

उ० क्रियापद की साधना छोड़ शेष स्थलों में जब धातु साधित विशेषणों का प्रयोग विशेषणवत् किया जाता है, तब उनके रूपों के परे **ऊआ ऊई ऊए** विशेष्य के अनुसार आते हैं; जैसा है कोई ब्रज में मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को रक्खे, बहुत से लड़के वहां खेलते हुए मैने देखे, मेरी व्याही हुई बहिन समुद्र के यहां आज गई ॥

जब धातु साधित विशेषण विशेष्य के परे आता है, तब सहाय रूप हुआ की योजना कभी २ नहीं करते हैं पर विशेष्य के अनुसार उसका रूप होता है; जैसा जिनने गोकुल के गोप भवान थे वे भी अपनी नारियों के शिर पर दहेड़ियां लिवाये, भांति भांति के भेष बनाये, नाचते, गाते, नन्द को बधाई देने आये ॥

कभी १ सकर्मक धातु साधित भूत काल वाचक विशेषण विशेष्य के अनुसार नहीं रहता केवल उसका पुंलिङ्ग सामान्य रूप आता है ॥ पर अकर्मक धातु साधित भूतकाल वाचक विशेषण लिङ्ग वचन में विशेष्य के अनुरूप होता है ॥ जैसा, तिनके पाँछे मूसल हाथ में लिये एक शूद्र मारता आता है, तुम्हारी लड़की छाता लिये अपने भाई के घर जाती थी, स्त्रियां रङ्ग भरङ्ग बस्त्र पहिने हुए नाचती थीं, वहां किवाड़ खुले पाये भीतर घु सके देखे तो सब सेये पड़े हैं, वह दिक्क हुआ घर आया है, रानी का सिङ्गार बिगड़ा देख एक सहेली बोल उठी ॥

वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के पुंलिङ्ग सामान्य रूप की योजना कभी २ नामवत् और कभी २ क्रिया विशेषणवत् करते हैं, और यह रूप सकर्मक धातु से बना होवे तो कर्म भी उसके साथ आता है; जैसा मेरे रहते किसी की इतनी सामर्थ्य नहीं जो तुम्हें दुःख दे, इस बात के सुनतेही, यह बात सुनतेही, भोर होतेही, शरदृतु जातेही ॥ पुंलिङ्ग वर्तमान काल वाचक धातु साधित विशेषण के सामान्य रूप की द्विशक्ति सातत्य बतनाता है, जैसा हमारा काम होते होते हुआ, जाते जाते एक तालाब के पास पहुँचे ॥

६ पाठ

अव्यय विचार ॥

धातु साधित अव्यय ॥

प्र० धातु साधित अव्ययों की योजना कहां और किस प्रकार से होता है?

उ० समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय के पांच प्रकार हैं, वे पूर्व में बतलाये गये हैं ॥

वाक्य में इन अव्ययों का प्रयोजन पड़ता है क्योंकि उनकी योजना करने से वाक्य के अवयवों का मिलाप होता है और उभयान्वयी अव्ययों का प्रयोग करना नहीं पड़ता ॥

उनके रूप से प्रधान क्रिया के पूर्वकाल का बोध होता है इसलिये उन्हें भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय कहने में कुछ दोष नहीं है । उनका सम्बन्ध बहुधा कर्ता की तरफ और कभी २ कर्म की तरफ रहता है; जैसा आज वहां जाकर हमारी किताब लेकर फिर आओ, वह बात सब के मुख से सुनकर बादशाह ने बीरबल से कहा ॥

तत्काल बोधक धातु साधित अव्यय बनाने की रीति पूर्व में बतलाई है, इस अव्यय में गर्भित जो व्यापार वह प्रधान क्रिया के साथही हुआ यह ज्ञान होता है, इसका अर्थ साधारण रूप से भूतकाल वाचक धातु साधित अव्यय के अर्थ के समान है परन्तु इस से अधिक उद्युक्तता वा जल्दी बूझी जाती है ॥ पूर्व में कह आये हैं कि इस अव्यय की योजना किंचित् नाम के सदृश होती है, जैसा सुनतेही घरासन्ध अति क्रोध कर सभा में आया और लगा कहने, इतनी बात के सुनतेही हरि कुछ सोच विचार करने लगे, इतनी बात के सुनतेही वह उठ कर चला गया ॥

क्रिया विशेषण, शब्दयोगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्यय ॥

प्र० क्रिया विशेषण, शब्द योगी अव्यय, और उभयान्वयी अव्ययों को वाक्य में कहां रखना चाहिये ?

उ० क्रिया विशेषण की योजना वाक्य में जहां चाहिये तहां करते

हैं, परन्तु साधारण नियम यह है कि जिस शब्द का गुण वह बताता है उसके पहिले योजना करनी ठीक है ॥

सर्वनाम जो वा जौन और तौन से साधित क्रिया विशेषणों की योजना उन सर्वनामों की योजना के समान होता है अर्थात् पूर्व वाक्य में जब, जहां, जैसा इत्यादि आवें तो अनुक्रम से उत्तर वाक्य में तब तहां तैसा इत्यादि आते हैं; जैसा जब सत्सङ्ग से रहित होंगे तब दुर्जनों की सङ्गति में पड़ेंगे, जैसा अब मरे तैसा तब मरे, जो पानी में पैठा तो इसने चतुराई से वे रुपये किसी के हाथ अपने घर भेज दिये ॥

जबतक जबलों आदि संयुक्त क्रिया विशेषण बहुधा भूत वा भविष्य कालिक क्रियापदके साथ आते हैं और उस क्रियापदके पूर्व प्रायः निषेधार्थक अव्यय लाते हैं; जैसा जबतक कि मैं न आऊँ तब तक वह ठहरे तो तुझे क्या, जब तक मैंने उनसे रुपये की बात नहीं निकाली तब तक वे हर रोज़ हमारे यहां आया करते थे, शब्द योगी अव्यय साधारणतः षष्ठ्यन्त नाम वा सर्वनाम के पश्चत् रखते हैं, परन्तु कभी २ उर्दू भाषा की पद्धति के अनुसार उसके पहिले आते हैं; जैसा आगे घर के, तरफ़ शहर के, उभयान्वयी अव्यय कि पूर्व शब्द वा वाक्य का बयान करता है; जैसा उनमें से एक ने रुपये बाले से कहा कि अजी क्यों मगड़ते हो लेखा क्यों नहीं सुनते ॥

पूर्व वाक्य में सङ्केतार्थ अव्यय जो आवे तो उत्तर वाक्य में तो लाना चाहिये; जैसा जो आप फिर कभी ऐसा वचन कहियेगा, तो मैं अपना प्राण तज दूंगी ॥ जो तू इसे छोड़ दे तो मैं तुझे एक मोती दूँ ॥

१० पाठ

द्विरुक्ति विचार ॥

प्र० शब्द को दो बार कहने से क्या समझा जाता है ?

उ० विभाग वा पृथक्ता बताने के लिये संख्या वाचक दो बार लाते हैं; जैसा सब कड़वालों को दो दो पैसे दो ॥

भूतकाल वाचक विशेषण की द्विरुक्ति से परस्पर क्रिया का बीच होता है और उसमें उत्तर पद बहुधा स्त्रीलिङ्गी रहता है; जैसा मारा मारी, ताना तानी, दाबा दाबी इत्यादि ॥

द्विरुक्ति से कभी २ आधिक्यता बूझी जाती है; जैसा वहां बड़े २ बृत्त हैं, वह धीरे धीरे चलता है, तुम तो बड़े २ दांत निकालते हो ॥

व्याकरण से वाक्य का पदच्छेद ॥

किसी वाक्य के आरम्भ से अन्त तक हर एक शब्द के रूप की व्याकरण रीति से व्याख्या अर्थात् लिङ्ग वचन विभक्ति आदि कहना और उस वाक्य में उनका परस्पर सम्बन्ध कैसा है यह कथन करना उसे व्याकरण पदच्छेद कहते हैं ॥ इसमें वाक्य का यथार्थ ज्ञान होता है; जैसा, (हरिने सिंह मारा) हरिने-इकारान्त पुल्लिङ्ग विशेषण नामकी तृतीया का एक वचन - कर्त्तरि तृतीया—मारा इस क्रियापदका कर्त्ता—शेर यह सामान्य नाम अकारान्त पुल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन-कर्मणि प्रथमा मारा इस क्रियापद का कर्म मारा यह क्रियापद मार इस सकर्मक धातु का स्वार्थ सामान्य भूतकाल पुल्लिङ्ग तृतीय पुरुष का एक वचन - इस वाक्य में हरिने-कर्त्ता शेर-कर्म मारा-क्रियापद-कर्मणि प्रयोग ॥

रामने भाई को बुलाया है ॥

रामने-अकारान्त विशेष न म पुल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन - बुलाया है इस क्रिया का कर्त्ता ॥

भाई को—इकारान्त सामान्य न म पुल्लिङ्ग द्वितीया का एक वचन कर्म बुलाया है क्रियापद का ॥

बुलाया है—बुला इस सकर्मक धातु का स्वार्थ-आसन्न भूतकाल पुल्लिङ्ग तृतीय पुरुष एक वचन ॥

राम ने-कर्त्ता—भाई को-कर्म—बुलाया है—क्रियापद—भावेप्रयोग ॥

मैं उठ के अपने पिता के पास जाऊंगा ॥

मैं—प्रथम पुरुष वाचक सर्वनाम पुल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन कर्त्तरि प्रथमा जाऊंगा इस क्रियापद का कर्त्ता ॥

ठठके—समुच्चयार्थक पूर्वकाल वाचक धातु साधित अव्यय ॥

अपने—यह सामान्य सर्वनाम पष्ठी का सामान्य रूप पास इस शब्द योगी अव्यय के योग से—पाम—शब्द योगी अव्यय ॥

जाऊंगा—यह क्रियापद जो इस अकर्मक धातु का स्वार्थ भाविष्य काल पुल्लिङ्ग प्रथम पुरुष का एकवचन ॥

मैं—कर्त्ता; जाऊंगा—क्रियापद, अकर्मक कर्त्तरिप्रयोग ॥

+
इतना कह उसने तुरन्तही चारों ओरोंके राजाओं को खत लिखे कि तुम अपना दल ले ले हमारे पास आओ ॥

इतना—दर्शक सर्वनाम पुल्लिङ्ग प्रथमा का एक वचन कर्म कह धातु साधित अव्यय का ॥

कह—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

उसने—तृतीय पुरुष वाचक सर्व नाम पुल्लिङ्ग तृतीया का एकवचन लिखे क्रिया का कर्त्ता ॥

तुरन्तही—काल वाचक क्रिया विशेषण अव्यय ॥

चारों—संख्या वाचक विशेषण ओरों का ॥

ओरों के सा०ना०अकारान्त स्त्री० बहुवचन पष्ठी का सामान्य रूप राजा शब्द से विभक्ति का योग होने से ॥

राजाओंको—सा०न०अकारान्तपुं०चतुर्थीक बहुवचन, अर्थसंप्रदान ॥

खत—सा०ना०अकारान्त पुल्लिङ्ग प्रथमा का बहुवचन अर्थ कर्म ॥

लिखे—लिख धा०सकर्मक स्वार्थ सामान्य भूतकाल-पुं०तृ०पुं०बहुवचन ॥

उसने—कर्त्ता, खत-कर्म, लिखे-क्रियापद ॥ कर्मणि प्रयोग ॥

कि—स्वरूप बोधक उभयान्वयी अव्यय ॥

तुम—द्वि०पुं०स०पुल्लिङ्ग-प्रथमा का बहुवचन आओ क्रियापदकाकर्त्ता ॥

अपना—सामान्यस० पष्ठी का बहुवचन सम्बन्ध दल शब्द कीतरफ, वा सर्वनाम वाचक विशेषण दल शब्द का ॥

दल—सामान्य नाम अकारान्त पुल्लिङ्ग प्रथमा का एकवचन अर्थ कर्म ले धातु साधित अव्यय का ॥

लेले—समुच्चयार्थक धातु साधित अव्यय ॥

हमारे—प्रथम पुरुष सर्वनाम पुल्लिङ्ग बहुवचन षष्ठी का सामान्य रूप पास इस शब्द योगी अव्यय के योग से पास शब्द योगी अव्यय ॥

आओ—आ धातु अकर्मक आज्ञार्थ वर्तमान काल द्वितीय पुरुष बहुवचन तुम कर्ता आओ क्रियापद—अकर्मक कर्तरि प्रयोग ॥

१ पाठ

छन्दी विचार ॥

प्र० छन्दी बोध का भी वर्णन कीजिये ?

उ० छन्दस् तो अनन्त हैं उन सबों का वर्णन कहाँ होसکتा है पर थोड़े प्रसिद्ध २ जोकि बहुधा भाषा में देख पड़ते हैं उनका वर्णन करता हूँ सुनो छन्दः प्रशुद्धत वृत्ति ये पद्य के नाम हैं ये मात्रा और वर्णके भेद से दो प्रकार के होते हैं जिनमें मात्राओं की गणना होती है उन्हें मात्रा वृत्त और जिनमें वर्ण अर्थात् अक्षरों की गणना होती है उन्हें वर्ण वृत्त कहते हैं ॥

मात्रा वृत्त का उदाहरण ॥

ज्ञानी तापस शूर कवि कोविट गुण आगार ।

केहि की लाभ बिडम्बना कीन्ह न यहि संसार ॥ १ ॥

वर्ण वृत्त का उदाहरण ॥

नमोमीशमीशाननिर्व्व्याणरूपम् विभुंव्यापकम्ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।

नजन्निर्गुणान्निर्विकल्पनिरीहं चिदाकाशमाकाशवासम्भजेऽहम् ॥२॥

ह्रस्व और दीघ स्वर के भेद से तीन २ अक्षर के ८ गण मगण नगण भगण जगण सगण यगण रगण तगण बनते हैं लघुका चिन्ह (।) और गुरुका (ऽ) यह है ॥

आदि मध्य अवसान में भजस होहिं गुरु जानु ।

यरत होहिं लघु क्रमहिं सों मन गुरु लघु सब मानु ॥ ३ ॥

मय भन ये सुख देत हैं रस तज ये दुख देत ।

सुखद धरत त्यागत दुखद प्रथमहिं लोग सचेत ॥ ४ ॥

मगण (५ ५ ५)	श्रीगङ्गा सुख	पद्म के आदि में आने से जो
यगण (१ ५ ५)	भवानों सुख	सुखद है सो वे सुख और जो
रगण (५ १ ५)	कालिका दुःख	दुःखद है वे दुःख देते हैं
सगण (१ १ ५)	मथुरा दुःख	
तगण (५ ५ १)	श्रीमाम दुःख	
जगण (१ ५ १)	मुरारि दुःख	
भगण (५ १ १)	वामन सुख	
नगण (१ १ १)	कलम सुख	

२ पाठ

प्र० माचा वृत्त के भेद और भी कहिये ?

उ० दोहा १ सोरठा २ पदाकुलक ३ चौपैया ४ पद्मावती ५ रोला-
वृत्त ६ कुण्डलिका ७ बरवा ८ लवायी ९ हरिगीतिका १० आदि माचा वृत्त
के भेद अनन्त हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—दोहा का लक्षण कहिये ?

उ० दोहा—छन्दस् के प्रथम और तृतीय चरण में तेरह २ और
द्वितीय चतुर्थ में ग्यारह २ माचा होती है ॥

यथा ॥

श्रीमद वक्र न कीन्ह कहि प्रभुता बधिर न काहि ।

मृगनयनी के नयन शर के अस लागि न जाहि ॥ ५ ॥

प्र० १—सोरठा का लक्षण कहिये ?

उ० सोरठा—वृत्त के प्रथम तृतीय पाद में ग्यारह २ और द्वितीय
चतुर्थ में तेरह २ माचा होती है ॥

यथा ॥

आयोरी घनश्याम एक सखी ओचक कह्यो ।

विहसत निक्कसी बाम देखत दुख दूनों भयो ॥ ६ ॥

प्र० ३—पादाकुलक—पादाकुलक का लक्षण कहिये ?

उ० पादाकुलक के कि जिसे भ.पामें चौपाई कहते हैं प्रत्येक पद में सोलह २ माचा होती है ॥

यथा ॥

जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मङ्गल मोद बधाये ॥

भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं मुख बारी ॥ ७ ॥

प्र० ४—चौपैया का लक्षण कहिये ?

उ० चौपैया—वृत्त के प्रति चरण में तीस २ माचा होती हैं ॥

यथा ॥

प्रेम परायन अति चित चायन मिच भाव हिय लेखै ।

ऐसे प्रीतिवन्त प्राणी को कल न परै बिन देखै ॥

मन में स्वारथ मुख परमारथ कपट प्रेम दगसावै ।

ऐसे मूढ़ मीति की सुगति सपनेहुं मोहिं न भावै ॥ ८ ॥

प्र० ५—पद्मावती किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में बत्तास २ माचा होती है उसे पद्मावती वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

बिनती प्रभु मेरी मैं मति मेरी नाथ न वर मागैं आना ।

पद पद्म परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥

जिहि पद सुर सरिता परम पुनीता प्रकट भई शिव शोश धरी ।

सोई पद पङ्कज जिहि पूजत अजमम शिर धरेउ कृपालु हरी ॥ ९ ॥

प्र० ६—रोलावृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चौबीस २ माचा और १५ तेरह पर विश्राम अर्थात् ठहरने का स्थान होता है उसे रोलावृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

हे सांतिश दिनेश वंश पाथोज दिवा कर ।

प्रणत पाल नय पाल दीन बन्धो करुणा कर ॥

अज शङ्कर नुतचरण शरण मांगत मपि मामव ।

बानर धीवर शवर योषि दधने महिमा तव ॥ १० ॥

प्र० ७—कुण्डलिका किसे कहते हैं ?

उ० जिस वृत्तमें प्रथम १ दोहा फिर १ रोला और सब १४४ माचा होती हैं उसे कुण्डलिका कहते हैं ॥

यथा ॥

बिना विचारे जो करै सो पाँछे पछिताय ।

काम बिगारै आपनो जग में होत हंसाय ॥

जग में होत हंसाय चित्त में चैन न आवै ।

खान पान सन्मान राग रङ्ग मन नहिं भावै ॥

कहिंगिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारै ।

खटकत है दिन रात्रि कियौजो बिना विचारे ॥

प्र० ८—बरवा छन्दस् का क्या लक्षण है?

उ० जिस के प्रथम और तृतीय पदमें बारह २ और द्वितीय चतुर्थ में सात २ माचा होती हैं उसे बरवा छन्दस् कहते हैं ॥

यथा ॥

भज रघुपति पद पङ्कज त्यज सब काम ।

नित रोचन भय मोचन जाकर नाम ॥ १२ ॥

प्र० ९—लवायी वृत्त किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में अट्ठाईस २ माचा और अन्त्य वर्ण गुरु होते हैं उसे लवायी वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जे चरण शिव अज पूज्य रज शुभ परशि मुनि पतिनी तरी ।

नख निर्गता सुर बन्दिता चैलोक्य पावन सुरसरी ॥

ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत बन फिरत कण्टक किन्ह लहे ।

पद कंज द्वन्द्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजा महे ॥ १३ ॥

प्र० १०—हरिगीतिका का क्या लक्षण है ?

उ० जिस के प्रत्येक पादमें अट्ठाईस २ मात्रा और १६ बारह मात्रा पर विश्रम और चारों पदों के अन्त में एक २ रगण होता है उसे हरिगी-तिका वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नन्दलाल हित नर बाल तुलसी आल बाल सु लीपही ।
पुनि दीपवारि संवारि आर्तिक मास कार्तिक दीपही ॥
मन पुतकारि जन दूत खेलि जगाय माधव गावही ।
सखि कुबरी फन्द फन्दि के ब्रजचन्द काहरक आवही ॥ १४ ॥

३ पाठ

वर्ण वृत्त ॥

प्र० वर्णवृत्त के भी कुछ भेद कृपाकर समझाइये ?

उ० चामरवृत्त १ पञ्चचामर २ तोटकवृत्त ३ भुजङ्ग प्रयात ४ आदि अनेक हैं सोदाहरण लिखता हूं ॥

प्र० १—चामर वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसमें गुरु लघु के क्रम से सोलह २ अक्षर का चरण होता है उसे चामर वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

नाम कर्म मात मे हिं देहु ते नमस्सदा ।
सो सुनी कही तहीं गहो स्वनाम अर्थदा ॥
काल राचिहे तुहीं तुहीं अडोल बालिका ।
नाम तोर जे कहै तिन्हें करौ स्वकालिका ॥ १५ ॥

प्र० २ — पञ्चचामर का क्या लक्षण है ?

उ० इस के विपरीति अर्थात् लघु गुरु के क्रम से इतनेही वर्णों का पञ्च चामर छन्दस् होता है ॥

यथा ॥

नमामि भक्त बत्सलं कृपालु शील कोमलम् ।
भगामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदम् ॥

निकाम श्याम सुन्दरं भवाम्बुनाथ मन्दरम् ।

प्रफुल्ल कंज लोचनम् मदादि दीप मोचनम् ॥ १६ ॥

प्र० ३—तोटक वृत्त का लक्षण कहिये ?

उ० जिसके प्रत्येक पाद में चार २ मगण होते हैं उसे तोटक वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

जय राम रमा रमणं शमनम् भवताप भयाकुल पाहि जनम् ।

अवधेश सुरेश रमेश त्रिभो शग्गागत मांगत पाहि प्रभो ॥ १७ ॥

प्र० ४—भुजङ्गप्रयात किसे कहते हैं ?

उ० जिसके प्रत्येक चरण में चार २ यगण होते हैं उसे भुजङ्गप्रयात वृत्त कहते हैं ॥

यथा ॥

निरकार मोङ्कार मूलन्तु रीय द्विग चान गोतीत मीश द्विरीशम्

करालम्महा काल कालङ्कव लुम् गुणागार संसार पारन्न तेऽहम् ॥ १८ ॥

अधिक भेद और उदाहरण ग्रन्थ की बहुलता से नहीं लिखे ॥

इति

—

कठिन शब्दों का बोध ॥



ना० = नाम, वि० ना० = विशेष नाम-, पुं० = पुल्लिङ्ग, स्त्री० = स्त्रीलिङ्ग,
वि० = विशेषण, अ० = अव्यय, स० ना० = सर्वनाम ॥

अ	अनुकरण ना० पुं० नकल
अंक ना०पुं० चिन्ह निशानी संख्या	अनुनासिक वि० नाकसे जिन अक्षरों
अङ्गाङ्गिभाव ना०पुं० शरीरके अवयवों	[का उच्चारण होता है
	[का सम्बन्ध अनुभव ना०पुं० मानस ज्ञान ..
अंत्य वि० अन्तका	अनुयायी ना०पुं० पीछे जानेवाला, सेवक
अंत्याक्षर- ना० पुं० अंत का अक्षर	अनुरोध ना०पुं० अनुरूप होना, वा करना
अकारान्त वि० जिस शब्द के अंत में	अनुसार ना०पुं० अनुरूप होना, अथवा
	[अकार है
अज्झल ना०पुं० अच् और हल् अर्थात्	अनेकवर्णात्मक वि० जिस शब्द में एकसे
	[स्वर और व्यञ्जन
	[अधिकवर्ण है
अदर्शन ना० पुं० नहीं देख पड़ना	अन्य वि० दूसरा कोई
अधिकार ना०पुं० एक शब्द का संबंध	अन्वय ना०पुं० वाक्यके शब्दों का परस्पर
दूसरे शब्दकी तरफ होकर एक	[सम्बन्ध
के रूप में विकार करनेकी सामर्थ्य	अपभ्रंश ना० पुं० अपशब्द अशुद्ध शब्द
[दूसरे में रहता है वह सामर्थ्य	अपवाद ना० पुं० नियमसे बाहर होने
अध्याहार ना० पुं० वाक्यको पूरा करने	[वाले शब्द इ०
[केलिये बाहरसे शब्द लाना	अब्ज ना० पुं० कमल
अध्याहृत-वि० जिस शब्दका अध्याहार	अब्भरण ना० पुं० पानीका भरना ..
	[किया है
अभाव ना० पुं० न होना	..
अनिश्चितता ना० स्त्री० जिसका निश्चय	अर्थानुरोध ना०पुं० अर्थके अनुरूप होना
[नहीं है उसकी स्थिति अनिर्णीतपन	अर्पण ना० पुं० देना ..

अव्यय ना० पुं० अंग वा शरीर का भाग

उ

अवशिष्ट वि० बाकी

उकारान्त वि० जिसके अंतमें उकार है

अवश्य वि० जो चाहिये

उक्त वि० कहा हुआ

अव्यय जिन शब्दों का कारकत्व नहीं है उड्डान ना० स्त्री० उडान (संस्कृतमें-

आ

नपुंसक है)

आक्रान्त वि० जिसके अंतमें आकार है उत्कर्ष ना० पुं० घटती

आकृति ना० स्त्री० आकार, मूरत उत्साह ना० पुं० आनन्द, खुशी

आकृष्ट वि० खींचा हुआ

उद्गाढार्चा वि० हर्ष दुःखादि भव

आच्छादन ना० पुं० बमर, ढकना

[बताने वाला

आक्षेप वि० अक्षेप, दोष जिसमें उपनाम ना० पुं० कूटुम्ब का नाम

[होता है] उपमान ना० पुं० जिसका तुल्यता नहीं

आदर्श वि० जिसमें प्रतिष्ठित जाति है

[आय

आदेश जो एक अक्षर के स्थान में उपमेय ना० वा० वि० पुं० जो तुल्य हो

[दूगुना अक्षर हो जाये] उपांत्य ना० पुं० अंत्य अक्षर का पूर्व वर्ग

आदान ना० पुं० लेना

ऊ

आद्या वि० आदि का

उकारान्त वि० जिसके अन्तमें उ होवे

आवृत्ति ना० स्त्री० दोहराव

उध्व आ० ऊपर

आशंसा वि० जिससे इच्छा का बोध

अर्मिला ना० स्त्री० विरोधनाम

[होता है]

क

आश्रय ना० पुं० आसना, सम पता

कृत्कारान्त वि० जिसमें अन्तमें कृत्कार है

आसन्न वि० नजदीक का

ख

इ

एकवर्णात्मक वि० जिस शब्द में एक

इकारान्त वि० जिसके अंतमें इकार है

[अक्षर है

इन्द्र ना० पुं० इन्द्र, मालिक, राजा

एकारान्त वि० जिसके अंतमें एकार है

ई

ऐक्य वि० प्रत्येक

ईकारान्त वि० जिस शब्द के अंतमें ई है इन्द्राण्डल ना० पुं० यह चांद का घेरा

ईर्ष्या ना० स्त्री० डाह द्वेष

[वा गोला

शे	ख
येकारान्तवि० जिस शब्द के अन्त में येकार है	खद्योत न० पुं० जुगनू
शेखर्य ना० पुं० विभव, माहात्म्य, संपदा	ग
ओ	गत्यर्थ वि० जिसका अर्थ गति है वा जिस
ओकारान्तवि० जिस शब्द के अन्त में	[संगतिका अर्थ पाया जाता है
[ओकार है	गद्य ना० पुं० छन्द विना वाक्य
ओष्ठ ना० पुं० ओंठ	गर्भित वि० गर्भ अर्थात् घेरे में रहने वाला
ओ	गुणाधिकार ना० पुं० गुणवाचक पद
ओकारान्त वि० जिस शब्द के अन्त में	गौरव ना० पुं० बड़ापन, दृढ़ता
[ओकार है	घ
ओढार्य ना० पुं० डढापन	वक्रपाणि ना० पुं० कम के हाथ में चक्र है
क	[अर्थ, विष्णु
कंठ ना० पुं० कंठ	चिन्ह ना० पुं० निशाना
करी ना० पुं० हाथी	च
कर्तृकर्मभाव ना० पुं० करने वाला और	जगदादि ना० पुं० पृथ्वी का आरंभ ..
[क्रिया हुआ काम इनका सम्बन्ध	जन्य जनक भाव ना० पुं० उत्पन्न करने
कर्मवाच्य वि० जिस क्रियापद का कर्म	बाला और उत्पन्न बाला हुआ चीज इनका
[उल्टे स्थित होता है	[सम्बन्ध
कविता ना० स्त्री० पद्य श्लोक	जाति गुणविशिष्ट व्यक्ति ना० स्त्री० जाति
काना ना० पुं० अक्षर की खड़ी लकीर	का गुण जिस व्यक्ति में पाया जाता है
[जैसा ग	[वह व्यक्ति
कारण ना० पुं० निमित्त	ड
कृति ना० स्त्री० काम, करना	डमरू ना० पुं० वायु विशेष ..
केवल अ० मात्र	डाह ना० पुं० द्वेष
कोष्ठक ना० पुं० ताला	ढ
क्रियान्वयित्व ना० पुं० क्रियापद के लक्षण	ढ
[सम्बन्ध रखना	ढव ना० पुं० चाल, डौल

त	दूढ़ वि० बलवान् जिसमें जीर होवे..
तच्छरीर ना० पुं० उसकी देह	.. देवेन्द्र ना० पुं० देवीका इन्द्र ..
तट्टीका ना० पुं० उसका टीका	.. देव्याश्रय ना० पुं० देवीकी सहायता ..
तत्तद्वशात् वि० वह स्वयं जिसके अंतमें	द्रव्य जन्यभाव ना० पुं० चीज और उससे
[है	[बना हुआ पदार्थ इनका संबंध
तदंतर्गत वि० उसके भीतर गया हुआ	द्व्यक्षर वि० जिसमें दो अक्षर हैं ..
तद्गत वि० उसमें गया हुआ	द्वितीयान्त वि० जिसके अन्तमें द्वितीया
तद्गुण विशिष्ट वि० वह गुण जिसमें है	[का प्रत्यय है
तद्गुण ना० पुं० उसके यज्ञ का द्रव्य	ध
तद्भय ना० पुं० उससे डर	.. धर्माज्ञा ना० स्त्री० धर्मकी आज्ञा ..
तद्भावबोधक वि० उसभावका बोधक	धातु साधित वि० धातु से बना हुआ ..
[रने वाला	धावद्वयः ना० पुं० दौड़ने वाला खर्गोश
तन्नेत्र ना० पुं० उसकी आंख	.. धात्वित्तर वि० धातु से इतर वा अन्य
तन्मय वि० उससे भरा हुआ	.. धिक् अ० तुच्छता वा तिरस्कारबोधक
तन्मात्र अ० केवल वह	.. [वा तिरस्कार
तल्लीला ना० स्त्री० उसका खेल	.. ध्वनि ना० पुं० स्त्री० आवाज़ ..
तवल्कार ना० पुं० तेरा (लिखा हुआ)	न
[लुक्कार	नायक ना० पुं० मुख्य, मालिक ..
तुलना ना० स्त्री० तुला करना, समा-	नासिका ना० स्त्री० नाक ..
[नता देखना	निकट अ० नजदीक ..
तृतीयान्त वि० जिसके अन्तमें तृतीया	निकृष्ट अ० वि० खराब
[का प्रत्यय है	नियम ना० पुं० काहदा, निर्णय ना०
तेजोमय वि० तेज वा प्रकाशसे भरा हुआ	[पुं० निश्चय इन्साफ़ ..
द	निर्विकार वि० जिसमें कुछ फेरफार
दिग्भाग ना० पुं० दिशाका भाग, देश	[नहीं हुआ
दीर्घ वि० लम्बा	.. निवृत्ति ना० स्त्री० रोकना ..
दुर्नीति ना० स्त्री० बुरी चाल	.. निःशंक वि० निः संदेह ..

निः षठ वि० अति मूर्ख	..	[भक्त्यदि कार्य होता है
नीरस वि० निरस, फीका ये दोनों	प्रचार ना० पुं० व्यवहार—चाल	..
[शब्द हिन्दी में ह्रस्व नि से लिखते हैं	प्रतिबिम्ब ना० पुं० परछाया	..
नीरोगी वि० चंगा	प्रतिष्ठा ना० स्त्री० सम्मान	..
न्यूनता ना० स्त्री०	प्रत्येक म० ना० हर एक	..
न्यूनत्व ना० पुं०	प्रथमान्त वि० जो नाम वा सर्वनाम	..
प	[प्रथमा विभक्ति में है	
पंक्ति ना० स्त्री० पांति	प्रये, जन ना० पुं० काम उपयोग	..
पंचम्यन्तवि० जिसके अन्त में पंचमीका	प्रयोग ना० पुं० योजना	..
	[प्रत्यय है प्रवृत्ति ना० स्त्री० किसी काम में लगना	
परस्पर अ० आपस में	[वा लगाना वा यत्न	
परिगणन ना० पुं०	प्रन्त ना० पुं० देशका भाग	..
परमिति ना० स्त्री०	प्रायः अ० बहुधा अक्सर	..
पश्चात् अ० पीछे से	प्रेरक ना० पुं० कराने वाला	..
पारिभाषिक वि० शास्त्र में आसानी के	प्रौढ़ वि० सभ्य विद्वान लोगोंका	..
[लिये जो संज्ञामाननी है	व	
पावक ना० पुं० आग	बहुधा	} अ० बरबार
पितृण ना० पुं० पिताका कर्ज	बहुशः	
पित्राज्ञा ना० स्त्री० बापकी आज्ञा	बहुत्व	} मा० पुं० बहुपन
पीताम्बर ना० पुं० जिसका वस्त्र पीला	बाहुल्य	
[हे अर्थ, त् विष्णु	भ	
पूर्णता ना० स्त्री० पूरापन	भरण ना० पुं० भरना	..
पूर्ववत् अ० पहिले के समान	भवदृर्शन ना० पुं० आपका दर्शन	..
पूर्वाक्त वि० पहिले कहा हुआ	भाग ना० पुं० हिस्सह अंश	..
पृथक्करण ना० पुं० अलग २ करना	भानु ना० पुं० सूरज	..
प्रकरण ना० पुं० वर्णन	भाव ना० पुं० भेद उद्देश	..
प्रकृति ना० स्त्री० मूलरूप जिससे वि-	भू ना० स्त्री० पृथ्वी	..

भेद ना० पुं० प्रकार	व
म	वत् अ० समान ..
मध्य ना० पुं० बीच वि० बीचका	वक्षमाण वि० जो कहा जायगा ..
मनेभाव ना० पुं० मनकी अवस्था इच्छा	वस्तुतः अ० तत्त्वतः ..
मन्त्रन्तर ना० पुं० दो मन्त्रों के बीच	वार्गाश ना० पुं० अच्छा बोलने वाला
[का काल वा अन्तर	[चुहस्पति
मर्यादा ना० स्त्री० हट्ट	वाग्धरि ना० पुं० (वाचा और हरि)
महद्भाग्य ना० पुं० बड़ा नसीब	[वाचा को हरण करने वाला
महर्षि ना० पुं० बड़ा ऋषि	वाङ्मन ना० पुं० वाचा और मन ..
महेश्वर्य ना० पुं० बड़ी संपत्	विकार ना० पुं० फरक बदल ..
माहात्म्य ना० पुं० मनका बड़ापन	विकृति वि० बदला हुआ ..
मिश्रित वि० दूसरे से मिला हुआ	विकौण्ठ वि० फैलाया हुआ ..
मूनस्थिति ना० स्त्री० पहली स्थिति	विजातीय वि० भिन्न जातका ..
मृत्युञ्जय ना० पुं० महादेव	विधवा ना० पुं० जिसका पति नहीं, गंड
य	विधेयार्थपूगक ना० पुं० वा वि० विधेय
यथाक्रम अ० जैसाक्रमहै वैसे क्रमसे	[का अर्थ पूरा करने वाला
यथायोग्य अ० जैसा चाहिये वैसा	विधेयार्थवर्धक ना० पुं० वि० विधेय का
युक्त वि० जुड़ा हुआ उचित	[अर्थ बढ़ाने वाला
योग ना० पुं० जोड़ना	विभक्त्यन्त वि० जिस नामवा सर्वनामके
योग्यता ना० स्त्री० उचितता	[अन्तमें विभक्ति का प्रत्ययहोवे
र	विवक्षित वि० इष्ट
रमेश ना० स्त्री० लक्ष्मी का पतिविष्णु	विवेचन ना० पुं० विचार ..
रूपान्तर ना० पुं० दूसरा रूप	विषय ना० पुं० बात ..
ल	विस्मयादि बोध्यक वि० आश्चर्यादि
लक्षण ना० पुं० व्याख्या, बयान, वर्णन	[मनेभावों का वाचक
लाकृति ना० स्त्री० आकार रूप	वृत्ति ना० स्त्री० आचरण, स्वभाव, ग्रंथा

वैयाकरणश्लोक वि-व-व व्याकरण	मजाताय वि० एक जातका ..
[जानने वाले ले.ग	सच्छास्त्र ना० पुं० अच्छाशास्त्र ..
व्यतिरिक्त वि० अन्य	सदृश वि० समान ..
व्यपकता ना० स्त्री० फैलाव	संधि ना० स्त्री० मिलाप ..
व्यपारार्थ वि० जिसका अर्थ व्याप.र है	सतेज वि० तेज सहित ..
व्युत्पत्ति ना० स्त्री० उत्पत्ति	सन्मानार्थ वि० जिससे प्रतिष्ठा पाई
श.	[जती है
शक्यता ना० स्त्री० होने और करनेकी	सम्यन्त वि० जिसके अंतमें समीक्षा
[योग्यता वा संभव	[प्रत्यय है
शत्रु ना० पुं० सेना वा विद्वाना	समयता ना० स्त्री० संपूर्णता ..
शल्क ना० पुं० साला	समता ना० स्त्री० समानपन ..
शेष वि० बाकी	सम.वेश ना० पुं० संग्रह ..
श्रुत वि० सुनाहुआ	समुच्चयार्थक वि० जिससे शब्दों का वा
प	[व.वैद्यों का मिलाप होता है
सहृदय ना० पुं० छह हृदय	समूह ना० पुं० जमा वा जातिगण ..
समास ना० पुं० छः मास	सविकार वि० जिसके रूपमें विभक्त्यदि
सष्ट वि० छठवां	[कार्यसे बदल हुई है
सष्टयन्तवि० जिसके अंतमें षष्ठीका प्रत्य	सशब्द दोगिक वि० शब्दयोगीश्वर्य
[होते	[सहित
म	
संकेत ना० पुं० शर्त	सहाय ना० पुं० जो मदद देता है ..
संपात ना० पुं० गिरना	स.तत्त्व ना० पुं० साततपनचलतारहता
संयुक्त वि० जुड़ हुआ	[होता जाना
सयोग ना० पुं० जोड़	साधनक्रिया ना० स्त्री० रूपवचनानेका
संग्रह ना० पुं० इन्दीह	[काम
संस्कृत नभिल वि० संस्कृत भाषा न	सामान्यतः ना० स्त्री० साधारण पन
[जानने वाले लोग	सर्थ वि० जिसमें अर्थ पाया जय ..

सिद्धरूप ना० पुं० पाहिलेहीसे जिसका स्थल ना० पुं० स्थान जगह	..
[रूपबना है दूसरे शब्दसे नहीं स्थिति ना० स्त्री० रहना	..
सीताश्रय ना० पुं० सीताका आश्रय . स्पर्धा ना० स्त्री० द्वेष	..
सुसंबद्ध वि० अच्छा तरह जिमकी रचना स्पष्टी करणार्थ अ० स्पष्ट करनेके लिये	..
[को गई है स्वस्वामि भाव, मालिक और उसकी	
मूचित वि० बोधित	[चीज का सम्बन्ध
सेव्यसेवक भव ना० पुं० म लिकचाकर स्वयंगोक्त वि० अपनेवर्ग का कहाहुआ	
[का सम्बन्ध	[स्थान

इति

